Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

श्री गणेशाय नमः

श्री गायत्री उपासना

लेखक
पं० संजीव कुमार झा
फोन, फेक्स–0181–2490311
मोबाइल–98726–17598
94175–86091

प्रकाशक :
महामाया पब्लिकेशन्ज़
सखुजा मार्किट, नज़दीक चौक अड्डा टांडा
जालन्धर शहर–8
0181–2212696

मूल्य : 60/–

मो0 : 9837019062
जुगल किशोर भीमसैन (बुकसेलर)
धार्मिक पुस्तकें, कर्म काण्ड पुस्तकें
धार्मिक फोटो, सीनरी आदि उपलब्ध है।
पल्टन बाजार, निकट कोतवाली, देहरादून।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

© सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन
लिखित अनुमति के बिना इस पुस्तक का कोई भी अंश न छापें तथा सामयिकों में भी प्रकाशित न करें।

रचना : श्री गायत्री उपासना

लेखक : संजीव कुमार झा

मुद्रक : सरताज प्रिंटिंग प्रैस, जालन्धर।

टाईप सैटिंग : लिटल ग्राफिक्स, जालन्धर।

प्रकाशक :

महामाया पब्लिकेशन्ज़

सखुजा मार्किट, नज़दीक चौक अड्डा टांडा,
जालन्धर शहर-8, फोन : 0181-2212696

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

भूमिका

भगवती गायत्री माँ के उपासको! वेदों और पुराणों में अनेक उपासनावों का वर्णन मिलता है, पर उन सभी उपासनावों में–"गायत्री उपासना" को विशेष महत्त्व दिया गया है, क्योंकि माँ गायत्री अपने उपासकों को शीघ्र ही धन, जन, आरोग्य प्रदान करती हैं और अन्त समय में "मोक्ष पद" के अधिकारी बना देती हैं।

"स्कंद पुराण" में कहा गया है–

गायत्रयेव परो विष्णु गायत्रयेव परः शिवः।
गायत्रयेव परो ब्रह्मा गायत्रयेव त्रयी ततः॥

अर्थात् :–

"गायत्री ही परमात्मा विष्णु हैं, गायत्री ही परमात्मा शिव हैं और गायत्री ही परमात्मा ब्रह्मा हैं। अतः गायत्री से वेदों की उत्पत्ति हुई है।"

भगवद् गीता में भी भगवान कृष्ण ने कहा है–"**गायत्री छन्द सामहम्**"–अर्थात् "वेदों में मैं गायत्री हूँ"।

मानव मात्र के समस्त मनोकामनावों की सिद्धि के लिए "गायत्री मन्त्र" से बढ़कर और कोई मन्त्र नहीं है। सभी वर्णों के लिए गायत्री ही परम गति है। इस मन्त्र को जपने से और भगवती गायत्री की अराधना करने से उपासक कछ भी प्राप्त कर सकता है। क्योंकि गायत्री मन्त्र परम गूढ़ और अत्यन्त व्यापक अर्थ रखने वाला मन्त्र है। माता गायत्री "वेदमाता" एवं "देवमाता" कही गयी हैं। अतः भारत के धार्मिक जीवन में "गायत्री" का महत्त्व सर्वोपरि है। गायत्री मन्त्र वेदों का सार है, इसलिए इन्हें "ब्रह्म गायत्री" कहते हैं।

माँ गायत्री साक्षात् "आदिशक्ति" परमेश्वरि हैं अतः देवताओं द्वारा भी "वन्दनीया" हैं। परन्तु आज अधिकांश उपासक "भगवती गायत्री" और उनकी "वैदिक उपासना" के बारे में लगभग कुछ नहीं जानते। यद्यपि चारों वेदों और विभिन्न प्राचीन धर्म ग्रन्थों में इस विषय में विपुल ज्ञान उपलबन्ध है। लगभग सभी धर्म-ग्रन्थों में जगदम्बा गायत्री ब्रह्म का साक्षात् स्वरूप और उनकी उपासना सर्वश्रेष्ठ अराधना निरूपित किया है, परन्तु यह हमारा दुर्भाग्य ही है कि आज "गायत्री उपासना" नाम से

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

बाज़ार में जितनी भी पुस्तकें उपलब्ध हैं वह लगभग सभी "गायत्री मन्त्र की साधना" के बारे में हैं। परन्तु इस परम पवित्र उपासना पुस्तक में अनेक ऐसी जानकारियाँ पायेंगे जिनकी गायत्री उपासना की अन्य पुस्तकों में चर्चा तक नहीं है।

इस परम पवित्र पुस्तक में :-

भगवती गायत्री के सम्बन्ध में गूढ़ ज्ञान, भगवती गायत्री माँ की उत्पत्ति, भगवती गायत्री के विभिन्न स्वरूप, अस्त्र और शस्त्र, रूप-रंग का वर्णन, गायत्री की महिमा, गायत्री मन्त्र का गूढ़ अर्थ, गायत्री शक्तियां, गायत्री महामन्त्र के तत्त्व, गायत्री माहात्म्य कथा, उपासना विधि, नित्य पूजन विधि, षोड़शषोपचार पूजन विधि, मानस पूजा विधि, कलश पूजन, हवन विधि व मन्त्र, आरती, चालीसे एवं कई चमत्कारिक कवच एवं स्तोत्रों का वर्णन है।

इसके साथ ही भगवती गायत्री की कई वन्दना भी लिखी गयी हैं। सबसे बड़ी बात यह है कि इस पवित्र उपासना पद्धति में भगवती गायत्री के तीन अत्यधिक चमत्कारिक "यन्त्रों" का भी वर्णन है। इन सभी यन्त्रों का निरीक्षण सिद्धि द्वारा स्वयं मैंने प्राप्त की है और इसका वास्तविक सफल चमत्कारिक अनुभव प्राप्त कर ही पुस्तक में वर्णित किया है। इन सिद्ध यन्त्रों को मेरे कार्यलय से प्राप्त कर संसार के अनेकों दुःखी लोग लाभ उठा रहे हैं। यदि आप भी इन यन्त्रों को प्राप्त करना चाहें, अथवा किसी भी समस्याओं से उबरने हेतु सिद्ध यन्त्र प्राप्त करना चाहें, या जीवन भर का "सम्पूर्ण भाग्यफल" व जन्म-पत्रिका बनवाना चाहें तो पत्राचार करें, अथवा-नीचे लिखित टैलीफोन, मोबाईल नं० पर सम्पर्क स्थापित करें। मैं आपके सभी पत्रों का उत्तर देने हेतु कृत-संकल्पित हूँ।

॥ जय माँ गायत्री ॥

— पंडित संजीव कुमार झा
मकान नं० 61, टोबरी मुहल्ला, टांडा रोड,
नज़दीक देवी तालाब अस्पताल,
जालंधर शहर-144004 [पंजाब] भारत
फोन, फेक्स नं०-0181-2490311
मोबाइल नं०-98726-17598

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

विषय-सूची

प्रथम भाग

भगवती गायत्री गूढ़ ज्ञान खण्ड 11-29

1. भगवती गायत्री व सभी देवी-देवता एक ही "आद्याशक्ति" के विभिन्न स्वरूप 11
2. भगवती गायत्री माँ की उत्पत्ति 13
3. भगवती गायत्री के तीन रूप 13
4. आद्याशक्ति पंचमुखी गायत्री के रूप, रंग, वाहन और अस्त्र 14
5. जगत-जननी माँ गायत्री की महिमा 15
6. माता गायत्री का सूर्यदेव से सम्बन्ध 16
7. गायत्री और ॐ का सम्बन्ध 17
8. सभी वेदों का मूल-तत्त्व गायत्री मन्त्र और उसका विशाल अर्थ 17
9. गायत्री मंत्र 17

गायत्री की शक्तियाँ, देवता, छन्द, पुष्प एवं तत्त्व खण्ड 21

10. गायत्री की शक्तियाँ 22
11. गायत्री के देवता 22
12. गायत्री के छन्द 22
13. गायत्री महामन्त्र के तत्त्व 23
14. गायत्री उपासना में चढ़ाने वाले विभिन्न पुष्प 23
15. गायत्री के ऋषिगण 23
16. गायत्री मंत्र की महिमा 23

गायत्री माहात्म्य खण्ड 26

17. ब्रह्मऋषि विश्वामित्र द्वारा गायत्री उपासना की कथा 26
18. पण्डित सोम शर्मा के पुत्र को गायत्री मंत्र से महान ज्ञान की प्राप्ति 27
19. ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य वर्णों के लिए अलग-अलग गायत्री मंत्र 29
20. ब्राह्मण की गायत्री 29
21. क्षत्रिय की गायत्री 29
22. वैश्य की गायत्री 29

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

दूसरा भाग

गायत्री मंत्र साधना का वैदिक विधि-विधान खण्ड 30-46

23. पुरश्चरण विधि 30
24. पुरश्चरण विधि सम्पन्न करने हेतु अर्थात् गायत्री मंत्र साधना हेतु स्थान 30
25. साधक शरीर शुद्धि विधि 31
26. गायत्री मंत्र साधक हेतु भोजन का प्रयोग 31
27. गायत्री मंत्र साधक हेतु निषिद्ध आहार 32
28. गायत्री मंत्र साधक हेतु नित्य-नियम 32
29. गायत्री मंत्र साधना आरम्भ करने हेतु शुभ मास और तिथि 32
30. गायत्री मंत्र साधना हेतु "दीप स्थान" का निर्माण 33
31. मंत्र जप हेतु माला शुद्धि विधि 34
32. गायत्री मंत्र जपने की विधि 34
33. गायत्री मंत्र की सिद्धि हेतु जप संख्या 35
34. गायत्री शाप-विमोचन विधि 36
35. गायत्री उपासना के भेद 37
36. गायत्री त्रिकाल संध्या विधि 37
37. मंत्र जप करने वक्त सावधानियाँ 38
38. गायत्री माँ द्वारा वर्णित गायत्री जप की महिमा 38
39. विभिन्न धर्म-ग्रन्थों में वर्णित गायत्री जप का लाभ 39
40. समस्त भौतिक रोग विनाशक गायत्री जप विधि 42
41. भूत-प्रेत बाधा विनाशक गायत्री जप विधि 43
42. आयु, आरोग्य, लक्ष्मी, पुत्र, स्त्री, विद्या प्राप्ति हेतु गायत्री मंत्र जप विधि 44
43. विविध स्वरूपा गायत्री माता के विविध ध्यान मंत्र 44
44. ब्रह्म स्वरूपा गायत्री ध्यान 45
45. विष्णु स्वरूपा गायत्री माँ का ध्यान 46
46. शिव स्वरूपा गायत्री माँ का ध्यान 46
47. सरस्वती स्वरूपिणी गायत्री का ध्यान 46

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

तीसरा भाग

उपासना पूर्व आवश्यक ज्ञान खण्ड 47-68

48. उपासना का अर्थ 47
49. उपासना क्यों करें 48
50. उपासना की आवश्यकता 48
51. उपासना के लिए आवश्यक कर्त्तव्य 49
52. उपासक की योग्यता 49
53. उपासना में भावना का महत्त्व 50
54. उपासना में दृढ़ इच्छा शक्ति एवं आस्था की उपयोगिता 50
55. कामना की पूर्ति हेतु किये जाने वाले प्रयास 52
56. उपासना में भावना का प्रभाव और कामना 53
57. उपासना में सहायक 55
58. उपासना का प्रदर्शन सफलता में बाधक 55
59. एकाग्र मन का उपासना पर प्रभाव 56
60. उपासना में दृढ़ निश्चय एवं श्रद्धा का महत्त्व 57
61. उपासना जीवात्मा तथा परमात्मा के मध्य की कड़ी 57
62. उपासना के दस कर्म 58
63. नित्य-नियम उपासना का फल 58
64. अयोग्य उपासक के लक्षण 59
65. उपासना का स्थान 60
66. आद्याशक्ति स्वरूपा माँ गायत्री पर अपनत्व एवं पुत्र-पुत्री भाव का प्रभाव 60
67. उपासना हेतु मुख्य निर्देश 61
68. उपासना में निषेध 62

उपासना में आसन और मालाओं का प्रयोग खण्ड 64

69. उपासना में विविध आसनों का प्रयोग 64
70. कुशा आसन की उपयोगिता 64
71. मृगचर्म आसन पर उपासना के लाभ 64
72. व्याघ्र चर्म आसन की महत्ता 64
73. ऊनी अथवा कम्बल के आसन का लाभ 65

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

74. रेशमी आसन की उपयोगिता 65
75. त्याग करने योग्य आसन 65
76. फूल तोड़ने की विधि और मंत्र 66
77. उपासना में निषिद्ध फूल 66
78. बासी जल और फूल का निषेध 66
79. पुष्पादि चढ़ाने की विधि 67
80. चढ़ाए हुए फूल को उतारने की विधि 67
81. बिल्व-पत्र तोड़ने का मंत्र 67
82. बिल्व-पत्र तोड़ने का निषिद्ध काल 67
83. माला की उपयोगिता और फेरने का नियम 68
84. विभिन्न जप कार्यों में विभिन्न मालाओं का प्रयोग 68

चौथा भाग

माता गायत्री पूजन खण्ड 69-96

85. पूजन को हजार गुणा महत्त्वपूर्ण बनाने हेतु ''माता गायत्री की मानस पूजा'' 69
86. संक्षिप्त मानस पूजन विधि 70
87. वृहद् वैदिक गायत्री मानस पूजा 70
88. मानस-पूजा से लाभ 72
89. सर्वकामना प्राप्ति हेतु मातेश्वरी-गायत्री का वैदिक ''षोड़शोपचार पूजन'' 73-91
पूजन सामग्री, पूजन आरम्भ विधि, शरीर पवित्र करने का मंत्र, रक्षा सूत्र बन्धन मंत्र, यजमान मस्तक चन्दन लेपन मंत्र, शिखा बन्धन मंत्र, प्रज्जवलित दीप पूजन मंत्र, प्रज्जवलित दीप प्रार्थना मंत्र, आचमन मंत्र, पृथ्वी पवित्री मंत्र, श्री गणेश अराधना मंत्र, स्वस्ति वाचन के पाँच मंत्र, पूजन संकल्प मंत्र, भगवान विष्णु का पूजन, माता गायत्री कलश स्थापना विधि और कलश पूजन, श्री वरुण देव आवाहन मंत्र, सम्पूर्ण तीर्थ एवं नदियों का आवाहन मंत्र, कलश प्राण-प्रतिष्ठा समर्पण मंत्र, गायत्री षोड़शोपचार पूजन, (सोलह उपचारों द्वारा विस्तृत पूजन)
90. अनिष्टता निवारण एवं दुखों से मुक्ति हेतु माता गायत्री ''नित्य पूजन'' 91-96

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पंचम भाग

माता गायत्री हवन-विधि खण्ड **97-128**

91. हवन का महत्त्व 97
92. हवन का विज्ञान सम्मत महत्त्व 97
93. हवन की लकड़ी 97
94. हवन सामग्री 98
95. हवन के प्रकार और पूर्णाहुति का अर्थ 98
96. हवन के लिए ''कुशकण्डिका निर्माण'' 99
97. हवन मंत्र 100
98. मूर्द्धान मंत्र 102
99. अग्नि प्रार्थना मंत्र 103
100. अग्नि-प्रदक्षिणा मंत्र 103
101. हवन विसर्जन मंत्र 103
102. विभिन्न प्रकार की वस्तुओं एवं लकड़ियों से गायत्री मंत्र का हवन करने का विभिन्न फल 103
103. विभिन्न रोग निवारक गायत्री हवन 103
104. लक्ष्मी प्राप्त करने हेतु गायत्री मंत्र-हवन विधि 105
105. मुक्ति प्राप्ति हेतु गायत्री हवन विधि 105
106. गायत्री मंत्र हवन से अन्य विभिन्न लाभ 105

माँ गायत्री चालीसा खण्ड **107**

107. श्री पंचमुखी गायत्री चालीसा 107
108. ब्रह्म स्वरूपिणी गायत्री चालीसा 109

माँ गायत्री कवच, स्तोत्र एवं स्तुति खण्ड **111**

109. श्री गायत्री पञ्जर स्तोत्र 111
110. माँ गायत्री शताक्षर मंत्र स्तोत्र 122
111. श्री ब्रह्माजी द्वारा-महर्षि विश्वामित्र को उपदेशित गायत्री कवच 125
112. माता गायत्री के 108 नामों का जप 128

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

छठा भाग

माँ गायत्री यंत्र-मंत्र खण्ड **129-152**

113. यंत्र-मंत्र का परिचय-शक्ति और महत्त्व 129
114. यंत्र के सूक्ष्म शब्द, अंक, त्रिकोण और भुपूर का महत्त्व 130
115. यंत्र लिखने का विधान 131
116. यंत्र विद्या वेद और ईश्वरीय शक्ति का सम्मिश्रण 131
117. यंत्र-मंत्र साधना में गुरु से प्राप्त-''सिद्ध गुरु रक्षा कवच यंत्र'' स्थापित करने की आवश्यकता क्यों 133
118. वांछा कल्पलता गायत्री यंत्र-साधना विधि 134
119. वांछा कल्पलता यंत्र धारण करने से लाभ 137
120. परीक्षा, इंटरव्यू, नौकरी प्राप्ति, विद्या प्राप्ति, लेखन कला तथा समस्त कला जगत में ख्याति प्राप्त करने हेतु- ''महासरस्वती गायत्री यंत्र''-साधना विधि 138
121. सिद्ध महा सरस्वती गायत्री यंत्र धारण करने से लाभ 140
122. शत्रु बाधा निवारक एवं मुकद्दमा जीतने हेतु ''बगलामुखी गायत्री यंत्र''-साधना विधि 141
123. सिद्ध बगलामुखी गायत्री यंत्र धारण करने से लाभ 144
124. विभिन्न देवताओं के अभूतपूर्व गायत्री मंत्र 145

भगवती गायत्री स्तुति एवं वन्दना खण्ड **148**

125. जय माता गायत्री की (वन्दना) 148
126. गायत्री माता तेरी महिमा अपार है (स्तुति) 149
127. मुंह मांगा मुराद पाने हेतु वन्दना 150
128. गायत्री माँ की आरती 151
129. पंचमुखी गायत्री माँ की आरती 151

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

"श्री गणेशाय नमः"

प्रथम भाग

भगवती गायत्री गूढ़ ज्ञान खण्ड

भगवती गायत्री व सभी देवी-देवता एक ही "आद्याशक्ति" के विभिन्न स्वरूप

परमेश्वरी गायत्री के उपासको! निराकार स्वरूपिणी "आद्या शक्ति" ही परमात्मा हैं, जो विभिन्न रूपों में विविध लीलाएँ करती हैं। वह एक हैं परन्तु उन्हें कई नामों से पुकारा जाता है। ब्रह्म, आत्मा, खुदा, परमात्मा, गॉड, वाहेगुरु, नारायण, राम, कृष्ण, शिव, विष्णु, आदि सब उसी के नाम हैं।

वही "आद्याशक्ति" गायत्री, महालक्ष्मी, महासरस्वती, महाकाली, सती, शिवा, पार्वती, राधा, सीता व दुर्गा हैं। भगवती आद्याशक्ति सर्वव्यापक, सर्वशक्तिमान, सर्वाधार, सृष्टिकर्त्ता, अनन्त, अनादि, निराकार, साकार, निर्विकार, निर्मल, सत्य-चित्त-आनन्द व सबका पालन-पोषण करने वाली हैं। वह न्यायकारी व दयालु हैं। परमात्मा के पुरुषवाचक व स्त्रीवाचक सभी स्वरूप इन्हीं महाशक्ति के हैं।

यही महाशक्ति अपनी मायाशक्ति को जब अपने अन्दर छिपाए रखती हैं, तब निष्क्रिय "शुद्ध ब्रह्म" कहलाती हैं। यही जब उसे विकासोन्मुख करके एक से अनेक होने का संकल्प करती हैं तब स्वयं ही पुरुष रूप में मानो अपनी ही प्रकृति रूप योनि में संकल्प द्वारा "चेतन रूप बीज" स्थापना करके सगुण, निराकार "परमात्मा" बन जाती हैं।

चेतन परमात्म-रूपिणी महाशक्ति के बिना जड़ प्रकृति से सृष्टि का कार्य सम्पन्न नहीं हो सकता। इसीलिए महाशक्ति विश्व रूप विराट पुरुष बनती हैं और इस सृष्टि के निर्माण में स्थूल निर्माता "प्रजापति" के रूप में आप ही अंशावतार के भाव से "ब्रह्मा" पालन कर्त्ता के रूप में विष्णु और संहारकर्त्ता के रूप में "रुद्र" बन जाती है। और ये ब्रह्मा-विष्णु शिव प्रभृति अंशावतार भी किसी कल्प में गायत्री, दुर्गा एवं काली बन जाती हैं। एक ही आद्याशक्ति विभिन्न कल्पों में विभिन्न नाम रूपों से "सृष्टि रचना" करती हैं। इस विभिन्नता का कारण और रहस्य भी उन्हीं को ज्ञात है, जो अनन्त ब्रह्माण्ड में असंख्य ब्रह्मा-विष्णु और महेश बनी हुई हैं। और अपनी माया शक्ति से अपने को ढक कर आप ही "जीव संज्ञा" को प्राप्त है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ईश्वर, जगत, जीव तीनों आप ही हैं। भोक्ता, भोग्य और भोग तीनों आप ही हैं। इन तीनों को अपने ही से निर्माण करने वाली तीनों में व्याप्त रहने वाली भी आप ही हैं। वह बेअन्त हैं। इनके सारे के सारे गुणों का कोई वर्णन नहीं कर सकता है। जो कुछ संसार में नज़र आता है वह सब उनका रूप है। जो सुनने में आता है, उनकी आवाज़ है। देखता भी आप और सुनता भी आप है। यह संसारी जीव-जन्तु सब इसके शरीर का अंग है। इसकी माला के मनके हैं।

आद्या शक्ति निराकार होते हुए भी साकार रूप में सब जगह प्रकट हैं। जिस तरह सोने के जेवर में सोना, दूध में मक्खन और तिलों में तेल समाया हुआ है। इसी तरह आद्या शक्ति भी सब जीव-जन्तुओं में आत्मा के रूप में समायी हुई हैं। यही सूर्य की प्रभाशक्ति, चन्द्र की सुधावर्षिणी शोभा शक्ति, अग्नि की दाहिका शक्ति, वायु की वहन शक्ति, जल की शीतलता शक्ति है। यही तपस्वियों का तप, ब्रह्मचारियों का तेज, संन्यासियों का त्याग, महापुरुषों की महत्ता और मुक्त पुरुषों की मुक्ति है।

यही आद्याशक्ति शूरों का बल, दानियों की उदारता, माता-पिता का वात्सल्य, गुरु की गुरुता, पुत्र और शिष्य की गुरुजन भक्ति, साधुओं की साधुता, चतुरों की चातुरी और मायावियों की माया है। यही लेखकों की लेखन शक्ति, नरेशों की प्रजापालन शक्ति और प्रजा की राजशक्ति है। यही विद्वानों की विद्या शक्ति, धनवानों की अर्थ सम्पत्ति, ज्ञानियों की ज्ञान शक्ति और प्रेमियों की प्रेमशक्ति हैं।

यही परमेश्वरी राजाओं की राजलक्ष्मी, वणिकों की सौभाग्य लक्ष्मी और सज्जनों की शोभा लक्ष्मी हैं। सारांश यह कि तमाम जगह परमात्मा रूपी महाशक्ति ही विविध शक्तियों के रूप में खेल रही है। तमाम जगह स्वाभाविक ही शक्ति की पूजा हो रही है। जहाँ शक्ति नहीं है वहीं "शून्यता" है। शक्तिहीन की कहीं पूछ नहीं। सर्वत्र आद्याशक्ति का ही समादर और बोलबाला है। शक्तिहीन वस्तु जगत में टिक ही नहीं सकती। सारा जगत अनादि काल से प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से निरन्तर केवल शक्ति की ही उपासना में लगा रहा है और सदा लगा रहेगा।

जो श्रीकृष्ण की उपासना करते हैं, वे भी इन्हीं के करते हैं। जो श्रीराम, शिव या गणेश रूप अथवा गायत्री, दुर्गा, वैष्णवी, ज्वालां, छिन्नमस्तिका, चामुण्डा, काली, लक्ष्मी, सरस्वती रूप में उपासना करते हैं वे भी इन्हीं आद्याशक्ति की उपासना करते हैं और आद्याशक्ति का दूसरा नाम ही गायत्री है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

भगवती गायत्री माँ की उत्पत्ति

पाठको! मातेश्वरी गायत्री स्वयं आद्याशक्ति हैं और आद्याशक्ति का साकार रूप ही जगदम्बा गायत्री हैं।

"बृहद योगि याज्ञवल्क्य स्मृति ग्रन्थ" में वर्णित है। एक बार मुनि याज्ञवल्क्य ने ब्रह्मा जी से पूछा कि हे स्वयं भुव! गायत्री की उत्पत्ति किस प्रकार हुई? ब्रह्मा जी बोले–ब्रह्म ज्ञान की उत्पत्ति के आदि कारण आद्याशक्ति प्रकृति हैं और वही परब्रह्म पुराण पुरुष स्वयम्भू हैं। परब्रह्म स्वरूपा आद्याशक्ति ने अंगुली का मंथन (इशारा) करते हुए जल को उत्पन्न किया। जल से फेन, फेन से बुदबुद, बुदबुद से अण्डा, अण्डे से ब्रह्मा, ब्रह्मा से वायु, वायु से अग्नि, अग्नि से ऊँकार, ऊँकार से व्याहृति, "ब्याहृति" से गायत्री, गायत्री से सावित्री, सावित्री से सरस्वती, सरस्वती से सभी वेद, सब वेदों से सारे लोक और अन्त में सृष्टि के समस्त प्राणी उत्पन्न हुए।

ब्रह्मा जी ने आगे कहा कि हे मुनि, भगवती गायत्री का सांख्यायन गोत्र है और यह चौबीस अक्षरों वाली हैं। इनके पाँच सिर, छः कुक्षियाँ और चार पाद हैं। ऋग्वेद प्रथम पाद, यजुर्वेद द्वितीय, सामवेद तृतीय और अथर्ववेद इनका चतुर्थ पाद है। पूर्व दिशा प्रथम कुक्षि, दक्षिण दिशा द्वितीय कुक्षि, पश्चिम दिशा तीसरी और उत्तर दिशा चतुर्थ कुक्षि है। उर्ध्व देश पांचवीं कुक्षि तथा नीचे की भूमि छठी कुक्षि है।

इनका पहला सिर व्याकरण है, शिक्षा दूसरा, कल्प तीसरा, निरूक्ति चौथा और ज्योतिष पाँचवां है।

भगवती गायत्री के तीन रूप

जगदम्बा गायत्री वेदों की माता हैं और ये तीन रूप धारण करती हैं। अतएव तीन काल की सन्ध्योपासना में गायत्री का तीन रूपों में ध्यान किया जाता है। ब्रह्म रूप में गायत्री का, विष्णु रूप में सावित्री का और रुद्र रूप में सरस्वती का। इसी प्रकार–प्रातःकाल में गायत्री का, मध्याह्न में सावित्री, सायंकाल में सरस्वती का ध्यान किया जाता है। इन तीनों कालों को शास्त्रों में त्रिसंध्या की संज्ञा दी गयी है।

प्रातःकाल में गायत्री रविमण्डल मध्य-स्थिता हैं। रक्तवर्णा हैं, दो भुजाएँ वाली हैं, पाश, अंकुश, अक्षमाला और कमण्डल धारण किए हैं, हंश वाहन है। ब्राह्मणी-कुमारी हैं और ऋग्वेद के द्वारा प्रतिपादित हैं। गले में रुद्राक्ष की माला धारण करती हैं।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

मध्याह्न काल की गायत्री का नाम "सावित्री" है जो रविमण्डल के मध्य में स्थित हैं, कृष्णवर्णी एवं चार भुजाओं वाली हैं/त्रिनेत्रा हैं। हाथों में शंख, चक्र, गदा एवं पद्म धारण किए हैं। इनका वाहन गरुड़ हैं। युवती एवं वैष्णवी हैं और यजुर्वेद से उदाहृत हैं।

सायंकाल में गायत्री का नाम "सरस्वती" है। ये भगवती शुक्ल वर्णा और चार भुजाओं वाली हैं। हाथों में त्रिशूल, डमरू, पाश एवं पात्र लिए हैं। वृषभ (बैल) पर आरूढ़ हैं। यह रुद्राणी वृद्ध हैं और सामवेद द्वारा वर्णित हैं।

गायत्री के ये तीनों रूप परब्रह्म के रूप हैं। यह प्रहर अनुसार वंदनीय और ध्यान करने योग्य है।

आद्याशक्ति पंचमुखी गायत्री के रूप रंग, वाहन और अस्त्र

"गायत्री पञ्चर स्तोत्र" के अनुसार–

[श्लोक]

पञ्च वक्त्रां दशु भुजां त्रिपञ्च नयनैर्युताम्।
मुक्ता-विद्रुम-सौवर्णां सित-शुभ्र-समाननाम्॥
वाणीं परां रमां मायां चामरै दर्पणे र्युताम्।
षडङ्ग देवता मन्त्रै रूपाध वयवात्मिकाम्॥
मृगेन्द्र वृष पक्षीन्द्र–मृग हंशानने स्थिताम्।
अर्द्धेन्दु बद्ध-मुकुट-कीरीट मणि कुण्डलाम्॥
रत्न ताटङ्क-मांगल्य-परग्रेवेय-नुपुराम्।
अङ्गुलीयक - केयुर - कङ्कणाद्यै रत्नङ्कृताम्॥
दिव्य स्त्रग-वस्त्र - संछन्न-रविमंडल मध्यगाम्।
वराऽमयाऽब्ज युगलां शङ्ख चक्र गदा अंकुशाम्॥
शुभ्रं कपालं दधतीं वहन्ती मक्ष-मालिकाम्।
गायत्री वरदां देवी सावित्रीं वेद-मातरम्॥

भावार्थ–जिस भगवती गायत्री के पाँच मुख तथा दश भुजा हैं, पन्द्रह नेत्र हैं। जिनके पाँचों मुख क्रमशः मोती, मूंगा, सुवर्ण, स्वच्छ तथा शुभ्र हैं। सरस्वती, रमा, माया तथा चामर और दर्पण से संयुक्त हैं। षडंग, देवता तथा मंत्रों से जिनके रूपादि अवयव ज्ञात होते हैं। जो दुर्गा रूप से सिंह पर, माहेश्वरी रूप से बैल पर, वैष्णवी रूप से गरुड़ पर तथा ब्राह्मणी रूप से हंस पर विराज रही हैं। अर्ध चन्द्र से संयुक्त जिनका मुकुट एवं किरीट है

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

तथा जिनका कुण्डल मणि से संयुक्त है। जो रत्नजड़ित **ताटक** (कान का बाली) तथा सौभाग्य युक्त ग्रेवेयक, (कंठा, हार) नुपूर, (पैर का आभूषण) अंगुठी, केयुर तथा कंगन आदि अलंकारों से अलंकृत हैं। अनेक सुन्दर माला तथा वस्त्र से विभूषित होकर आदित्य मण्डल में निवास करने वाली हैं। वर, अभय, कमल का जोड़ा, शंख, चक्र, गदा, अंकुश, शुभ्र कपाल तथा जपमाला जिनके हाथों में सुशोभित हो रहे हैं। ऐसी वर देने वाली तथा बुद्धि को प्रेरणा प्रदान करने वाली भगवती वेद माता गायत्री का स्मरण करना चाहिए।

जगत-जननी माँ गायत्री की महिमा

पाठको! जगतारिणी भवानी गायत्री स्वयम्भू अर्थात् स्वयं अपने द्वारा निर्मित हैं। ये भगवती आद्यशक्ति के रूप में निराकार रहकर ही सृष्टि का संचालन करती हैं। जब इन्हें किसी विशेष प्रयोजन के लिए प्रकट रूप में कार्य करना भी होता है, तब आप अपने अंश रूप में विभिन्न देवों व देवियों के रूप में प्रंकट होकर उस कार्य की आपूर्ति कर देती हैं।

अधिकांश देवों के माता-पिता, पति-पत्नी और परिवार हैं। परन्तु मातेश्वरी-गायत्री के माता-पिता एवं परिवार का वर्णन किसी धर्म ग्रन्थों में उपलब्ध इसलिए नहीं है कि भगवती स्वयं सर्वोपरि महाशक्ति हैं- आद्यशक्ति है।

भगवान विष्णु चतुर्भुज हैं, शिव जी त्रिनेत्र हैं और ब्रह्मा जी के चार मुख हैं। परन्तु मातेश्वरी गायत्री के तो पाँच मुख हैं, दश भुजाएँ और पन्द्रह नेत्र हैं। अतः भवानी गायत्री समस्त देवी-देवताओं के सृष्टि दात्री महाशक्ति हैं।

गायत्री जी की महानता का वर्णन करते हुए ''शंख स्मृति'' में कहा गया है-

गायत्री वेद जननी गायत्री पाप-नाशिनी।
गायत्र्याः परमं नास्ति दिवि चेह च पावनम्॥

हिन्दी अनुवाद-गायत्री की समस्त वेदों की माता, सभी के पापों का नाश करने वाली और सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड में सर्वोपरि आद्यशक्ति हैं।

स्कंद पुराण [का०/ख०/9/58] के अनुसार-

[श्लोक]

गायत्र्येव परो विष्णु गायत्र्येव परः शिवः।
गायत्र्येव परो ब्रह्मा गायत्र्येव त्र्यी ततः॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

हिन्दी अनुवाद–गायत्री ही भगवान विष्णु हैं, गायत्री ही परमात्मा शिव हैं और गायत्री ही परमात्मा ब्रह्म हैं। अत: गायत्री से वेदों की उत्पत्ति हुई है।

वेदों में पुराणों में अनेक उपासनावों का वर्णन मिलता है पर उन सभी उपासनावों में गायत्री की उपासना का विशेष महत्त्व दिया गया है। गायत्री उपासना ''वैदिक उपासना'' कही जाती है। ब्रह्म स्वरूपी वेदों की माँ होने के कारण इसे ''ब्रह्म गायत्री'' भी कहते हैं।

भगवद् गीता में भगवान कृष्ण ने कहा है–''गायत्री छन्द सामहम्'' अर्थात् ''वेदों में मैं गायत्री हूँ।''

''बृहद योगि याज्ञ बलक्य स्मृति'' में गायत्री की महिमा इस प्रकार है–

यथा च मुध पुष्पेभ्यो घृतं दुग्धा द्रसात्पयः।
एवं ही सर्व वेदानां गायत्री सार उच्यते॥

हिन्दी अनुवाद–जिस प्रकार पुष्पों का सार मधु, दुग्ध का सार घृत और रस का सार दुग्ध है, उसी प्रकार वेदों का सार गायत्री कहा जाता है।

गायत्री का आध्यात्मिक अर्थ परमात्मा है और आधिदैविक अर्थ– ''सूर्य'' है। ''षू प्रेरणे'' [धातु पाठ 6/124] और ''षूड प्राणि प्रसवे'' [धातु पाठ 4/124] के अनुसार विश्व को जन्म देने वाला तथा प्रेरक परमात्मा–''सविता'' है, यही परमात्मा है। इसलिए गायत्री मंत्र में सूर्य के रूप में परब्रह्म परमेश्वर की ही उपासना की रीति बनाई गयी है। सूर्य परब्रह्म परमेश्वर के ही प्रतीक हैं और उन्हीं की विभूति हैं। गायत्री मन्त्र में कहे गये ''सवितु:'' पद के सूर्य का ही अर्थ होता है। सूर्य सविता की पर्यायवाची शब्द है। गायत्री सविता की शक्ति है। सविता की शक्ति ही ''गायत्री'' के नाम से प्रसिद्ध है और वह इसी शक्ति की उपासना के लिए देवी रूप में कल्पित की गयी हैं।

माता गायत्री का सूर्यदेव से सम्बन्ध

गायत्री सूर्य की शक्ति से अनुप्राणित है फलत: गायत्री का ध्यान करने से सूर्य का स्वरूप प्रकट होता है और सूर्य का ध्यान करने से गायत्री का स्वरूप प्रकट होता है। गायत्री और सूर्य का परस्पर अभिन्न सम्बन्ध है, जो वाच्य-वाचक रूप से निर्दिष्ट है।

सूर्य और गायत्री का परस्पर वाच्य वाचक सम्बन्ध है। सूर्य तो गायत्री साक्षात् वाच्य हैं और गायत्री उन सविता की वाचिका हैं।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

गायत्री और ॐ का सम्बन्ध

गायत्री ॐ के साथ घनिष्ठ सम्बन्ध है। कुछ प्रामाणिक धार्मिक ग्रन्थों में इसका उल्लेख इस प्रकार है–

बृहत्पाराशर स्मृति 2/5-6/ के अनुसार–

गायत्री प्रकृतिर्ज्ञेया ओंमगुरः पुरुषः स्मृतः।
एतयो रेव संयो-गाज्ज-गत्सर्वं प्रवर्त्तते॥

हिन्दी अनुवाद–"गायत्री को प्रकृति और ॐ को पुरुष कहा गया है। इन दोनों का संयोग समस्त जगत की उत्पत्ति का कारण हैं।"

गायत्री साऽभवत पत्नी प्रणवो भूत पतिस्तदा।
पुनरन्यो न्यदाम्या दिति ताभ्याम भूज्जगत॥

[बृहत्पाराशर स्मृति 2/9/]

हिन्दी अनुवाद–"उस समय [उद्भव के समय] वह गायत्री स्त्री हुई और प्रणव [ॐकार] पति हुआ। इन दोनों के दाम्पत्य-भाव से ही इस संसार की उत्पत्ति हुई है।"

सभी वेदों का मूल तत्त्व गायत्री मंत्र और उसका विशाल अर्थ

पाठको! वेदों में अनेक उपासनावों का वर्णन मिलता है, किन्तु इन सभी उपासनावों में गायत्री की उपासना का विशेष महत्त्व माना गया है। गायत्री की उपासना "वैदिक उपासना" कही जाती है।

गायत्री की उपासना में "गायत्री मंत्र" का जप किया जाता है, जो इस प्रकार है–

गायत्री मंत्र

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो
देवस्य धीमहि धियो योनः प्रचोदयात्।

मंत्र के प्रत्येक अक्षर का "भाव अर्थ" इस प्रकार है–

ॐ–"ॐ" परमात्मा का मुख्य नाम है। जिसका वर्णन वेदों और शास्त्रों में किया गया है। [इसलिए परमात्मा के गुणों का ध्यान करते हुए ही प्रार्थना या उपासना करनी चाहिए। इससे ही सम्पूर्ण लाभ होगा।]

भुं–प्राण आधार, सत्य स्वरूप।

भुवः–दुःखों का नाश करने वाला, ज्ञान स्वरूप।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

स्वः–स्वयं प्रकाशमान, सुख स्वरूप।

ततः–अनन्त, अपार, सबका सार, सबको सत्ता प्रदान करने वाला।

सवितः–संसार को उत्पन्न करने वाला, चलाने वाला, प्रेरणा देने वाला, पवित्र करने वाला, मन और बुद्धि को भी चलाने वाला।

वरेण्यं–वर्ने या अपनाने योग्य, पूजा और उपासना करने योग्य।

भर्गो–तेज स्वरूप, सब प्रकार के अज्ञानता, पापों, दुःखों, रोगों, तापों और क्लेशों का नाश करने वाला।

देवस्य–दिव्य ज्ञान देकर परमानन्द प्रदान करने वाला देवता।

धीमहि–हम ध्यान करते हैं उस परमात्मा का।

धियो योनः–जो हमारी बुद्धियों को

प्रचोदयात्–प्रेरणा देकर शुद्ध करता है।

प्रार्थना का मुख्य भावार्थ इस प्रकार है–

"हे परमात्मा आप सर्वशक्तिमान और सर्वव्यापी हो, सबके पालन-पोषण करने वाले, रक्षक और अन्तर्यामी हो। आप ही सबके प्राणाधार, सबको सत्ता देने वाले हो, आप ही हमारे सब प्रकार के अज्ञान, दुःखों, रोगों, क्लेशों और चिन्ताओं को मिटाने वाले और समस्त सुखों और आनन्द को प्रदान करने वाले हो, आप ही हमारे कर्मों के साक्षी और बुद्धि को प्रेरणा देने वाले हो। हम एकाग्रचित्त से आपका ध्यान करते हैं और आपसे नम्रता-पूर्वक प्रार्थना करते हैं कि आप कृपा करके हमें बुरे कर्मों से हटाकर शुभ कर्मों में लगाएं ताकि हमारा मानव जन्म सफल हो।"

"स्वामी दयानन्द जी" ने गायत्री मन्त्र के शब्दों का अर्थ संक्षिप्त रूप से इस प्रकार किया है–

"यह परमात्मा जिसका नाम ओम् [ॐ] है और जो सारे संसार को उत्पन्न करने वाला, ऐश्वर्य देने वाला, सब आत्माओं को प्रकाश देने वाला, सब दुःख दूर करके सब प्रकार का सुख और शान्ति देने वाला है, जो बेहद ग्रहण करने योग्य और जो शुद्ध ज्ञान स्वरूप है। हम उस परमात्मा को प्रेमाभक्ति और पूरी श्रद्धा के साथ अपनी आत्मा में धारण करें, ताकि वह सविता देव परमेश्वर हमारी बुद्धियों को बुरे कामों से हटाकर अच्छे कामों में लगाता रहे।"

"महात्मा आनन्द स्वामी"–जो गायत्री मन्त्र के बहुत बड़े उपासक थे, उन्होंने इस मन्त्र के शब्दों की व्याख्या इस प्रकार की है–

ॐ [ओम]–"ॐ" स्वयं एक बहुत बड़ा मन्त्र है और परमात्मा का मुख्य नाम है। ॐ में "आ-ऊ-मा"–तीनों वेदों के प्रतिनिधि हैं। ॐ की

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ध्वनि से जो झंकार उत्पन्न होती है उससे आत्मा के पट खुल जाते हैं।

भूर्भुवः स्वः—यह उपनिषदों का सार है। "भूः"—का मतलब है प्राण आधार, प्राण यानि जीवन देने वाला है। जैसे मछली पानी के वगैर जीवित नहीं रह सकती, इसी प्रकार कोई प्राणी ईश्वर की सत्ता के बिना जिन्दा नहीं रह सकता और जब हम परमात्मा को सबका प्राण-आधार मान लेते हैं तो हमारा भी कर्त्तव्य बन जाता है कि हम दूसरे प्राणियों की अपने स्वार्थ के लिए कभी हत्या न करें बल्कि उनकी रक्षा करें।

भवः सवः—इसका यह भाव है कि जब हम गायत्री के द्वारा यह स्वीकार कर लेते हैं कि परमात्मा सबके कष्टों को दूर करके सुख देने वाला है तो गायत्री के उपासक को भी चाहिए कि दूसरे लोगों की न तो हानि करें और न उन्हें कष्ट दें, बल्कि जहां तक हो सके उनके दुःख दूर करें।

तत्सवितुर्वरेण्यम्—इसका यह अर्थ है कि यह सारा संसार भगवान की शक्ति और प्रेरणा से चलता है। वह परमात्मा ही आत्म रूप से बुद्धि के द्वारा प्रेरणा देकर मनुष्य को कर्मों में लगाता है। जिनके विचार अच्छे हैं वह शुभ कर्म करते हैं और जिनके विचार शुद्ध नहीं होते वह बुरे कर्म करते हैं। लेकिन सभी काम ईश्वर की सत्ता से ही होते हैं और ईश्वर की उपासना और प्रार्थना से बुद्धि का अवश्य सुधार होता है।

सविता—वह शक्ति है जिसके द्वारा मनुष्य भगवान से राजदारी की बातें करता है। बुरे कर्मों से बचने के लिए भगवान उसे सावधान करता है। इसलिए गायत्री का जप करते-करते उपासक जब "सविता" शब्द पर पहुंचे तो उसे उस सर्वशक्तिमान परमात्मा का खास तौर पर ध्यान करना चाहिए जो कल्याण का मार्ग बतलाता है। जो मनुष्य की बुद्धि शुद्ध करके उसको बुरे कर्मों से हटाकर भले कर्मों में लगाता है। जो पशु योनि से बचाता है, जो मनुष्य को मोक्ष प्रदान करता है। गायत्री का जप करने वाला मनुष्य जीवन में पूरी तरह सफल हो जाता है। वह सब बुराइयों से छूटकर परम सुख पाता है।

वरेण्यं—का अर्थ है, उस परमात्मा की शरण में चले जाना जो कल्याणकारी है, जो मोक्ष का दाता है। जो उसको दुःखों, रोगों, बुढ़ापे के कष्टों और जन्म-मरण के चक्करों से बचाता है। जो जीवन की रक्षा करता है। यदि कोई मनुष्य संसार का सहारा छोड़कर उसको अपना बना लेता है, अपना सब कुछ उसी को सौंप देता है तो वह परमात्मा उसके जीवन निर्वाह के सम्बन्ध में उसकी सब जरूरतों को पूरा करता है और मोक्ष के पद पर भी पहुँचा देता है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

भर्गो–शब्द का अर्थ है कि वह परमात्मा सब तापों, संतापों, रोगों, क्लेशों और अज्ञान का नाश करने वाला है। जब उपासक जप करते हुए इस शब्द पर पहुँचे तो उसे इस बात का ध्यान और विश्वास करना चाहिए कि वह महान शक्ति मेरे सब पापों, दु:खों, रोगों, वहमों, चिन्ताओं और क्लेशों को भस्म कर देगी और मेरे जीवन में आनन्द और शान्ति का अवश्य संचार होगा। मेरे सब शारीरिक और मानसिक रोग दूर हो जायेंगे।

देवस्य–जब उपासक ''देवस्य'' शब्द पर पहुँचे तो उसे इस बात का विश्वास होना चाहिए कि वह परमात्मा परम देवता है। वह सब कुछ देता है जो हमारे लिए कल्याणकारी हो। क्योंकि वह हमारा परम-पिता परमेश्वर हैं।

इसमें कोई शक नहीं कि वह सब कुछ देता है। सब पदार्थ देते हुए भी किसी पर अहसान नहीं जताता। यदि कोई मनुष्य एक जन्म में ईश्वर प्राप्ति के लक्ष्य को पूरा नहीं कर पाता तो उसे फिर जन्म देकर शुभ कर्मों की प्रेरणा देता है।

धी महि धियो योन: प्रचोदयात्–यह शब्द गायत्री मन्त्र का आखिरी भाग है। इसका भावार्थ यह है कि परमात्मा हमारी बुद्धियों को प्रेरणा देने वाला है, वह हमें बुरे मार्ग से हटाकर शुभ मार्ग पर लगाता है।

भगवान कृष्ण ने गीता में उपदेश दिया है कि–''मन्त्रों में मैं गायत्री हूँ''। यानि यह मन्त्र बहुत ऊँचे दर्जे का है। उन्होंने यह भी कहा है कि जो लोग इसका जप करके मेरी उपासना करते हैं मैं उनको बुद्धि योग देता हूँ जिससे उसका कल्याण हो जाता है।

जन्म-जन्म के विषय-विकारों और मोह-माया के मैल को धोने के लिए गायत्री मन्त्र का बार-बार जप करने से बहुत लाभ होता है। गायत्री के उपासक को संसार में सब प्रकार की सुख-सम्पत्ति, ऐश्वर्य अर्थात् धन-दौलत, शारीरिक स्वास्थ्य, नेक और आज्ञाकारी सन्तान, यश, कीर्ति, ऊँची पदवी, धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष यानि सब कुछ अपने आप मिल जाता है। बुद्धि को शुद्ध करने के लिए तो यह एक अचूक मन्त्र है। भला जिस मनुष्य की बुद्धि शुद्ध हो जाये उसके मानव जीवन की सफलता के प्रति क्या सन्देह रह जाता है।

गायत्री मन्त्र से प्रभावित होकर ''स्वामी विवेकानन्द'' ने इस प्रकार की प्रार्थना का उपदेश दिया था–

''हे प्रभु! आप सत्-चित आनन्द हो, सर्वशक्तिमान हो। सर्वव्यापी हो, नित्य हो, अनन्त हो, सबके पालनहार हो, प्राण आधार और रक्षक हो, सब

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

प्रकार के दु:खों और रोगों से छुड़ाने वाले हो, शुभ कर्मों की प्रेरणा देने वाले हो। मैं आपकी शरण में जाता हूँ, अपने जीवन की बागडोर आपके हाथ में देता हूँ, आपके सिवाय मैं किसी और को नहीं जानता जो मेरी देख-भाल करे और संसार सागर से पार कराये। मैं आपको बार-बार नमस्कार करता हूँ।''

गायत्री मन्त्र में 24 [चौबीस] अक्षर हैं और यह मन्त्र में इस प्रकार सजाये गये हैं कि मन में उनका उच्चारण करने से मनुष्य के सूक्ष्म शरीर के अतिरिक्त स्थूल शरीर पर भी अपना प्रभाव निरन्तर डालती चली जाती है। जैसे वीणा के एक तार को हिलाने से अन्य तारें भी अपने आप हिलने लगती हैं। वैसे ही इस मन्त्र के लगातार जाप से शरीर के सभी मर्म स्थानों मन, बुद्धि, चित्त आदि और शरीर की नस-नाड़ियों पर इसका कल्याणकारी प्रभाव पड़ता है। मन का लक्ष्य ईश्वर प्राप्ति की ओर होता जाता है और इसके साथ-साथ सब अज्ञान और अन्धकार भी नष्ट होता जाता है। आरम्भ में इस रहस्य का पता यदि न भी चले लेकिन इसका पता उस समय साधक को लगता है जब उसका मन ईश्वर की ओर पूरे तौर पर झुक जाता है। फिर मन शुद्ध और शान्त होकर ईश्वर प्रेम और योग के सिवाय कुछ नहीं चाहता। अन्त में गायत्री के उपासक के आठों के आठों चक्कर [बन्धन] खुल जाते हैं।

भगवान कृष्ण, महात्मा गाँधी, लोकमान्य तिलक, महर्षि रविन्द्र नाथ टैगोर, महर्षि दयानन्द, स्वामी नित्या नन्द, स्वामी विवेकानन्द, राम कृष्ण परमहंस, महात्मा आनन्द स्वामी और अन्य करोड़ों महापुरुष गायत्री का नियमपूर्वक जप करते थे और अब भी अनेक लोग कर रहे हैं। भगवान वेद व्यास ने बताये हैं कि गायत्री और ब्रह्म में कोई भेद नहीं है। जो ॐ हैं वही आद्याशक्ति गायत्री हैं और आद्या शक्ति गायत्री ही ॐ है।

गायत्री की शक्तियाँ, देवता, छन्द पुष्प एवं तत्त्व खण्ड

वेदों-शास्त्रों में ''गायत्री मन्त्र'' का विशद आलोचन-विवेचन किया गया है और आज गायत्री मन्त्र पर हज़ारों पृष्ठों की प्राचीनतम सामग्री उपलब्ध है।

गायत्री मन्त्र के छन्द, देवता, ऋषि, शक्तियाँ, तत्त्व और पुष्पों तक का विवरण और विधान प्राप्त है। मुद्राएँ आदि विभिन्न रूपों में ये विश्लेषण काफी जटिल हैं। वैसे एक सच्चे भक्त के लिए इस प्रकार के विश्लेषणों

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

का अधिक महत्त्व नहीं। एक सच्चे भक्त के लिए तो उसकी ममतामयी माँ गायत्री सभी कल्याण करने और संतापों को हरने वाली तथा समस्त सृष्टि को पवित्र करने वाली हैं। माँ गायत्री भक्तों को इस लोक में सभी सुख और अन्त में मोक्ष प्रदान करने वाली भवानी हैं। वास्तव में मातेश्वरी गायत्री से आत्मिक हृदय-स्पर्शी सम्बन्ध स्थापित करने के लिए विस्तृत ज्ञान की नहीं बल्कि हार्दिक-भक्ति भाव की आवश्यकता है, जो हमें उनकी सरल अराधना उपासना करने से भी प्राप्त हो जायेगा, क्योंकि माँ गायत्री अत्यन्त दयालू हैं और भोले भक्तों के प्रेम-भाव को अच्छी तरह से समझती हैं।

गायत्री की शक्तियाँ

पाठको! प्रत्येक मन्त्र की अपनी कुछ शक्तियां होती हैं। इसी प्रकार इस स्वयं सिद्ध "गायत्री मन्त्र" की 24 शक्तियाँ हैं। इन शक्तियों का प्रामाणिक ग्रन्थों में विवरण इस प्रकार है-(1) वाम देवी (2) प्रिया (3) सत्या (4) विश्वा (5) विलासिनी (6) प्रभावती (7) जया (8) शान्ता (9) कान्ता (10) दुर्गा (11) सरस्वती (12) विद्रुमा (13) विशालेषा (14) व्यापिनी (15) विमला (16) तमोऽपहारिणी (17) सूक्ष्मा (18) विश्व योनि (19) जया (20) वसा (21) पद्मालया (22) पराशोभा (23) भदा और (24) त्रिपदा।

गायत्री के देवता

"शुक्ल युजुर्वेद" में गायत्री के वर्णों के 24 देवता माने गए हैं, जो इस प्रकार हैं-(1) अग्नि (2) प्रजापति (3) चन्द्रमा (4) ईशान (5) सविता [सूर्य] (6) आदित्य (7) बृहस्पति (8) मित्रा वरुण (9) भग (10) ईश्वर (11) गणेश (12) त्वस्टा (13) पूषा (14) इन्द्राग्नि (15) अश्विनी कुमार (16) विष्णु (17) वसु-गण (18) रुद्र (19) कुबेर (20) विश्वदेव (21) वामदेव (22) वायुदेव (23) मातृका गण (24) मैत्रा वरूणि।

गायत्री के छन्द

"ऋग्वेद" के अनुसार गायत्री के 24 छन्द हैं, जो इस प्रकार हैं-

(1) गायत्री (2) उष्णिक (3) अनुष्ठुप (4) बृहती (5) पंक्ति (6) त्रिष्टुप् (7) जगती (8) अति जगती (9) शक्वरी (10) अतिशक्वरी

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

(11) धृति (12) अति धृति (13)विराट (14) प्रस्तार पंक्ति (15) कृति (16) प्रकृति (18) विकृति (19) संस्कृति (20) अक्षर पंक्ति (21) भूः (22) भुवर (23) स्वर और (24) ज्योतिष मती।

गायत्री महामन्त्र के तत्त्व

गायत्री महामन्त्र के 24 तत्त्व हैं, जो इस प्रकार हैं-(1) पृथ्वी (2) जल (3) आकाश (4) वायु (5) तेज (6) गन्ध (7) रस (8) रूप (9) शब्द (10) स्पर्श (11) उपस्थ (12) पायु (13) पाद (14) हस्त (15) वागिन्द्रिय (16) नासिका (17) जिह्वा (18) चक्षु (19) त्वचा (20) श्रोत्र (21) प्राण (22) अपान (23) ब्यान और (24) समान।

गायत्री उपासना में चढ़ाने वाले विभिन्न पुष्प

''ऋग्वेद'' में गायत्री उपासना हेतु 7 प्रकार के पुष्पों का प्रयोग वर्णित है। इन निम्नलिखित 7 पुष्पों में से ही किसी पुष्प के द्वारा माँ गायत्री की उपासना करनी चाहिए। ये पुष्पों का वर्णन नीचे वर्णित है-

(1) चम्पा (2) अतसी के पुष्प (3) कमल (4) केतकी (5) मल्लिका (6) कनेर (7) सफेद पुष्प।

गायत्री के ऋषिगण

माँ गायत्री महामन्त्र के 24 ऋषिगण हैं, जिनका नाम इस प्रकार है-

(1) वामदेव (2) अत्रि (3) वशिष्ठ (4) कश्यप (5) नारद (6) दुर्वाषा (7) शुक्र (8) कण्व (9) परासर (10) विश्वामित्र (11) कपिल (12) महाभाग (13) याज्ञवल्क्य (14) भारद्वाज (15) तपोनिधि जमदग्नि (16) गौतम (17) मुद्गल (18) वेद व्यास (19) लोमश (20) अगस्त्य (21) कौशिक (22) वत्स (23) पुलस्त्य और (24) माण्डुक।

गायत्री मन्त्र की महिमा

आद्याशक्ति जगदम्बा गायत्री परब्रह्म की सात्विक शक्ति कही गयी हैं, जिस शक्ति को ''ब्रह्मा'' ने तपस्या के द्वारा प्राप्त किया था। तभी वे सृष्टि करने में समर्थ हो सके थे। वैदिक मन्त्रों में ''गायत्री मन्त्र'' की सबसे अधिक महिमा और प्रतिष्ठा है। गायत्री मन्त्र-''महामन्त्र'' है। यह महामन्त्र सर्व-सिद्धि प्रदाता है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

गायत्री की उपासना में–गायत्री मन्त्र का जप किया जाता है। गायत्री मन्त्र में "परब्रह्म परमेश्वर की स्तुति" है। अत: गायत्री मन्त्र के जप के द्वारा परब्रह्म परमेश्वर की स्तुति होती है। इस महामन्त्र के प्रभाव से मनुष्य जो चाहे, वह वस्तु प्राप्त कर सकता है।

हमारे पूर्वज गौत्तम, कणाद, वशिष्ठ, अंगिरा आदि ऋषि-महर्षियों ने गायत्री मन्त्र की उपासना द्वारा ही अपने में अद्भुत और अलौकिक शक्ति प्राप्त की थी। वे गायत्री मन्त्र के प्रभाव से जिसको जो वरदान अथवा आशीर्वाद दे देते थे वह प्रत्यक्ष रूप से घटित होता था। गायत्री के प्रभाव से ही महर्षि वशिष्ठ ने विश्वामित्र के समस्त शस्त्रास्त्रों को नष्ट कर विजय प्राप्त की थी। गायत्री के प्रभाव से ही राजर्षि विश्वामित्र ने "ब्रह्म ऋषि" पद प्राप्त कर नूतन सृष्टि रचने की अपूर्व शक्ति प्राप्त कर ली थी। गायत्री के प्रभाव से ही दुर्वासा आदि ऋषियों ने अद्भुत पराक्रम प्राप्त किया था। गायत्री के प्रभाव से ही रामानुजाचार्य निम्बिकाचार्य, मध्वाचार्य आदि आचार्यों ने अलौकिक आत्मबल प्राप्त कर अनेकानेक चमत्कार पूर्ण ईश्वरीय शक्ति का प्रदर्शन कर अपना नाम अमर किया था।

गायत्री के जप से मनुष्य परम धार्मिक, आस्तिक और ईश्वर भक्त बन जाता है। गायत्री के जप से मनुष्य शारीरिक रोगों और मानसिक चिन्ताओं से मुक्त रहता है। गायत्री के जप से मनुष्य की अपमृत्यु का निवारण होता है तथा वह दीर्घजीवी होता है। मनुष्य के समस्त दु:ख दूर हो जाते हैं और वह सर्वदा सुख शान्तिमय जीवन व्यतीत करता है। गायत्री के जप से मनुष्य की समस्त कामनाएँ परिपूर्ण होती हैं।

गायत्री के जप से मनुष्य की आत्म-शुद्धि होती है। आत्म शुद्धि होने से मनुष्य आत्म ज्ञान प्राप्त करता है। आत्म ज्ञान प्राप्त होने पर मनुष्य का चित्त अन्तर्मुख हो जाता है। चित्त के अन्तर्मुख आत्म ज्ञान प्राप्त होने पर मनुष्य "गायत्री माता" का प्रत्यक्ष दर्शन कर मुक्त हो जाता है।

गायत्री की उपासना से मानव में सद्बुद्धि, सद्विकार और सद्धर्म उत्पन्न होता है। गायत्री की उपासना से मनुष्य में आस्तिकता, धार्मिकता, आदि सद्गुणों का समावेश होता है। गायत्री की उपासना से मनुष्य में श्रद्धा भक्ति और ईश्वर विश्वास की पूर्णता हो जाती है। गायत्री की उपासना से मनुष्य की ज्ञान शक्ति, जीवन शक्ति बढ़ती है और उसके समस्त पापों का उन्मूलन हो जात है।

गायत्री की उपासना से मनुष्य समस्त प्रकार के रोग, शोक, चिन्ता, ब्याधि और दीनता से मुक्त हो जाता है। गायत्री की उपासना से समस्त

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

प्रकार की विघ्न-बाधाएँ टल जाती हैं और मनुष्य समस्त अभीष्ट सिद्धियाँ प्राप्त कर लेता है।

गायत्री के उपासक पर दानव, दैत्य, भूत, प्रेत, पिशाच, यक्ष और राक्षस का बश नहीं चलता। गायत्री का उपासक क्रूर ग्रहों की बाधाओं से दूर हो जाता है। गायत्री का उपासक दीर्घायु, विपुल लक्ष्मी, सत्पुत्र, सत्कीर्ति, और सत्प्रतिष्ठा प्राप्त करता है। गायत्री के उपासक का कभी "हार्टफेल" नहीं होता है। "हार्टफेल" को रोकने के लिए गायत्री की उपासना "रामबाण" दवा है। गायत्री का उपासक प्राय: भयंकर रोग से ग्रस्त नहीं होता।

गायत्री समस्त धर्मावलम्बी मानवों का कल्याण करने वाली, सज्जनों के शोक को हरने वाली, जीवों के जन्म-मरण के विविध सन्ताप एवं विविध दु:ख-तरंगों को हरने वाली, समस्त लोकों को पवित्र और शक्ति सम्पन्न करने वाली, इहलौकिक और पारलौकिक सर्वविध सुख, ऐश्वर्य, भोग और मोक्ष को देने वाली, महान-अनुग्रह पूर्ण शीतल स्वभाव वाली, समस्त देवताओं को आश्रय देने वाली, समस्त लोकों में विराजमान होने वाली तथा ब्रह्मा-विष्णु एवं शिव के रूप को धारण करने वाली हैं।

जो मनुष्य विधिपूर्वक गायत्री की उपासना करता है, उसे गायत्री माता सब कुछ प्रदान करती हैं।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

गायत्री माहात्म्य खण्ड

ब्रह्म ऋषि विश्वामित्र द्वारा गायत्री उपासना की कथा

त्रेता युग की बात है, उस समय महर्षि वशिष्ठ जी महाराज दशरथ के दरबार में राजगुरु के पद पर सुशोभित थे। विश्वामित्र उस काल में एक प्रतापी राजा थे। एक बार शिकार खेलते हुए अपने सैनिकों समेत वशिष्ठ जी के दर्शन करने आश्रम में पहुँचे। वशिष्ठ जी ने उनका बड़ा आदर-सत्कार किया और रात में आश्रम पर ही ठहरने का आग्रह किया।

राजा विश्वामित्र कहने लगे—महाराज! हमारे पास तो पूरी सेना है, आप जैसे त्यागी, तपस्वी ब्राह्मण के लिए इतने सैनिकों को भोजन की व्यवस्था करना भी सम्भव नहीं होगा।

यह सुनकर वशिष्ठ जी मुस्कराए और कहने लगे—ईश्वर की कृपा से सब प्रबन्ध हो जाएगा, आप यदि ठहरना चाहें तो ठहर जाइये। विश्वामित्र को उनकी बात सुनकर बड़ा हर्ष हुआ। मन में सोचने लगे कि चलो आज वशिष्ठ जी की परीक्षा भी हो जायेगी। अस्तु! वे आश्रम पर ही ठहर गए। वशिष्ठ जी अपनी संध्याकालीन उपासना में लीन हो गए।

संध्या पूजन से जैसे ही वशिष्ठ जी उठे, उन्होंने राजा विश्वामित्र से कहा—आप अपने समस्त सैनिकों को भोजन करने के लिए बुलवाइए। विश्वामित्र हैरान थे—न कोई सामग्री आई, न कोई व्यवस्था और वशिष्ठ जी ने अपना ब्रह्म दण्ड उठाकर जैसे ही घुमाया तो विश्वामित्र क्या देखते हैं कि क्षणमात्र में आश्रम के "पार्श्व उद्यान" में नाना प्रकार के व्यञ्जनों से भरे थाल सजे हुए हैं और हज़ारों व्यक्तियों के भोजन की व्यवस्था पलक झपकते ही हो गई। अब तो विश्वामित्र ने मन ही मन वशिष्ठ के ब्रह्म बल की प्रशंसा करते हुए सैनिकों को बुलाने की आज्ञा भेज दी। कई सौ सैनिक जो उनके साथ थे, आए और तृप्ति पूर्वक भोजन करके चले गए। उन्होंने ऐसा स्वादिष्ट भोजन अपने जीवन में पहले कभी नहीं किया था।

विश्वामित्र ने आश्चर्यचकित होकर अपने सैनिक जासूसों को आज्ञा दी कि रात के अन्धेरे में आश्रम के चारों ओर का क्षेत्र पूरी तरह छानकर पता लगाओ कि कहीं कोई गुप्त भण्डार तो नहीं बना रखा है वशिष्ठ ने। प्रातःकाल जासूसों ने समाचार दिया कि महाराज! कहीं कोई भण्डार नहीं है। आश्रम में केवल एक गाय अवश्य है, जिसकी वशिष्ठ जी बड़ी श्रद्धा से सेवा करते हैं और रात को उसी गाय के पास खड़े ऋषिवर कह रहे थे—

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

"माँ! तूने आज अपने पुत्र की लाज रखी, इसके लिए मैं तेरा कृतज्ञ हूँ। मुझ पर ऐसी ही दया बनाए रखना।"

अब तो विश्वामित्र को विश्वास हो गया कि वशिष्ठ जी के पास कामधेनु गाय है, उसी कारण यह सब सम्भव हुआ। उन्होंने दूसरे दिन वशिष्ठ जी से कहा–"आप अपनी गाय हमें दान कर दें क्योंकि ऐसी उत्तम गाय तो राज महल की ही शोभा हो सकती है।"

यह सुनकर वशिष्ठ जी बोले–राजन! "वह तो मेरी माता है, उसके बिना तो मेरा जीवन ही शून्य है। आपकी दृष्टि में वह एक गाय मात्र है। किन्तु मेरी दृष्टि में वह मेरी जननी, मेरा पोषक और मेरे जीवन का सर्वस्व वही है। मैं किसी प्रकार भी उसे अपने से अलग नहीं कर सकता।"

वशिष्ठ जी का ऐसा उत्तर सुनकर विश्वामित्र ने अपने सैनिकों को आदेश दिया कि "बल पूर्वक इस गाय को ले चलो, फिर क्या था? विश्वामित्र के सैनिक ज्यों ही गाय की ओर बढ़े, वशिष्ठ जी ने गायत्री मन्त्र का उच्चारण कर अपना "ब्रह्म दण्ड" उठा लिया। पल मात्र में उस गाय के शरीर से हज़ारों वीर सैनिक उत्पन्न हो गए जिन्होंने विश्वामित्र के असंख्य सैनिकों को यमलोक पहुँचा दिया। जो बचे, वे भाग गए और स्वयं विश्वामित्र ने भागकर अपने प्राण बचाए।

वशिष्ठ जी का ऐसा आध्यात्मिक गायत्री बल देखकर विश्वामित्र के मुख से निकला–**धिक् बलं क्षत्रिय बलं, ब्रह्म बलं परम बलम्।**

और फिर सारा राज-पाठ त्याग वे ब्रह्म ज्ञान प्राप्त करने हेतु गायत्री की घोर तपस्या में लीन हो गए। उन्होंने साठ हज़ार वर्ष तक कठोर तप किया।

इस दृष्टान्त से आप भली-भान्ति समझ गए होंगे कि गायत्री वह महाशक्ति है, जिसके द्वारा संसार में कोई भी कार्य असम्भव नहीं।

पंडित सोम शर्मा के पुत्र को गायत्री मन्त्र से महान ज्ञान की प्राप्ति

पूर्व काल में सोम शर्मा का एक ब्राह्मण गायत्री मन्त्र का परम भक्त था। उसके चार पुत्र थे। उसके तीन पुत्र तो बड़े विद्वान, बुद्धिमान एवं धर्मात्मा थे, परन्तु सबसे छोटा पुत्र चोर निकला। सोम शर्मा ने अपनी मृत्यु के समय उससे कहा–"मैं केवल तुम्हारी चिन्ता से दुःखी हूँ। यदि तुम मेरी एक बात मान लो तो मेरी मृत्यु बहुत सुख से होगी।" उसने पिता के कान में कहा–"चोरी छोड़ने के सिवाय और कोई काम बताओगे तो मैं उसे मान लूँगा।"

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

"मैं चोरी छोड़ने को नहीं कहूँगा। तुम्हारी जो इच्छा हो वो करते रहना, परन्तु ठीक सूर्योदय के समय स्नान करके एक माला "गायत्री मन्त्र" का जप कर लिया करना।"

उसने स्वीकार कर लिया और उसका नियमित रूप से दृढ़ता से पालन करता रहा और चोरी भी करता रहा।

एक बार उसने सोचा कि रोज़ छोटी-छोटी चोरी-करने से तो अच्छा है कि एक बड़ी चोरी की जाये और वह चोरी के लिए राज महल में घुस गया। रानियों का जेवर का डिब्बा चोरी कर अपने घर का रास्ता लिया। जैसे ही वह शहर के बाहर हुआ कि सूर्योदय हो गया। वहीं पर एक जलाशय था। उसने कपड़े उतार, उसमें जेवर का डिब्बा लपेट कर तालाब के किनारे रख दिया और आप स्वयं स्नान करके गायत्री मन्त्र का जप करने लगा।

उतने में सिपाही चारों ओर दौड़ पड़े। कुछ इस ओर भी आ पहुँचे तो क्या देखते हैं कि एक दिव्य तेज युक्त सोलह वर्ष की लड़की कपड़ों के पास बैठी है और एक ब्राह्मण युवक मन्त्र जप कर रहा है। सिपाहियों को उस पर कतई शक नहीं हुआ और वे आगे बढ़ गये।

जब उसने जप पूरा कर लिया तो देखा कि कपड़ों के पास एक लड़की बैठी है। उसने पूछा–"तुम कौन हो और मेरे कपड़ों के पास क्यों बैठी हो?"

लड़की ने दूसरी ओर मुँह फेरे हुए ही उत्तर दिया–"तेरा पिता सोम शर्मा मेरा परम भक्त था। तू उसका पुत्र है। आज तेरे प्राणों पर संकट देख मुझे आना पड़ा।" यह समझ गया कि लड़की कोई और नहीं, स्वयं भगवती गायत्री देवी हैं, उसने साष्टांग दण्डवत करके कहा–"माँ! आपने मुझ पर इतनी दया की, फिर मुझे आपने दर्शन क्यों नहीं दे रहीं?"

"तू ब्राह्मण होकर भी नीच कर्म करता है। ऐसे लोगों को मेरा दर्शन होने लगे तो वेद-शास्त्रों की मर्यादा और मेरा महत्त्व ही क्या रह जायेगा? तू चोरी कर्म को छोड़ दे और जप को ही अपने जीवन का लक्ष्य बना ले तो तू सर्वथा सुखी रहेगा और उचित समय पर मैं तुझे दर्शन भी दूँगी।" कहकर देवी अन्तर्ध्यान हो गयीं।

कहने की ज़रूरत नहीं कि उसने चोरी करना छोड़ दिया जिसे कोई भी छुड़ा नहीं पाया था।

[श्री गायत्रार्थ प्रकाश से]

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्रों वर्णों के लिए अलग-अलग गायत्री मन्त्र

ब्रह्म गायत्री, गुरु मन्त्र, वेदमाता, देवमाता आदि गायत्री के नाम धर्म ग्रन्थों में वर्णित है।

गायत्री मन्त्र का "गायत्री छन्द" है, इसलिए इसको गायत्री मन्त्र कहते हैं। "सविता" (सूर्य) से सम्बन्ध होने के कारण इसको "सावित्री" कहते हैं। वेद [ब्रह्म] से सम्बन्ध रखने तथा ब्राह्मणों के उपास्य होने के कारण इसको "ब्रह्म गायत्री" कहते हैं। उपनयन के समय द्विज [ब्राह्मण] बालक को गुरु के द्वारा गायत्री मन्त्र का उपदेश देने के कारण इसको "गुरु मन्त्र" कहते हैं। वेदों की जननी होने के कारण इन्हें "देवमाता" कहते हैं।

कुछ धार्मिक ग्रन्थों में गायत्री मन्त्र का विस्तार भी किया गया है। यह और अक्षरों में विस्तृत कर दी गयी है। सौ अक्षर की गायत्री का बड़ा महत्त्व माना गया है। उसका रूप इस प्रकार है–

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यम भर्गो देवस्य धीमहि धियो योनः प्रचोदयात्। ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्। उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्॥ ॐ जातवेदसे सुनवाम सोममरा तीयतो निदहाति वेदः स नः पर्षदति दुर्गानि विश्वा नावेव सिन्धुं दुरितातयग्निः।

प्राचीन काल में शूद्र और महिलाओं के लिए गायत्री उपासना, मन्त्र जप वर्जित थी, परन्तु शनैः शनैः इसका स्वरूप बदला है। प्राचीन व्यवस्था के अनुसार गायत्री मन्त्र का अलग-अलग रूप तीनों वर्णों के लिए विभाजित कर दिया गया था। इसका प्रामाणिक विवरण इस प्रकार है–

ब्राह्मण की गायत्री

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यम् भर्गो देवस्य धीमहि। धियो योनः प्रचोयात्॥ [शुक्ल यजुर्वेद 36/3]

क्षत्रिय की गायत्री

ॐ देवसवितः प्रसुव यज्ञं प्रसुव यज्ञपतिं भगाय। दिव्यो गन्धर्वः केतपूः केतं नः पुनातु वाच स्पतिर्वाजं नः स्वदतु स्वाहा।

[शुक्ल यजुर्वेद 9/1]

वैश्य की गायत्री

ॐ विब्सवा रूपाणि प्रतिमुञ्चते कविः प्रासावीद भद्द्रं द्विपदे चतुष्पदे। वि नाक भख्यत सविता व्वेण्योध्नु प्रायाण मुससो विब्राजति।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

दूसरा भाग

गायत्री मन्त्र साधना का वैदिक विधि-विधान खण्ड

पाठको! गायत्री उपासना तो कभी, किसी भी स्थिति में की जा सकती है। माँ गायत्री विधि-विधान का नहीं बल्कि भक्तों की परम-पवित्र भावनाओं से ही प्रसन्न हो जाती हैं, परन्तु वेदों में वर्णित कर्मकाण्डों के साथ की गई उपासना अति फलदायी होती है।

यदि आप ''गायत्री मन्त्र'' की साधना करना चाहते हैं और गायत्री मन्त्र की सिद्धि प्राप्त करके सर्वस्व शक्ति प्राप्त करना चाहते हैं तो निम्नलिखित विधि-विधानों को समझना होगा और इन्हें अपनाना होगा।

''गायत्री मन्त्र साधना'' का प्रथम अंग है-''पुनश्चरण विधि'' पुरश्चरण विधि किसे कहते हैं? सर्वप्रथम इसे समझिए।

पुरश्चरण विधि

गायत्री मन्त्र की साधना के लिए भूमिका रूप में वैदिक रूप से कही गयी विधि का अनुष्ठान-''पुरश्चरण'' कहा जाता है।

नित्य त्रिकाल देव पूजन, जप, तर्पण, हवन तथा ब्राह्मण भोजन-इन पाँच विधियों को ''पुरश्चरण'' कहते हैं।

''कुलार्णव तन्त्र'' के अनुसार-

पञ्चाङ्गनि महादेवि! जपो होमश्च तर्पणम्।
अभिषेकस्य विप्रा-नामाराधन मपीश्वरि॥

हिन्दी अनुवाद-भगवान शिव ने कहा-हे महादेवि! ''पुरश्चरण'' के (1) जप (2) हवन (3) तर्पण (4) अभिषेक तथा (5) ब्राह्मण का पूजन-ये पाँच अंग हैं।

''पूर्व-पूर्व दशांशेन पुरश्चरण मुच्यते''

जप का दशांश हवन, उसका दशांस तर्पण, उसका दशांस अभिषेक, अभिषेक का दशांस ब्राह्मण-भोजन को ''पुरश्चरण'' कहते हैं।

पुरश्चरण विधि सम्पन्न करने हेतु अर्थात् गायत्री मन्त्र साधना-हेतु स्थान

[श्लोक]

पर्वताग्रे नदीतीरे विल्वमूले जलाशये।
गोष्ठे देवालयेऽश्वत्थे उद्याने तुलसी वने॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पुण्य क्षेत्रे गुरोः पार्श्वे चित्ते काग्रस्थ लेऽपि च।
पुरश्चरण कृन्मन्त्री सिध्यत्येव न संशयः॥

[विश्वामित्र कल्प ग्रन्थ]

हिन्दी अनुवाद–पर्वत के ऊपर, नदी का तट, बेल की छाया, तालाब, गोशाला, देवालय, पीपल का वृक्ष, उद्यान (बगीचा), तुलसीवन, पुण्य क्षेत्र, गुरु के सन्निकट तथा जहाँ स्वभाव से चित्त एकाग्र होता हो–इन उपुर्यक्त स्थलों पर मन्त्र फल की सिद्धि के लिए किया गया अनुष्ठान निश्चय ही फलप्रद होता है।

साधक शरीर शुद्धि विधि

आत्मनः शोधनार्थाय लक्षत्रयं जपेद् बुधः।
अथवा ऽप्यवट लक्षं तु गायत्री श्रुति वोदिताम्॥
चतुर्विंशति लक्षं वा याज्ञवल्क्य मतं यथा॥

[विश्वामित्र कल्प से]

हिन्दी अनुवाद–गायत्री मन्त्र के साधक अपने शरीर की शुद्धि के लिए "गायत्री मन्त्र" का तीन लाख या आठ लाख या चौबीस लाख जप करे।

गायत्री मंत्र साधक हेतु भोजन का प्रयोग

अब भोजन शुद्धि का प्रकार जैसा "विश्वामित्र कल्प" में कहा गया है, उसका वर्णन इस प्रकार है–

शुद्ध अन्न का भोजन करना चाहिए। शुद्ध अन्न चार प्रकार का होता है। (1) अयाचित [बिना मांगा हुआ] (2) उच्छ [खेत में गिरे हुए दाने का कण-कण रूप से संग्रह] (3) शुक्ल [अपने परिश्रम की गाढ़ी कमाई से प्राप्त] (4) भिक्षा।

तपस्वी ब्राह्मण को चाहिए कि ब्राह्मण के अतिरिक्त क्षत्रिय, वैश्य तथा शूद्रों का अन्न भिक्षा में ग्रहण न करे।

भिक्षा में प्राप्त हुए शुद्ध अन्न का चार भाग करना चाहिए। प्रथम भाग ब्राह्मण का, द्वितीय भाग गोग्रास का और तृतीय भाग अतिथि का। इस प्रकार का भाग निर्माण कर शेष चौथे भाग का भोजन साधक स्वयं करे।

गायत्री पुरश्चरण कर्म में नियुक्त साधक चाहे समर्थ हो या असमर्थ, यदि वह आहार का नियम कर गुरु भक्ति में लगा हो तो छः मास में ही उसको सिद्धि प्राप्त हो सकती है। परन्तु गायत्री जप कर्म में एक दिन पंचगव्य पीकर, दूसरे दिन केवल वायु के आहार पर और तीसरे दिन ब्राह्मण का अन्न खाकर साधना करनी चाहिए।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

गायत्री मंत्र साधक हेतु निषिद्ध आहार

लवणं क्षारमाम्लं चगृञ्जनादि निषेधितम्।
ताम्बूलं च द्विभुक्तिं च दुष्ट वासं प्रमत्तताम्॥
श्रुति-स्मृति विरोधं च जपं रात्रौ विवर्जयेत्।
श्राद्धा देरनु रोधेन जपं यदि त्यजेन्नरः॥
स भवेद् देवता द्रोही पितृन् सप्त न येदधः॥

[विश्वामित्र कल्प से]

हिन्दी अनुवाद—नमक, खारा, खट्टा और गाजर आदि निषिद्ध है। ताम्बूल, दो बार भोजन, दुष्ट मनुष्य का सहवास, पागलपन, श्रुति तथा स्मृतियों का विरोध और रात्रि में जप वर्जित है। यदि श्रद्धादि के कारण साधक जप का परित्याग करता है तो वह देवद्रोही होता है और अपनी सात पीढ़ी को नरक में ले जाता है।

गायत्री मन्त्र साधक हेतु नित्य नियम

भूमि पर सोना, ब्रह्मचर्य के नियमों का पालन, मौन व्रत और त्रिकाल स्नान, क्षुद्र कर्मों का त्याग, नित्य पूजा, नित्य दान, आनन्दपूर्वक भगवान की स्तुति-कीर्तन, नैमित्तिक अर्चण, गुरु तथा देवता में विश्वास और जप में श्रद्धा ये बारह नियम मन्त्र की सिद्धि में सहायक होते हैं।

नित्य सूर्य की प्रदक्षिणा, स्नान, पूजा, जप, ध्यान, हवन तथा तर्पण आदि कृत्यों में निरन्तर लगा रहे और कामना विरत हो देवता में अपने सभी कर्म का निवेदन करे।

गायत्री मन्त्र साधना आरम्भ करने हेतु शुभ मास और तिथि

वैशाखे श्रावणे वापि आश्विने कार्तिके तथा।
फाल्गुने मार्गशीर्षे वा मन्त्री कुर्यात् पुर स्क्रियताम्॥

[रुद्रयामल तन्त्र से]

हिन्दी अनुवाद—बैसाख, श्रावण, आश्विन, कार्तिक, फाल्गुन तथा अगहन–मन्त्र सिद्धि आरम्भ करने हेतु ये मास उत्तम है।

पूर्णिमा पञ्चमी चैव द्वितीया सप्तमी तथा।
त्र्योदशी च दशमी प्रशस्ता सर्व कर्मषु॥

["स्मृति चन्द्रिका" से]

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

हिन्दी अनुवाद—पूर्णिमा, पंचमी, द्वितीया, सप्तमी, त्रयोदशी तथा दशमी—ये तिथियाँ साधना कार्य के लिए शुभ हैं।

[श्लोक]

गुरु-शुक्रोदये शुद्धे लग्ने सद्वार-शोधिते।
चन्द्र-तारानुकूल्ये च शुक्लपक्षे विशेषतः॥
पुरश्चरणकं कुर्यान्मन्त्र सिद्धि प्रजायते॥

[रुद्रयामल तन्त्र से]

हिन्दी अनुवाद—गुरु और शुक्र दोनों का उदय हो, शुद्ध लग्न हो एवं उत्तम बार तथा चन्द्रमा और नक्षत्र अनुकूल हों, तो ऐसे समय में साधना आरम्भ करने से मन्त्र की सिद्धि अवश्य होती है।

गायत्री मन्त्र साधना हेतु "दीप स्थान" का निर्माण

[श्लोक]

कुर्मस्यैव मुखं विद्धि दीप स्थानं सुसिद्धिदम्।
चतुरस्त्रं भुवं भित्वा कोष्टाणां नवकं लिखेत॥
पूर्व कोष्टादि विलिखेत् सप्तवर्गान्य-नुक्रमात्।
लक्षविसे मध्य कोष्टे स्वरान् युग्म क्रमाल्लिखेत्॥
दिक्षु पूर्वादितो यत्र नामस्याधक्षरं भवेत्।
मुखं तदाऽस्य जानीयाद्ध स्तावुभयतः स्थितौ॥
पृष्टं कुक्षी उभे पादौ द्वौ शीर्ष्णं पुच्छमीरितम्।
कुर्म चक्र मिदं प्रोक्तं मन्त्राणां सिद्धि-साधनम्॥

[शारदा ग्रन्थ से]

हिन्दी अनुवाद—दीप का स्थान कूर्म [कछुआ] का मुख है, जिसमें मन्त्र की सिद्धि होती है। समतल भूमि बनाकर, उसमें नौ कोण बनावे। पूर्व कोष्ट से आरम्भ कर क्रमशः कवर्ग, चवर्ग, टवर्ग, तवर्ग, पवर्ग और यवर्ग लिखे। मध्य कोष्ट में दो-दो स्वर [अ-आ एक कोष्ट] के क्रम से लिखे, फिर पूर्व के क्रम से जहाँ नाम का आदि अक्षर आता हो वहीं कूर्म का मुख समझना चाहिए और उसके दोनों बगल में कूर्म का हाथ समझे। इसी प्रकार पीठ, कुक्षि, दो पैर, सिर तथा पूछ की कल्पना करनी चाहिए। इसे ही "कूर्म चक्र" कहते हैं, जो सम्पूर्ण मन्त्रों का सिद्धि का साधन है।

इसका "अपवाद" है—

कुरुक्षेत्र, प्रयाग, गंगा सागर, संगम, उज्जैन तथा काशी में कूर्म स्थान के बिना भी साधना सम्पन्न किया जा सकता है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

मन्त्र जप हेतु माला शुद्धि विधि

सर्वप्रथम माला को ''पंचगव्य'' से, फिर जल से–

''ॐ सधोजातं प्रपधामि सधोजाताय वै नमो नमः''

इस मन्त्र से ''प्रक्षालन'' करना चाहिए। तत्पश्चात् चन्दन निम्न मन्त्र से माला में लगाना चाहिए–

''ॐ वामदेवाय नमो ज्येष्ठाय नमः श्रेष्ठाय नमो रुद्राय नमः''

निम्न मन्त्र से धूप दिखावें–

''ॐ अघोरेभ्योऽथ धीरेभ्यो घोर-घोरतरेभ्यः सर्व सर्वेभ्यो नमस्ते स्तु रुद्रेभ्यः।

तत्पश्चात् निम्न मन्त्र से माला को सौ बार अभिमन्त्रित करें–

''ॐ ईशानः सर्व विधा-नामीश्वरः सर्व भूतानां। ब्रह्माधिपतिर्ब्रह्मणो ऽधिपति ब्रह्मा शिवो में अस्तु सदा शिवोम्॥

फिर जिस मन्त्र का जप करना हो उस मन्त्र से माला का पंचोपचार पूजन करना चाहिए। [शारदा ग्रन्थ से]

गायत्री मन्त्र जपने की विधि

[श्लोक]

ॐ कारं पूर्व मुच्चार्य भूर्भुवः स्वस्तथैव च।
गायत्रीं प्रणवान्तां च मध्ये त्रिप्रणवा तथा॥
एवं नित्यं जपं कुर्याद् ब्राह्मणो विप्र पुंगवः।
भिन्न पादा तु गायत्री ब्रह्म हत्या प्रणाशिनी॥
अभिन्न पादा गायत्री ब्रह्म हत्यां प्रयच्छति।
अच्छिन्न पादा गायत्री जपं कुर्वन्ति ये द्विजाः।
अधोमुखाश्च तिष्ठन्ति कल्पकोटि शतानि च॥
धर्मशास्त्र पुराणेषु इतिहासेषु – सुव्रत।
पञ्चप्रवणव संयुक्तां जपेदित्य- नुशासनम्॥
जप सङ्ख्याष्ट भागान्ते पादो जाप्य स्तुरीचकः।
स द्विज परमो ज्ञेयः परं सायुज्य माप्रुयात्॥
अन्यथा प्रज चेधस्तु स जपो विफलो भवेत्।
प्रारम्भ दिन मारभ्य समाप्ति - दिवसावधि॥
न न्यूनं नाति रिक्तं च जपं कुर्याद् दिने दिने।
नैरन्तर्चेन कुवीर्त स्व-स्ववृत्तिं नलिम्पचेत्॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

प्रातशरभ्य विधि बज्ज येन मध्य दिनावधि।
मनः संहरणं शौचं यानं मन्त्रार्थ चिन्तनम्॥

हिन्दी अनुवाद–प्रथम "ॐ कार" का उच्चारण करे, पश्चात्–"भूर्भुवः स्वः" का उच्चारण करे, फिर "ॐकार" का उच्चारण कर गायत्री पढ़ना चाहिए–

[ॐ भूर्भुवः स्वः ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं ॐ भर्गो देवस्य धीमहि ॐ धियो योनः प्रचोदयात् ॐ]

इस प्रकार गायत्री के अन्त में प्रणव (ॐ) तथा गायत्री के मध्य में तीन प्रणव का उच्चारण करता हुआ जप करे। इस विधि के अनुसार श्रेष्ठ ब्राह्मण नित्य गायत्री का जप करे। यदि गायत्री का पाद [तीन पाद गायत्री को, प्रथम वरेण्यं, दूसरा धीमहि, तत्सवितुः प्रचोदयात्] भिन्न कर जप किया जाता है, तो वह ब्रह्म हत्या को विनाश करने वाली होती है। परन्तु गायत्री के पाद अलग न कर, एक पाद में ही पढ़ते हैं, तो वे करोड़ों वर्षों तक नरक में निवास करते हैं। धर्मशास्त्र, पुराण तथा इतिहास में कहा गया है कि गायत्री को उपर्युक्त पंच प्रणव से युक्त कर जप करना चाहिए। जब जप पूरा हो जाये तो चौथा पाद–"धियो योनः प्रचोदयात्"–इसका यथा शक्ति जप करना चाहिए। इस प्रकार जप करने वाला ब्राह्मण श्रेष्ठ सायुज्य मुक्ति के फल को प्राप्त करता है। इससे भिन्न जो लोग जप करते हैं, उनका जप निष्फल हो जाता है। साधना के प्रथम दिन से आरम्भ कर अन्तिम दिन तक जप की संख्या में घटती–बढ़ती नहीं होनी चाहिए अर्थात् प्रारम्भ दिन में जितनी संख्या हो उतनी ही संख्या जप के अन्तिम दिन तक होनी चाहिए और नित्य विधि का भी लोप न करे। प्रातःकाल से आरम्भ कर मध्यान्ह पर्यन्त गायत्री जप करने की विधि है। मन को अपने वश में रखना चाहिए।

गायत्री मन्त्र की सिद्धि हेतु जप संख्या

गायत्री-छन्दो-मंत्रस्य यथा संख्याक्ष राणि च।
तावल्ल क्षाणि कर्त्तव्यं पुरश्चरणकं तथा॥

[विश्वामित्र कल्प से]

हिन्दी अनुवाद–गायत्री छन्द-रूप मन्त्र के अक्षरों की जितनी संख्या है–अर्थात् चौबीस अक्षर–उतने ही लाख अर्थात् चौबीस लाख गायत्री का जप करने से साधना सम्पन्न होती है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

गायत्री शाप-विमोचन विधि

"गायत्री पटलम् ग्रन्थ" के अनुसार "गायत्री मन्त्र" को ब्रह्मा, वसिष्ठ तथा विश्वामित्र ने शापित किया है। अतः "शाप-निवृत्ति" के लिए-शाप-विमोचन करना चाहिए, तभी गायत्री मन्त्र की साधना करनी चाहिए।

ब्रह्म-शाप विमोचन विधि–दाहिने हाथ में जल लेकर नीचे लिखित "विनियोग मन्त्र" पढ़कर जल भूमि पर छोड़ें–

विनियोग मन्त्र–

अस्य श्री ब्रह्म विमोचन मन्त्रस्य निग्रहाऽनुग्रह कर्ता प्रजापति ऋृषिः, कामदुधा गायत्री-छन्दः ॐ ब्रह्म शाप विमोचन-गायत्री शक्ति-देवता, ब्रह्म शाप विमोचनार्थे जपे विनियोगः।

अब कर जोड़ कर "ब्रह्म शाप विमोचन मन्त्र" पढ़ें–

ब्रह्म शाप विमोचन मन्त्र–

सवितुः ब्रह्मो मेत्यु पासनात् तत्तद् ब्रह्मविदो विदुस्तां प्रयतन्ति धीराः। सुमनसा वाचा ममाऽग्रतः। ॐ देवी गायत्रि! त्वं ब्रह्म शापाद् विमुक्ता भव।

विश्वामित्र शाप विनियोग मन्त्र–दाहिने हाथ में जल लेकर मन्त्र पढ़ें, मन्त्र समाप्त होते ही जल भूमि पर छोड़ दें–

ॐ विश्वामित्र - शाप - विमोचन - मन्त्रस्य नूतन सृष्टिकर्ता-विश्वामित्र ऋृषिः, वाग्दोहा गायत्री छन्दः, भुक्ति- मुक्ति प्रदा विश्वामित्रा नुग्र हीता गायत्री शक्तिः, सविता देवता, विश्वामित्र शाप विमोचनार्थे जपे विनियोगः।

अब कर जोड़ कर विश्वामित्र शाप विमोचन मन्त्र पढ़ें–

विश्वामित्र शाप विमोचन मन्त्र–

तत्वानि चाङ्गेववग्नि-चितो धियांसः त्रिग्र्भा यदुद्भवां देवाश्चो-चिरे विश्व-सृष्टिं तां कल्याणी-मिष्ट करीं प्रबद्ये यन्मुखान्निः सृतो वेद-गर्भः। ॐ गायत्रि! त्वं विश्वामित्र शापाद् विमुक्ता भव।

वसिष्ठ शाप विमोचन विधि–

[विनियोग]

ॐ वसिष्ठ शाप विमोचन मन्त्रस्य वसिष्ठ ऋृषिः विश्वोद्भवो गायत्री छन्दः, वसिष्ठा-नुग्रहीता गायत्री शक्ति-र्देवता, वशिष्ठ शाप विमोचनार्थे जपे विनियोगः।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

वसिष्ठ शाप विमोचन मन्त्र :-

तत्वानि चाङ्गेष्व-ग्नि-चितो धियांसः ध्यायन्ति विष्णो-रायुधानि बिभ्रत्। जनानता सोपरमं च शाश्वत्। गायत्री मासाच्छु रनुत्तमम च धाम। ॐ गायत्री! त्वं वसिष्ठ-शापाद् विमुक्ता भव।

अब गायत्री माता की प्रार्थना करें-

गायत्री प्रार्थना मन्त्र-

सोऽहमर्कमचं ज्योतिर रकः ज्योति रहं शिवः।
आत्म ज्योति रहं शुक्लं ज्योति रसोऽहमोम्॥
अहो विष्णु महेशेशे! दिव्ये सिद्धि सरस्वति।
अजरे अमरे चैव दिव्योने! नमोस्तुते॥

अब गायत्री माता का ध्यान करें-

[गायत्री ध्यान मन्त्र]

यद्येवा ऽसुर पूजितं परतरं सामर्थ्य तारात्मकं।
पुन्नागाऽम्बुज पुष्प नाग वफुलैः केशेः शुकै रीर्चतम्॥
नित्यं ध्यान समस्त दीप्ति करणं कालाग्नि रूहीपनं।
तत्संहार करं नमामि सततं पाताल-संस्थंमुखम्॥

नोट :-उपरोक्त विधि से साधक साधना आरम्भ वाले दिन गायत्री मन्त्र का ''शाप विमोचन'' कर लें, फिर गायत्री मन्त्र का जप आरम्भ करें, तभी मन्त्र साधना में सफलता मिलेगी। [गायत्री पटलम से]

गायत्री उपासना के भेद

''गायत्री उपासना'' के मुख्यतः तीन भेद हैं-

1. जपात्मक उपासना-''गायत्री मन्त्र'' जप के द्वारा की गई उपासना को ''जपात्मक उपासना'' कहते हैं।

2. पाठात्मक-गायत्री चालीसा, स्तोत्र, कवच आदि पाठ के द्वारा की गई उपासना को ''पाठात्मक उपासना'' कहते हैं।

3. हवनात्मक उपासना-गायत्री मन्त्र के द्वारा ''हवन'' करने की विधि को ''हवनात्मक उपासना'' कहते हैं।

इनमें से गायत्री की ''जमात्मक उपासना'' श्रेष्ठ बताई गयी है।

गायत्री त्रिकाल संध्या विधि

शास्त्रों में गायत्री मन्त्र का ''त्रिकाल संध्या'' करने का विधान है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

गायत्री की साधना-संध्या वंदन के बाद की जाती है। गायत्री का सूर्य से सीधा सम्बन्ध है, अतः जिधर सूर्य हो उधर ही मुख कर साधना करनी चाहिए। प्रातः पूर्व की ओर, सायं पश्चिम की ओर और दोपहर को उत्तर की ओर मुख करके उपासना करनी चाहिए।

मन्त्र जप करने वक्त सावधानियाँ

गायत्री का जप करते समय इन बातों का विशेष ध्यान रखना चाहिए-

(1) गायत्री के एक-एक पाद का अलग-अलग उच्चारण मन ही मन करना चाहिए। पादच्छेद करके उच्चारण की गई गायत्री "ब्रह्म हत्या" को भी दूर करती है।

(2) गायत्री का जप मन ही मन करना चाहिए। जिह्वा, होंठ, सिर व ग्रीवा हिलाकर, ऊँची आवज़ में जप नहीं करना चाहिए।

(3) माला को वस्त्र से ढककर या "गोमुखी" में माला रखकर जप करना चाहिए।

(4) जप के समय हाँफने से हानि, ऊँघने से दुख, बोलने से रोग, माला हाथ से गिरना अशुभ एवं माला का सूत [धागा] टूटने से मृत्युदायक दु:ख उत्पन्न होता है। माला फेरते सयम "सुमेरू" का उल्लंघन न करें। माला फेरते समय सुमेरू के पास से फिर माला को घुमा देना चाहिए।

(5) जप के समय किसी से "वार्तालाप" न करें तथा आलस्य, जंभाई, छींक, थूकना तथा अपवित्र अंगों का स्पर्श करना वर्जित है।

गायत्री माँ द्वारा वर्णित गायत्री जप की महिमा

पाठको! जगत-जननी भगवती गायत्री देवी ने अपने जप का महत्त्व इस प्रकार बताया है- [पद्म पुराण, सृष्टि खण्ड से]

[श्लोक]

मदीयेन तु जाप्येन जन्म-भिस्तु त्रिभिः कृतम्।
ब्रह्म-हत्या-समं पापं तत्क्षणा देव नश्यति॥
दशभिर्जन्म भिर्जातं शतेन च पुराकृतम्।
त्रियुगेन सहस्त्रेण गायत्री हन्ति किल्विषम्॥
एवं ज्ञात्वा सदा पूता जाप्ये तु मम्न वै कृते।
भविष्यध्यं न सन्देहो नात्र कारया विचारणा॥
प्रणवेन त्रिमात्रेण सार्द्ध जपत्वा विशेषतः।
पूताः सर्वे न सन्देहो जपत्वा मां शिरसा सह॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अष्टक्षरा स्थिता चाहं जगद् व्याप्तं मयात्विदम्।
माताऽहं सर्व वेदानां पदैः सर्वे रलङ्कृता॥
जपत्वा मां भक्तितः सिद्धिं यास्यन्ति द्विज सत्तमा।
प्रधान्यं मम जाण्येन सर्वेषां वो भविष्यति॥
गायत्री मात्रा सारोऽपि वरं विप्रः सुसंयतः।
गायन्त्रि तश्चतुर्वेदि सर्वाशी सर्व-बिक्रयी॥

हिन्दी अनुवाद–मेरे जप करने मात्र से तीन जन्मों के किये गये "ब्रह्म हत्या" के सदृश पाप तत्काल नष्ट हो जाते हैं। गायत्री मन्त्र दस बार जपने से वर्तमान जन्म के, सौ बार जपने से पिछले जन्म के और एक हज़ार बार जपने से तीनों युगों के पाप नष्ट हो जाते हैं। ऐसा जानकर मेरे जप करने मात्र से ही आप सभी सदा पवित्र हो जायेंगे, इसमें सन्देह की तनिक भी गुंजाइश नहीं है। "तीन प्रणव" के साथ जप कर तथा विशेष कर "गायत्री शीर्षक" के साथ जप करके भी पवित्र होते हैं, इसमें सन्देह की कोई बात नहीं। मेरे प्रत्येक पाद में आठ-आठ अक्षर हैं। मुझमें समस्त संसार व्याप्त है। मैं समस्त वेदों की जननी हूँ और समस्त पदों से विभूषित हूँ। श्रेष्ठ द्विजगण [साधक] भक्तिपूर्वक मेरे जप करने से सिद्धि को प्राप्त करते हैं। मेरे जप मात्र से आप सभी को प्रधानता मिलेगी। केवल गायत्री मन्त्र से ही सन्तुष्ट रहने वाला जितेन्द्रिय ब्राह्मण श्रेष्ठ है, किन्तु चारों वेदों को जानने वाला भी जो असंयमी, सर्वभक्षी और सर्वविक्रयी है, वह श्रेष्ठ नहीं है।

विभिन्न धर्म-ग्रन्थों में वर्णित गायत्री जप का लाभ

गायत्री मन्त्र का जप करके मनुष्य अनेक प्रकार की सिद्धियाँ प्राप्त कर सकता है। श्रद्धा और विश्वास के साथ मन्त्र जपने से उनमें अलौकिक शक्तियाँ आ जाती हैं।

तप की अग्नि में तपने से साधक के विचार, कुप्रवृत्तियाँ नष्ट होने लगती हैं, विचार पवित्र और स्वच्छ होते हैं, असुरता देवत्व में परिणत होने लगती है। अविवेक, अज्ञान दूर होकर विवेक और ज्ञान का उदय होता है, आत्म निरीक्षण की क्षमता प्राप्त होती है। चरित्र में असाधारण परिवर्तन आता है। साधक को मानसिक शान्ति व आनन्द की अनुभूति होती है। ऐसा लगता है कि अमृत-रस लगातार अन्तःकरण में टपक रहा है। वहां आनन्द की हिलोरें हैं।

अशान्ति उत्पन्न करने वाली परिस्थितियाँ आती हैं, पर उनका कुछ

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

प्रभाव नहीं पड़ता है। सांसारिक दुःख, संकट व विरोध आते हैं, पर उसे अपने पथ से विचलित नहीं कर सकता। हर परिस्थिति में वह मस्त रहता है, भौतिक अभाव उसे निराश नहीं करते, संकट में भी हंसने की कला आ जाती है। वह सभी को अपना प्रिय मानता है, किसी से ईर्ष्या, द्वेष व घृणा नहीं करता। उसके जीवन का लक्ष्य विश्व-मानव का उत्थान बन जाता है। सारा विश्व ही उनका परिवार बन जाता है, सभी उसे एक समान लगते हैं। सभी में ईश्वर की अनुभूति करता है।

साधक के मन में काम वासनाओं के तांडव शान्त हो जाते हैं। स्त्री जाति का वह देवी तुल्य सम्मान करता है। परायी बहू-बेटियों को वह कामुक दृष्टि से नहीं देखता।

साधक को आर्थिक समस्याओं का सामना नहीं करना पड़ता, उनका समाधान अपने-आप होता रहता है। प्रतिकूल परिस्थितियाँ भी अनुकूल बनती जाती हैं, नौकरी हो या व्यापार, उसमें सदैव उत्थान के लक्षण दिखाई देते रहते हैं।

"गायत्री जप की महिमा" का वर्णन अनेक धर्म ग्रन्थों में इस प्रकार है-

[श्लोक]

राक्षसाश्च पिशाचाश्च महासर्पाश्च भीषणाः।
जपितान्तोष-सर्पन्ति दुरादेव प्रचान्ति ते॥

[हारित स्मृति 4/46]

हिन्दी अनुवाद-"गायत्री जप से भयंकर राक्षस, पिशाच और सर्प-ये साधक के पास नहीं आते, वे दूर भाग जाते हैं।"

[श्लोक]

स्तुता मचा वरदा वेदमात प्रचोदयन्तां पावमानी द्विजानाम।
आयुः प्राणं प्रजां पशुं कीर्ति द्रविणं ब्रह्मवर्चसं
महांदत्वा ब्रजत ब्रह्म लोकम्॥ [अथर्ववेद 19/71/1]

हिन्दी अनुवाद-वेदों की माता गायत्री अपने उपासक को दीर्घायु, स्वस्थता, सन्तति, यश, कीर्ति, गौ आदि पशुधन, द्रव्य धन और ब्रह्मतेज प्रदान करती हैं तथा अन्त में ब्रह्मलोक में पहुँचाती है।

[श्लोक]

यं यं पश्यति चक्षुर्भ्यां यं यं स्पृशति पाणिना।
यं यमाभासते किञ्चित् तत्सर्व पूतमेव च॥

[बृहत्पाराशर स्मृति 2/97]

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

हिन्दी अनुवाद—गायत्री जप करने वाला पुरुष जिस को अपने नेत्रों से देखता है, हाथों से स्पर्श करता है और वाणी से जो कुछ कहता है, वह सब पवित्र हो जाता है।

[श्लोक]

गायत्र्या अक्ष मालाया सायं प्रातश्च यो जपेत्।
चतुर्णां खलु वेदानां समग्रं लभते फलम्॥

[अथर्ववेद परिशिष्ट संन्ध्या सूत्र-4-5]

हिन्दी अनुवाद—जो प्रातःकाल व सायंकाल रुद्राक्ष की माला पर सौ बार गायत्री का जप करता है, वह निश्चय ही चारों वेदों के अध्ययन का समस्त फल प्राप्त करता है।

[श्लोक]

गायत्री परमो मन्त्रस्तं जपत्वा भुक्ति-भुक्तमाक।
ऐहिका मुष्मिकं सर्व गायत्री जपतो भवेत्॥

[अग्नि पुराण 248/2]

हिन्दी अनुवाद—गायत्री परम मन्त्र है, इसके जप से भोग और मोक्ष—ये दोनों प्राप्त होते हैं। गायत्री जप से इहलोक और परलोक दोनों सुखद बन जाते हैं।

[श्लोक]

सर्व-पापानि नश्यन्ति गायत्री जपतो नृप।

[भविष्य पुराण से]

हिन्दी अनुवाद—हे राजन्! गायत्री के जप से समस्त पाप नष्ट हो जाते हैं।

[श्लोक]

योऽधीते ऽहन्य हन्ये तां स्त्रीणि तर्षाण्य-तन्द्रितः।
स ब्रह्म परम भ्येति वायुभूतः खमूर्तिमान्॥

[अग्नि पुराण 2/5/4]

हिन्दी अनुवाद—जो पुरुष आलस्य त्याग कर तीन वर्ष तक गायत्री जप करता है, वह पवन रूप और आकाश रूप होकर परब्रह्म को प्राप्त करता है।

[श्लोक]

सकृज्ज पश्च गायत्र्याः पापं दिन भवं हरेत्।
दशबारं जपैनेव नश्यते पापं दिवा-निशम्॥
शतबारं जपश्चैव पापं मासार्जितं - हरेत्।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सहस्त्रधा जपश्चैव कल्मषं वत्स रार्जितम्॥
लक्षो जन्मकृतं पापं दशलक्षोऽन्य जन्मजम्।
सर्व जन्म कृतं पापं शतलक्षाद् विनश्यति॥
करोति भुक्तं विप्राणां जपो दशगुण स्ततः॥

[देवी भागवत 9/26/14-17]

हिन्दी अनुवाद–गायत्री का एक बार जप करने से दिन में किए हुए समस्त पाप नष्ट हो जाते हैं। दस बार जप करने से दिन और रात को समस्त पाप नष्ट हो जाते हैं। सौ बार जप करने से महीने भर के समस्त पाप नष्ट हो जाते हैं। एक हज़ार बार जप करने से साल भर के समस्त पाप नष्ट हो जाते हैं। एक लाख बार जप करने से इस जन्म के समस्त पाप नष्ट हो जाते हैं और दस लाख जप करने से दूसरे जन्म के समस्त पाप नष्ट हो जाते हैं और एक करोड़ जप करने से समस्त जन्मों के किए हुए पाप नष्ट हो जाते हैं और दस करोड़ जप करने से ''मुक्ति'' पद प्राप्त करता है।

समस्त भौतिक रोग विनाशक गायत्री जप विधि

समस्त भौतिक रोग विनाशक गायत्री जप विधि का यह वर्णन–''देवी भागवत–24-12-21'' में वर्णित है।

[श्लोक]

निखने मुच्यते तेभ्यो लिखने मध्यतोऽपि च।
मण्डले शूल-मालिख्य पूर्वोक्ते च क्रमेऽपि वा॥
अभिमन्त्रल सहस्त्रं तन्निखनेत्सर्व शान्तये।
सौवर्णं राजतं वापि कुम्भं ताम्रमयं च वा॥
मृणमयं वा नवं दित्यं सूत्रवेष्टितम व्रणम।
स्थण्डिलै सैकते रथाण्य पूरयेन्मन्त्र विज्जलैः॥
दिग्भ्य आहृत्य तीर्थानि चतसृभ्यो द्विजोत्तमैः।
एला-चन्दना-कर्पूर-जाती-पाठक-मल्लिकाः॥
बिल्वपत्रं तथा क्रान्तां देवी व्रीहीया वांस्ति लान्।
सर्षपान क्षीर वृक्षाणां प्रवानि च नः क्षिपेत्॥
सर्वाण्या भिवि धायै वं कुशकूर्च समान्वितम्।
स्नातः समाहितो विप्रः सहस्त्रं मन्त्रयेद् बुधः॥
दिक्षु सौरान धीयीरन मन्त्रान् विप्रास्त्रायी विदः।
प्रोक्षयेत् पायये देनं नीरं तेनाभिषिञ्च्येत्॥
भूत-रोगाभि चारेभ्यः स निर्मुक्तः सुखी भवेत्।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अभिषेकेण मुच्चेत मृत्या रास्य गता नरः।
अवश्यं कारयेद् विद्वानं राजा दीर्घजि जीविषुः॥
गावो देशास्च ऋत्विभ्य अभिषेक शतं मुने।
दक्षिणा येन वा तुष्टिर्य थाक्तया ऽथवा भवेत्॥

हिन्दी अनुवाद–भूमि पर चतुष्कोण लिखकर उसके मध्य में गायत्री मन्त्र पढ़कर त्रिशूल धंसा दे। इससे पिशाचों के आक्रमण से पुरुष बच सकता है, अथवा सब प्रकार की शान्ति के लिए गायत्री मन्त्र से एक हज़ार बार अभिमन्त्रित कर त्रिशूल गाड़ें। वहीं सुवर्ण, चांदी, तांबा अथवा मिट्टी का कलश स्थापित करें। उस कलश में छिद्र नहीं होना चाहिए। उसे वस्त्र से वेष्टित कर दें। बालू से बनी हुई बेदी पर उसे स्थापित करें। कलश स्थापना वैदिक विधि से करें और कुशल मन्त्रज्ञ से करावें। कलश में जल भर दें। फिर पुरोहित चार दिशाओं के तीर्थों का उसमें आवाहन करे। ईलायची, चन्दन, कर्पूर, जायफल, गुलाब, मालती, बिल्वपत्र, विष्णु-कांता, सहदेवी, धान, यव, तिल, सरसों तथा पीपल, पाकर और वट के कोमल पल्लव तथा गूलर के पल्लव कलश में छोड़ दें। उसमे सत्ताईस कुशों से निर्मित एक कूचे [कूंची] रख दें। तब सभी विधि सम्पन्न हो जाने पर एक हज़ार गायत्री मन्त्र से उस कलश को अभिमन्त्रित करें। वेदज्ञ ब्राह्मण चारों दिशाओं में बैठकर सूर्य आदि देवता का, मन्त्रों का पाठ करें। साथ ही इस अभिमन्त्रित जल से [कलश के जल से] प्रोक्षण, पान और अभिषेक करें।

इस प्रकार की विधि सम्पन्न करने वाला पुरुष भौतिक रोगों से मुक्त होकर परम सुखी हो सकता है। इस अभिषेक के प्रभाव से मृत्यु के मुख में गया हुआ मनुष्य भी मुक्त हो जाता है। विद्वान पुरुष दीर्घ समय तक जीवन धारण करने की इच्छा वाले राजा को ऐसा अनुष्ठान करने की अवश्य प्रेरणा दे। पूजन समाप्त होने पर ब्राह्मणों को गौ दान करें। दक्षिणा उतनी देनी चाहिए जितने में पुरोहित सन्तुष्ट हो सकें अथवा जिसकी जैसी शक्ति हो, तदनुसार दक्षिणा दी जा सकती है।

भूत-प्रेत बाधा विनाशक गायत्री जप विधि

[श्लोक]

भूत रोग विषाद्रिभ्यः स्पृशञ्जप्त्वा विमोचयेत।
भूतादिभ्यो विमुच्चयेत जलं पित्वाऽभिमंत्रितम्॥
अभिमन्त्रस्य शतं भसम्मन्य शेद भूतादि शान्तये।
शिरसा धारयेद् भस्य मंत्रयित्वा तदित्यृचा॥

[देवी भागवत से]

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

हिन्दी अनुवाद—गायत्री मन्त्र से अभिमन्त्रित जल का पान करके भूत-प्रेत आदि के उपद्रवों से मनुष्य मुक्त हो जाते हैं। भूतादि के उपद्रव शान्त करने के लिए गायत्री मन्त्र का सौ बार उच्चारण करके अभिमन्त्रित किए हुए भस्म को सिर पर धारण करे। ऐसा करने से पुरुष सम्पूर्ण ब्याधियों से मुक्त होकर सौ वर्षो तक सुख-पूर्वक जीवन धारण कर सकता है।

आयु-आरोग्य, लक्ष्मी, पुत्र, स्त्री, विद्या प्राप्ति हेतु गायत्री मन्त्र जप विधि

[श्लोक]

अथ चारुविधिर्मासं सहस्त्रं प्रत्यहं जयेत्।
आयुष्कामः शुचौ देशे प्रांञ्‌जु-यादायुरू-तमम्॥
आयु-रारोग्य कामस्तु जपेन्मास द्वयं द्विजः।
भवेदा युष्य मारोग्यं श्रियै मासत्रयं जपेत्।
आयुः श्रीपुत्र-दाराधाश्च-तुर्भिश्च चशो जपात्॥
पुत्रदाराऽयु रारोग्य श्रियं विद्या च पञ्चभिः।
एवमे वोतरान् कामान् मासै रेवौत्तैर्वजेत्॥

[देवी भागवत 24-64-67]

हिन्दी अनुवाद—आयु की कामना वाला द्विज किसी पवित्र स्थान पर बैठकर उत्तम विधि के साथ एक मास तक प्रतिदिन एक हज़ार गायत्री मन्त्र का जप करे। इससे उत्तम आयु की प्राप्ति होती है। यदि आयु और आरोग्य दोनों की कामना हो तो साधक दो मास तक गायत्री मन्त्र का एक हज़ार गायत्री मन्त्र का जप रोज़ करे। आयु, आरोग्यता और लक्ष्मी चाहने वाले तीन महीने तक गायत्री मन्त्र का नित्य एक हज़ार मन्त्र जप करे। आयु, लक्ष्मी, पुत्र, स्त्री, यश, विद्या प्राप्त करने हेतु पाँच मास तक नित्य एक हज़ार गायत्री मन्त्र का जप करना चाहिए।

विविध स्वरूपा गायत्री माता के विविध ध्यान मन्त्र

पाठको! मातेश्वरी गायत्री के ध्यान के अनेक मन्त्र हैं, उनमें से आप किसी भी मन्त्र द्वारा ध्यान कर सकते हैं। वैसे अधिकांश अराधक और उपासक 7 पंक्तियों के इस मन्त्र द्वारा ही मातेश्वरी गायत्री का ध्यान अधिक करते हैं। गायत्री माँ की चालीसा पाठ, स्तोत्र, कवच, मन्त्र जप आदि आरम्भ करने से पूर्व "ध्यान मन्त्र" अवश्य करना चाहिए।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ब्रह्म-स्वरूपा गायत्री ध्यान मन्त्र

[श्लोक]

पञ्च वक्त्रां दश भुजां सूर्य कोटि सम-प्रभाम।
सावित्रीं ब्रह्म वरदां चन्द्र कोटि सुशीतलाम्॥
त्रिनेत्रां सितवक्त्रां च मुक्ता-हार विराजिताम्।
वराऽभयां कुश-कशा हेमपात्राक्ष - मालिकाम्॥
शंख-चक्राब्ज युगलं कराभ्यां दधतीं पराम्।
सित-पंकज-संस्था च हंसारूढ़ां सुखस्मिताम्॥
ध्यात्वैवं मनसाक्भोजे गायत्री कवचं जपेत्।

[प्रात:कालीन ध्यान]

हिन्दी अनुवाद—जो गायत्री देवी पाँच मुख तथा दश भुजा वाली हैं, जिनकी कान्ति करोड़ों सूर्य के समान है, तथा करोड़ों चन्द्रमा के समान जो शीतल हैं, जो ब्रह्मा आदि देवताओं को भी वर देने वाली हैं, जिनके तीन नेत्र हैं, जो मोतियों की माला से विभूषित हैं, जिनके दशों हाथों में वर, अभय, अंकुश, कशा, स्वर्णपात्र, अक्षमाला, शंख, चक्र तथा ध्वज विराजमान है, जो ''परब्रह्म स्वरूपिणी'' हैं, जो श्वेत कमल के आसन पर विराज रही हैं, शुभ्र [सफेद]हंश, जिनका वाहन है, प्रसन्नता से जो मुस्कुरा रही हैं, उन भगवती गायत्री माँ को मेरा बारम्बार नमस्कार है।

ब्रह्म स्वरूपिणी गायत्री माँ का एक और ध्यान मन्त्र इस प्रकार है—

[श्लोक]

वर्णास्त्रां कुण्डिका हस्तां शुद्ध-निर्मल ज्योतिषीम्।
सर्व-तत्व मर्चीं वन्दे गायत्रीं वेद-मातरम्॥
मुक्ता-विद्रुम-हेम-नील धवलच्छा यैर्मुखे स्त्रीक्षणे-
र्युक्ता मिन्दु-निबद्द-रत्न मुकुटां तत्वार्थ वर्णात्मिकाम्।
गायत्रीं वरदा भया-ङ्कुश कशां शूलं कपालं गुणं शंखं-
चक्र-मथार विन्द युगलं हस्तैव-हन्तीं भजे॥

हिन्दी अनुवाद—सम्पूर्ण वर्णों के स्वरूप वाली, कुण्डिका को धारण करने वाली, शुद्ध निर्मल ज्योति-स्वरूप वाली, सम्पूर्ण तत्त्वों से विराजमान, वेदमाता गायत्री की मैं वन्दना करता हूँ। मोती, मूंगा, स्वर्ण, नील तथा स्वच्छ छाया वाले मुख से जो सुशोभित हैं तथा स्त्रियोचित सम्पूर्ण मंगलों से जो युक्त हैं, रत्नजड़ित चन्द्रकला से जो सुशोभित हैं, जो वर्ण स्वरूप हैं तथा ब्रह्म रूपिणी हैं। जिनके हाथों में वर, अभय, अंकुश, कशा, शूल, कपाल, धनुष, शंख, चक्र तथा कमल का जोड़ा सुशोभित हो रहा है, ऐसी गायत्री देवी का मैं ध्यान करता हूँ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

विष्णु स्वरूपा गायत्री माँ का ध्यान

[श्लोक]

ॐ मध्याह्ने विष्णु रूपां च ताक्ष्‍र्यस्थं पीतवाससाम्।
युवतीं च यजुर्वेदां सूर्यमण्डल संस्थिताम्॥

[मध्याह्न कालीन ध्यान]

हिन्दी अनुवाद–सूर्य मण्डल में स्थित युवा-वस्था वाली, पीत वस्त्र धारण किए हुए तथा शंख, चक्र, गदा व पद्म धारण किए, गरुड़ पर विराजमान विष्णु रूप यजुर्वेद स्वरूपा गायत्री का मैं ध्यान करता हूँ।

शिव स्वरूपा गायत्री माँ का ध्यान

[श्लोक]

ॐ सायाह्ने शिवरूपां च वृद्धां वृषभ-वाहिनीम्।
सूर्य मण्डल मध्य स्थां सामवेद समायुताम्॥

हिन्दी अनुवाद–शिव जी के वाहन नन्दी पर सवार, सूर्य मण्डल में स्थित वृद्धा, रूपा, त्रिशूल, डमरू, पाश तथा पात्र [खप्पर] लिए हुए सामवेद स्वरूपा गायत्री का मैं ध्यान करता हूँ।

सरस्वती स्वरूपिणी गायत्री का ध्यान

[श्लोक]

ॐ बालां विद्यां तु गायत्रीं लोहितां चतुरान-नाम्।
रक्ताम्बर द्वयोचेतां अक्षसूत्र करां तथा॥
कमण्डलु धरां देवीं हंसवाहन संस्थिताम्।
ब्रह्माणी ब्रह्म-देवत्यां ब्रह्मलोक निवासिनीम्॥
मंत्रेणा वाह्यो देवी मायप्रीं सूर्य-मण्डलात्।

हिन्दी अनुवाद–मैं उस परमशक्ति गायत्री का मन्त्रों द्वारा सूर्य मण्डल से आवाहन करता हूँ। वे बालावस्था में हैं और ज्ञान स्वरूपिणी हैं। वे रक्तवर्णा एवं चतुर्मुखी हैं। उनके उत्तरीय तथा मुख्य परिधान दोनों ही लाल रंग के हैं। उनके एक हाथ में रुद्राक्ष की माला है, दूसरे हाथ में कमण्डल है और हंश पर विराजित हैं। वे ''सरस्वती स्वरूपा'' हैं, ब्रह्मलोक में निवास करती हैं और ब्रह्मा जी उनके पतिदेव हैं।

नोट :–सामान्य रूप से अराधना-उपासना के समय मात्र ब्रह्मस्वरूपा गायत्री ध्यान ही करना चाहिए। अलग-अलग स्वरूप का ध्यान तांत्रिक साधनाओं में अथवा बड़े-बड़े अनुष्ठान में किया जाता है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

तीसरा भाग
उपासना पूर्व आवश्यक ज्ञान खण्ड

उपासना का अर्थ

माँ गायत्री के प्रिय भक्तो! "उपासना" शब्द का अर्थ है-"समीप बैठने का प्रयास।"

संधिविच्छेद के अनुसार-उप + आसन = उपासना। "उप" अर्थात् "समीपे", "आसन" अर्थात् "स्थिति"। अभिप्राय अपने आराध्य इष्ट देव से तल्लीनता का प्रयास, उनके चरणों के समीप बैठने का प्रयास।

"कुलार्णव तन्त्र" में उपासना की परिभाषा इस प्रकार है।

कर्मणा मनसा वाचा सर्वावस्थासु सर्वदा।
समीप सेवा विधिना उपस्तिरिति कथ्यते॥

भावार्थ-मन, वचन, कर्म सब प्रकार से समीप रहकर सेवा करने की विधि को उपासना कहते हैं।

श्रीमद्भागवत के अनुसार-

उपसितो यत्पुरुषः पुराणः।

भावार्थ-पूर्ण भक्ति से प्रसन्न कर लेना ही उपासना है।

इसी प्रकार एक अन्य उदाहरण और देखें-

उपासते योगरथेन धीराः।

इसमें भी उपासना का अर्थ "ध्यान" ही है।

गायत्री उपासना का अर्थ है-माता गायत्री के चरणों के समीप बैठने का प्रयास, उनको अपने हृदय में बिठाने का प्रयास। अपने आपको परमेश्वरी गायत्री में समर्पण कर देना ही गायत्री उपासना का चरम स्वरूप है।

इष्टदेव का ध्यान, प्रणाम, नमस्कार, पूजा, जप, होम, भक्ति, सामीप्य, सेवा, सुश्रुषा, परिचर्या, आराधना, चिन्तन-मनन आदि सभी क्रियाओं को हम उपासना कहते हैं और जिस अनुपम पवित्र पुस्तक में आद्याशक्ति स्वरूपा भगवती गायत्री को प्रसन्न करने हेतु पूजन, स्तुति, वन्दना, जप, यन्त्र-मन्त्र, वैदिक व लौकिक पूजन-विधि वर्णित की गई हो, उसे हम गायत्री उपासना शास्त्र कहते हैं।

पूजा परमेश्वरी की होती है। चूंकि वे महामाया आद्याशक्ति परमेश्वरी

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सर्वव्यापक, अखण्ड एवं निराकार हैं, तब उनके समीप कैसे बैठा जाये?

इस शंका का समाधान शास्त्रों ने यह कहकर किया है कि परमेश्वरी के प्रतीक प्रतिनिधि मूर्ति अथवा उनके स्वरूप को हृदय में बसाकर उपासना की जा सकती है। उपासना के प्रारम्भ में भूतशुद्धि, प्राण-प्रतिष्ठा, अन्तर्याग, बहिर्याग, न्यास, ध्यान आदि करने का तात्पर्य है–"अपने को उस आद्याशक्ति की उपासना के योग्य बनाना।" स्थूल-सूक्ष्म-कारण शरीर का लय कर दिव्य देह उत्पन्न करके ही उपासना की जा सकती है। पंचोपचार, षोड़शोपचार, राजोपचार पूजा भगवती की "मध्यमकोटि" की उपासना है। अपने मन को मन्त्रमय वृत्ति के द्वारा उपास्य के साथ अभेद बुद्धि करना "परा उपासना" है और समस्त संसार अनन्त कोटि ब्रह्माण्ड को उपास्य तत्त्व में लीन कर केवल तदरूप ही सर्वत्र देखना "सर्वोत्तम उपासना" है। वैसे जिस प्रकार गायत्रीत्व अनन्त है, उसी प्रकार उपासना भी अनन्त है।

उपासना क्यों करें ?

संसार के सारे धर्मग्रन्थ अध्यात्म का निष्कर्ष और उन्हें ढूँढने, पाने तथा मनन करने का उद्देश्य यह है कि–"मानव अपनी व्यवस्था के अतिरिक्त धन प्राप्त करने की ओर भटक रहा है।" परन्तु सम्पूर्ण सुख-साधन प्राप्त होने के पश्चात् भी जब उसे शान्ति नहीं मिलती है तो वह इसे देवी-देवताओं से प्राप्त करना चाहता है, किन्तु उनसे इसे प्राप्त करना तो आसान नहीं। फिर वह उन्हें प्रसन्न करने हेतु मार्ग ढूँढता है, तब उसे उनकी उपासना-पूजा-अर्चना की आवश्यकता पड़ती है और वही "उपासना रहस्य" इस छोटी-सी अनुपम पुस्तक में छिपी हुई है। इसे जानकर, कार्य रूप देकर, हृदय से नमन-मनन कर, आप संसार के उच्चतम शिखर पर पहुँच सकते हैं। यही है उपासना का रहस्य और यही है इसकी मनोवृत्ति।

उपासना की आवश्यकता

परमात्मा और जीव के बीच में जगत् और माया के आ जाने से जीवात्मा की बुद्धि से परमात्मा का सम्पर्क न्यून हो जाता है। इस परिवर्तन के कारण जीवात्मा की ज्ञानशक्ति एवं क्रियाशक्ति दोनों संकुचित हो गयी हैं तथा जीवात्मा परमात्मा से दूर चला गया है। यह जीवात्मा की अल्पज्ञता है। आवरण रूप जगत् की विविध रमणीय वस्तुएं जीवात्मा की इन्द्रियों को अपनी ओर आकर्षित करती हैं, जिसके कारण जीवात्मा की बुद्धि, विषय

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

प्रबल मन की अनुगामिनी हो जाती है और जीवात्मा क्लेशों का पात्र बन जाता है।.

उपासना से ज्ञान का विकास होता है। इस क्रिया से जीवात्मा तथा परमात्मा के मध्य में स्थित जगत व माया तिरोहित हो जाती है और ज्ञान शक्ति एवं क्रिया शक्ति विकसित होती है। उपासना से भगवत् सान्निध्य की प्राप्ति होती है। उपासना के द्वारा जीवात्मा अन्तःकरण की शुद्धि और अपनी रक्षा का सम्पूर्ण भार परमात्मा पर डाल देता है जिसके कारण वह परमात्मा का कृपापात्र बन जाता है। उपासना से उपासक के चित को स्थिरता, सांसारिक विषयों से विमुखता और उसके फलस्वरूप परमात्मा का सामीप्य एवं मोक्ष की प्राप्ति होती है। इसी लिये उपासना करना मानव प्राणी के लिए परम आवश्यक कहा गया है।

उपासक के लिए आवश्यक कर्त्तव्य

किसी भी आराध्य की उपासना अथवा पूजा करने से पूर्व उपासक के लिए आवश्यक है कि वह प्रातःकाल ब्रह्म मुहूर्त में उठकर, शौच-स्नान आदि नित्य क्रियाओं से निवृत्त होकर, स्वच्छ व पवित्र वस्त्र धारण करें। तदुपरान्त ध्यान पूजादि उपासना की क्रियाओं में प्रवृत्त हो।

देव पूजा-उपासना काल में साधक को तन और मन की पवित्रता का ध्यान रखना आवश्यक है। असत्य भाषण, भात्सर्य, हिंसा, क्रोध, राग-द्वेष आदि से दूर रहकर पूर्ण ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करना चाहिये तथा उपासना विधि में वर्णित सभी क्रियाओं को यथा विधि सम्पन्न करना चाहिए। ''वैदिक बृहद पूजन'' के उपरान्त अथवा स्तोत्रादि पूजन-विसर्जन के बाद ब्राह्मण पंडित को दक्षिणा एवं मधुर भोजन से सन्तुष्ट करवाकर विदाई देनी चाहिए।

उपासक की योग्यता

उपासकों के लिए लक्षण निर्देश देते हुए शास्त्रों में कहा गया है-

''उपासक को शीलवान, विनम्र, निश्छल, श्रद्धालु, धैर्यवान, शारीरिक दृष्टि से स्वस्थ, कार्य सक्षम, सच्चरित्र, इन्द्रिय संयमी और कुल प्रतिष्ठा का पोषक होना चाहिए।''

यह तो स्वयं सिद्ध है कि यदि कोई उपासक गुणों से रहित है तो वह श्रद्धा विधानपूर्वक, स्थिर चित्त होकर न तो उपासना कर सकता है, न ही उसे कोई लाभ मिल सकता है। उपासना में सफलता का पात्र वही होता है,

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

जो विधि-विधान और पूर्ण मनोयोग से उपासना पूरी कर सके।

उपासना में भावना का महत्त्व

पाठको! किसी भी देवी-देवता की प्रतिमा या तस्वीर के समक्ष विधिवत् पूजन सामग्री स्थूल रूप में अर्पित करते हुए अराधना की जाये अथवा केवल मन्त्रोच्चार करते हुए मानसिक उपासना, महत्त्व उपादानों "पूजन सामग्री" का नहीं, आपकी भावना का होता है। सृष्टि की उत्पत्ति, पालन व संहारकर्त्री आद्याशक्ति स्वरूपा भगवती गायत्री को किसी वस्तु की कमी नहीं, जो हम उन्हें दे सकते हैं। वे तो केवल भक्त की सच्ची पवित्र भावना के ही भूखे हैं।

वैसे भी भगवती गायत्री की उपासना की जाये अथवा किसी अन्य देवी-देवता की आराधना, यह वह क्षेत्र है, जहाँ हमें अपनी भावना के अनुरूप ही फलों की प्राप्ति होती है। माता गायत्री अत्यन्त दयालु हैं, परन्तु हम उन्हें विद्या के द्वारा प्राप्त नहीं कर सकते। इसके लिये तो हमें अपने हृदय की सम्पूर्ण गहराई के साथ समर्पित भाव से उनको पुकारना होगा, याद करना होगा, नमन करना होगा।

उपासना में दृढ़ इच्छाशक्ति एवम् आस्था की उपयोगिता

मानव जीवन में सजीवता का सर्वश्रेष्ठ प्रमाण है-गतिशीलता। जहाँ गतिशीलता में विराम आया, जीवन में भी विराम लग जाता है। गतिशीलता का एक पर्याय है-"सक्रियता"। निष्क्रिय व्यक्ति कुछ नहीं कर सकता, जबकि सक्रियता के माध्यम से चींटी जैसा लघु प्राणी भी ऊँची से ऊँची दीवार को सरलता से पार कर लेता है। व्यवहारिक जीवन में भी जब तक शरीर सक्रिय हैं, तभी तक सार्थक माना जाता है। निष्क्रियता का दूसरा नाम "मृत्यु" है।

मृत्यु दो प्रकार की होती है-"वैचारिक" और "शारीरिक"। वैचारिक मृत्यु से व्यक्ति का शरीर तो संवेदनशील रहता है, पर वह कोई कार्य, वार्ता-विचार नहीं कर पाता। अतः उसकी स्थिति जीवित रहते हुए भी मृततुल्य हो जाती है। शरीर निष्पन्द हो जाता है। श्वास, श्रवण, दृष्टि आदि के समस्त यन्त्र जड़ हो जाते हैं। उसकी क्रियाएं चेतना और संवेदनशीलता समाप्त हो जाती है। ऐसी स्थिति में वह शरीर शव हो जाता है। उसकी कोई उपयोगिता नहीं रहती है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सक्रियता को अक्षुण्ण और स्फूर्त बनाये रखने के लिए इच्छाशक्ति की आवश्यकता होती है। इच्छा-शक्ति अदृश्य होते हुए भी एक ऐसा सफल माध्यम है, जिसके द्वारा कठिन से कठिन कार्य भी सरलता से साध्य हो जाते हैं।

कुछ लोग भ्रमवश इच्छाशक्ति की प्रबलता को "अहंकार" कहने लगते हैं। यह उनकी संकीर्णता है। इच्छाशक्ति की गणना अहंकार में नहीं, आत्मबल में होती है। अहंकार और आत्मबल में बहुत अन्तर है। आत्मबल की प्रेरणा सात्विक और राजसिक वृत्तियों द्वारा होती है।

इच्छाशक्ति से सम्पन्न व्यक्ति अपने सौभाग्य के निर्माता होते हैं, जबकि इसके अभाव में उन्हें दुःख से आक्रान्त होना पड़ता है। पौराणिक मान्यता के अनुसार संसार में 84 लाख योनियाँ मानी गई हैं। मानव शरीर उसमें श्रेष्ठ कहा गया है। वस्तुतः है भी ऐसा ही, क्योंकि मनुष्य के पास तर्क और विवेक शक्ति विशेष रूप से होती है जबकि अन्य प्राणी मात्र शारीरिक शक्तियुक्त होते हैं। मनुष्य अपने विवेक बल से समस्त प्राणियों को वशीभूत, पद दलित करने की क्षमता रखता है। तब ऐसी दुर्लभ मानव देह को पाकर क्यों न हम माँ गायत्री संकल्प और दृढ़ इच्छाशक्ति के द्वारा "कर्मक्षेत्र" में अग्रसर हों और क्यों न इस सर्वकल्याणमयी भावना को प्रेरित करें।

मानव जीवन की महत्ता प्रतिपादित करते हुए एक विद्वान् ने कितने मार्मिक उद्गार पेश किये हैं–"मानव ईश्वर की सर्वश्रेष्ठ कृति है। उसमें आत्मा नाम का जो तत्त्व है, वह वस्तुतः उसी ब्रह्माण्ड नियन्ता परमात्मा का एक अंश है। इस प्रकार आत्मा मनुष्य से अपने पिता परमात्मा के समान है, उसमें ईश्वर सम्पूर्ण रूप में व्याप्त है। करोड़ों यक्षपतियों और ऋषि-सिद्धों के अनगिनत भण्डार उसके रोम-रोम में समाहित हैं। मनुष्य एक साधारण प्राणी नहीं वरन साक्षात् "पारस पत्थर" है, चिन्तामणि है, कल्पवृक्ष है और देवताओं का देवता है।"

जब मानव देह इतना महत्त्वपूर्ण है, तब क्यों न इसका अधिक से अधिक सदुपयोग किया जाए? पूजा-पाठ, मन्त्र-साधना, आध्यात्मिक जीवन का अभिन्न अंग है। पूजा-पाठ तथा साधना-उपासना द्वारा हम लोक कल्याणार्थ कोई भी कार्य कर सकते हैं।

"व्यक्तिवादी भावना" से ऊँचे उठकर यदि हम 'सर्ववाद' को मान्यता दें, "सर्वजन सुखाय" के उद्देश्य से कुछ करें, तो वह विशेष रूप से श्रेयस्कर होगा। परोक्ष रूप से हम भी उससे लाभान्वित होंगे। न भी हो तो

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

क्या हानि है? विश्व हित के मार्ग पर चलना और कुछ कर दिखाना ही "देवत्व" है।

इस प्रकार यह सिद्ध हो जाता है कि मानव देह दुर्लभ है, अमूल्य है, अद्‌भुत शक्ति-सम्पन्न है। अतः मनुष्य को चाहिए कि वह अपनी शक्ति सामर्थ्य को समझे। लोकहित की कामना से, आध्यात्मिक साधना के माध्यम द्वारा लाभ अर्जित करें।

उपासना में "आस्था" का स्थान भी बहुत महत्त्वपूर्ण है। कहना चाहिए कि उपासना प्रक्रिया की आधारशिला ही आस्था है। आस्था का आशय है "विश्वास" और यही विश्वास जब अन्तः भावना से युक्त हो जाता है, तब उसे 'श्रद्धा' कहते हैं। श्रद्धा ही उपासना का प्रथम सोपान है। श्रद्धा का अभाव साधक को शंकालु, कुतर्की, समय ग्रस्त और अविश्वासी बना देता है। ये दुर्वृत्तियाँ मानव में उभरी तो समस्त साधना खण्डित हो जाती है। इसीलिये उपासना में श्रद्धा भाव सदैव अक्षुण्ण रहना चाहिए।

श्रद्धा की महत्ता प्रतिपादित करते हुए प्राचीन महर्षियों ने उपासकों को इसके प्रति सतत् जागरूक रहने का निर्देश दिया है।

"ऋग्वेद" में लिखा है–

"श्रद्धा सम्मति के मस्तक पे निवास करती है। बिना श्रद्धा के यज्ञकर्त्ता द्वारा अग्नि प्रज्वलित नहीं होती।"

"गीता" में कहा गया है–

"जिसकी जैसी श्रद्धा होती है, उसे उसी तरह की सिद्धि प्राप्त होती है। कर्मयोगियों में श्रद्धावान व्यक्ति श्रेष्ठ होते हैं।"

सारांशतः आस्थाहीन हवन, दान, तप तथा उपासना सदैव निष्फल होती है।

कामना की पूर्ति हेतु किये जाने वाले प्रयास

किसी भी कामना की पूर्ति हेतु किये जाने वाले प्रयास में दैवी माध्यम के इन तीन रूपों में से एक को अवश्य अपनाना होता है–"मन्त्र-यन्त्र-तन्त्र"। ये तीनों ही प्रभावशाली हैं और विधि पूर्वक अनुष्ठान करने, साधना पूर्ण हो जाने पर चमत्कारिक परिणाम दिखाते हैं। साधना व उपासना पद्धति में पर्याप्त माध्यम होने पर भी ये तीनों माध्यम एक-दूसरे से सम्बद्ध हैं। कभी-कभी विधि-विधान की पूर्ति हेतु तीनों अथवा दो की उपासना एक साथ ही करनी पड़ती है।

यद्यपि आज के व्यस्त और अनास्था प्रधान युग में दैविक साधनों का

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

लोप जैसा प्रतीत हो रहा है, तो भी इसके विश्वासी आराधकों की संख्या बढ़ी है जो उपासना-आराधना, यन्त्र-मन्त्र-तन्त्र, पूजा-पाठ, यज्ञ, अनुष्ठान, हवन आदि से अभीष्ट लाभ उठा रहे हैं।

उपासना, तपस्या अथवा अनुष्ठान जो भी हो, इन तीनों का भाव एक ही है और मन्त्र जप की अनिवार्यता तीनों विधान से स्वीकृत है। "जप" को वैदिक धर्म के समस्त धर्म काण्ड [आध्यात्मिक क्षेत्र] में "रीढ़ की हड्डी" माना गया है।

"मनुस्मृति" में कहा गया है-

"और कुछ करें या न करें, ब्राह्मणों को केवल जप करने से ही उपासना में सिद्धि प्राप्त हो जाती है।"

"महाभारत" में एक स्थान पर लिखा है-

"वैदिक कर्मकाण्ड की व्यवस्था के अनुसार आहुति देकर सिद्धि प्राप्त करने वाला यज्ञ 'श्रेष्ठ' यज्ञ है।"

श्रीकृष्ण ने जप की महत्ता बताते हुए कहा है-"मैं यज्ञों में जप और जप में यज्ञ हूँ।"

"पतंजलि योगदर्शन"में कहा गया है-

"मन्त्र जप से उपासना में सिद्धियाँ प्राप्त होती हैं।"

उपासना में भावना का प्रभाव और कामना

जो व्यक्ति निष्कपट भाव से भगवती का स्मरण करते हुए माता गायत्री के चरणों में मन लगाकर संसार के प्रति अनासक्त रहते हुए कर्म करते हैं, उनके तो सभी कार्य महामाया मातेश्वरी के प्रति समर्पित होने के कारण स्वयं ही उपासना बन जाती है। परन्तु भक्ति के प्रथम चरण में ऐसा सम्भव नहीं। मातेश्वरी गायत्री की उपासना समस्त मनोकामनाओं की प्राप्ति के लिए ही की जाती है। अतः हम यह तो नहीं कह सकते कि आप उनसे यही माँगिए कि आप में सद्गुणों मात्र का विकास हो। परन्तु, केवल किसी की बुराई, हानि या स्वयं के लिए लौकिक वस्तुओं की माँग करके अपनी उपासना को नष्ट न कीजिए। उपासना का फल तों उसमें व्याप्त भावनाओं के अनुरूप ही मिलता है। आइए, इसे एक आसान उदाहरण द्वारा समझते हैं-

आप्रेशन करने वाला एक शल्य चिकित्सक [डॉक्टर] भी शरीर पर छूरी चलाता है और एक क्रूर हत्यारा भी। परन्तु, डॉक्टर को यश, सम्मान और पुण्य मिलता है तो हत्यारे को प्राणदण्ड। कार्य तो दोनों ने एक सा ही

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

किया, दोनों के कार्य का माध्यम भी छूरा था और समान रूप से व्यक्ति रक्तरंजित भी हुआ।

फिर यह अन्तर क्यों? एक को पुरस्कार तो दूसरे को दण्ड, एक को मान-सम्मान, दूसरे को अपमान, एक का गुणगान दूसरे से घृणा, क्यों? ऐसा इसलिए क्योंकि दोनों की भावना में अन्तर था। शल्य चिकित्सक की भावना रोग का निदान कर, रोगी को रोग मुक्त कर सुखी और सन्तुष्ट करना था तो हत्यारे की भावना व्यक्ति को असमय काल के गाल में पहुँचाना। यही भावना का फर्क था उन्हें मिलने वाले प्रतिफलों का अन्तर।

ठीक यही अवस्था भगवती श्री गायत्री जी की उपासना में है। यदि हमारे भाव दूषित होंगे तो भक्तवत्सला सविता हम पर अनुकम्पा तो क्या करेंगी, अधिक सम्भावना यही है कि हमारी उपासना का हमें कोई फल ही न मिले। यही कारण है कि हृदय की निर्मलता उपासना की पहली शर्त है और इसका सबसे आसान उपाय है लोभ और मोह जैसी बुराइयों को छोड़ते हुए अधिक से अधिक धार्मिक साहित्य का सतत् अध्ययन मनन।

हम सांसारिक जीव हैं जो अनेक वस्तुओं के आकांक्षी हैं और प्रायः किसी कामना के वशीभूत होकर ही हम करते हैं-प्रभु की आराधना अथवा उपासना। जो व्यक्ति लोभ-मोह जैसी सांसारिक वस्तुओं की कामनाओं पर विजय प्राप्त कर चुके हैं, उनका तो प्रत्येक कर्म ही उपासना है।

परन्तु, हम तो उस मंज़िल के राही हैं, जहाँ उपासना-आराधना आरम्भ होती है। अतः हम कामना रहित हो गये हों, ऐसा तो हो ही नहीं सकता। परन्तु, इतना तो कर ही सकते हैं कि दयानिधि सावित्री से कोई सांसारिक वस्तु न माँगकर उनके चरणों में भक्ति की भावना की वृद्धि का ही वरदान बार-बार माँगते रहें।

कोई भी सांसारिक कामना चाहे वह कला-साहित्य अथवा संगीत में विशेष योग्यता की प्राप्ति हो अथवा मान-सम्मान और पुरस्कारों की प्राप्ति की। धन-दौलत की आकांक्षा हो या पदोन्नति की कामना मन में रखकर भजन, जप, पूजा-पाठ या आराधना-उपासना करना वास्तव में भक्ति नहीं, भगवान से की जाने वाली ''सौदेबाजी'' है। मातेश्वरी से माँगिये, अवश्य माँगिये, उनसे निरन्तर सद्भावों, ज्ञान और भक्ति-भावना का वरदान। उनसे कहिये-''हे माँ! हे गायत्री!! मैं कभी आपको भुलूं नहीं। आपकी भक्ति मिले और मिले आपका स्नेह।'' यह माँगना आपका अधिकार ही नहीं कर्त्तव्य भी है। यही माँगते रहने से भी समस्त सांसारिक सुखों की प्राप्ति स्वतः ही हो जाती है, क्योंकि महामाया परमेश्वरी जानती हैं कि आपको किन वस्तुओं की आवश्यकता है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

उपासना में सहायक

उपासना के प्रारम्भिक चरण "ज्ञान" और इसमें सहायक "गुरु" स्वाध्याय के अतिरिक्त कुछ नियम आदि भी इस मार्ग में सहायक होते हैं। संक्षिप्त में शरीर की बाहरी-भीतरी स्वच्छता, सात्विक भोजन, वाणी द्वारा मधुर हितकारी सत्य वचन बोलना और मन व इन्द्रियों द्वारा सांसारिक सुख-भोग में संयम, उपासक को आत्मिक आनन्द की प्राप्ति में सर्वदा सहायक होते हैं।

इसके अतिरिक्त आत्मिक स्तर पर सहयोगी तत्त्व है-विश्वास, लग्न और अभ्यास। अर्थात् सर्वप्रथम सृष्टि के संचालक शक्ति और उसके स्वरूप पर दृढ़ विश्वास, फिर उपासना मार्ग पर चलने हेतु दृढ़ निश्चय ज़रूरी है। दृढ़ निश्चय संकल्प से प्रेरित होता है, लग्न अर्थात् अथक प्रयास और अन्ततः अभ्यास से प्राप्त होती है-"सिद्धि", जो मनुष्य और समाज के परम आनन्द से ओत-प्रोत हो जाने की अवस्था है।

वैदिक साहित्य और इस्लामी, यहूदी, पारसी, ईसाई आदि सम्प्रदायों में उपलब्ध स्वर्ग की परिकल्पना अथवा उपनिषदों और उनसे प्रेरित जैन, बौद्ध आदि सम्प्रदायों में प्रतिपादित मोक्ष-कैवल्य-निर्वाण आदि सभी का लक्ष्य एक है-"वही चरम शाश्वत निर्विकल्प आत्मिक आनन्द" जो सृष्टि के प्रारम्भ से मनुष्य की आदम खोज है और जिसका सहज मार्ग है-"उपासना"।

उपासना का प्रदर्शन सफलता में बाधक

भक्तों पर सब कुछ लुटाने वाली, समस्त कामना प्रदान करने वाली भगवती गायत्री की कृपा प्राप्ति के लिए आप एकान्त स्थान में, शान्त मन से इनकी आराधना-उपासना करें।

आराधना-उपासना, पूजा-पाठ, जप-तप अथवा भक्ति का कोई भी मार्ग अपनाया जाए यदि इसका प्रदर्शन हो जाता है तो पुण्य फलों में न केवल न्यूनता आ जाती है, बल्कि बड़ी सीमा तक उसका लोप भी हो जाता है। आराधना-उपासना न तो बिक्री की वस्तु है और न ही प्रदर्शन की। उपासना का थोथा प्रदर्शन आपको समाज में सम्मान तथा आत्म प्रदर्शन का झूठा सुख और स्वयं को विशिष्ट समझने का मिथ्या गर्व तो दिला सकता है, परन्तु परम दयालु मातेश्वरी गायत्री का सच्चा प्यार और कृपाएं नहीं।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

भगवती गायत्री हमारी माता हैं और हम उनकी सन्तान, फिर माता और उसकी सन्तान के बीच में अन्यों का क्या काम? इसलिए जहाँ तक हो सके एकान्त में ही माँ गायत्री की पूजा, ध्यान, भजन और उपासना कीजिए।

भक्ति का प्रदर्शन किस प्रकार भक्तों को कष्ट में डाल देता है, इसके हज़ारों जीवन्त उदाहरण धार्मिक ग्रन्थों में मिलते हैं।

भक्त प्रह्लाद और भक्त ध्रुव को बचपन से ही वर्षों तक कठोर तपस्याएं करनी पड़ीं तब जाकर उन्हें भगवान के दर्शन हुए, क्योंकि उनकी भक्ति का सम्पूर्ण समाज को ही पता चल गया था। इसके विपरीत महाराजा रावण का भाई भक्त विभीषण प्रातःकाल उठते समय ही चन्द क्षणों के लिए ईश्वर का नाम जप लिया करता था, किन्तु रावण तो क्या, उसकी पत्नी तक से छिपी हुई थी–"उसकी भक्ति"। यह विभीषण की छिपी हुई भक्ति का ही कमाल था कि ध्रुव और प्रह्लाद की अपेक्षा सौवें अंश से भी कम समय तक उपासना करने पर ही न केवल उसे भगवान राम का सान्निध्य प्राप्त हुआ, परलोक में भगवान विष्णु के लोक में भी वास मिला।

इसलिए भगवती श्री गायत्री की दया पाने के लिए तथा धन-जन-सुख-सम्पदा, शान्ति व प्रसन्नता की प्राप्ति के लिए उपासना नियमित रूप से अवश्य कीजिए, किन्तु इसका थोथा प्रदर्शन मत कीजिए।

एकाग्र मन का उपासना पर प्रभाव

खेल-तमाशों जैसे सांसारिक कर्मों में मानव का मन तुरन्त लग जाता है, परन्तु उपासना-भजन-कीर्तन आदि में प्रारम्भ में कुछ दिनों तक मन नहीं रमता, चित्त चंचल बना रहता है। कई बार तो उकताहट और घबराहट जैसी होती है, परन्तु यह स्थिति चन्द दिन ही रहती है। शुरू-शुरू में तो बालक को स्कूल में तथा नववधू को ससुराल में घबराहट होती है, किन्तु कुछ समय बाद ही बालक का स्कूल में तथा नववधू का ससुराल में न केवल मन लगने लगता है, बल्कि उन्हें वहाँ पूर्ण आनन्द भी आने लगता है।

ठीक यही स्थिति आराधना, उपासना और भगवत् भक्ति की है। प्रारम्भ में कुछ दिनों तक ही आराधना-उपासना में मन नहीं लगता, परन्तु कुछ समय बाद ही उपासना में भी परम आनन्द की अनुभूति होने लगती है।

यदि प्रारम्भ में मन नहीं लगता तो भक्तों की रक्षक परमेश्वरी श्री

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

गायत्री की प्रतिमा अथवा तस्वीर के समक्ष सच्चे हृदय से रोइये, गिड़गिड़ाइये और प्रार्थना कीजिए–

"हे भक्त वत्सला माते! मैं तेरी मूर्ख सन्तान हूँ। निपट अनाड़ी हूँ। परन्तु मैं क्या करूँ ? हे माँ गायत्री! मुझ पर कृपा करो। अपने चरणों में मेरा मन लगाओ। मुझको अपनी भक्ति दो।"

परम दयालु माँ गायत्री को अपने भक्त की इस पुकार को सुनना ही पड़ेगा, क्योंकि वह केवल हमारी ही नहीं बल्कि सम्पूर्ण जीवों की माता हैं। हम उनसे विमुख हो सकते हैं किन्तु वे हमसे विमुख नहीं हो सकतीं। माता से उसकी सन्तान कुछ भी माँग सकती है, फिर हम तो माता श्री से उनके स्नेह की भिक्षा ही माँग रहे हैं, इसमें शर्म और झिझक कैसी ? जितना अधिक माँग सकते हैं, माँगिए मातेश्वरी से दया और भक्ति भाव की भिक्षा।

उपासना में दृढ़ निश्चय एवं श्रद्धा का महत्व

उपासना की शक्ति ही मानव को सर्वस्व विजय प्रदान करती है। किन्तु बहुत कम लोग यह मानते हैं कि "उपासना की नींव केवल श्रद्धा है" और जहाँ पर श्रद्धा है वहीं पर सिद्धि है।

हर प्राणी के लिए आवश्यक है कि जिस साधन से सिद्धि को प्राप्त करने जा रहा है, उस पर पूर्ण विश्वास रखे, उस पर पूरी आस्था हो जो उपासना का "मेरुदण्ड" है। जिस उपासना में विश्वास नहीं, श्रद्धा नहीं, उसे मात्र परीक्षार्थ करना, अपना समय नष्ट करना है। इस कारण ऐसे कार्यों में सफल होना चाहते हैं तो इसके लिए बहुत बड़ी लगन की आवश्यकता है। सच्ची लगन, तपस्या और उपासना का ही दूसरा नाम सफलता है।

यदि आप सफल होना चाहते हैं, यदि आप परम परमेश्वरी माँ गायत्री जी के कृपा पात्र बनना चाहते हैं तो तप करना होगा, त्याग करना होगा, तपस्या करनी होगी। इस कार्य के लिए अपने संकल्प को बार-बार दोहराना होगा। उनको श्रद्धा भाव से हृदय में बिठाना होगा, तभी आप उस आदिशक्ति स्वरूपा महामाया गायत्री की कृपा प्राप्त कर सकेंगे।

उपासना जीवात्मा तथा परमात्मा के मध्य की कड़ी

आनन्द की लालसा और सम्पत्ति अर्जन की अन्धी दौड़ ने आज मानव को पशुवत बनाकर रख दिया है। मानसिक शान्ति, परस्पर मधुर सम्बन्ध और भाईचारा आज बीते युग की बात बनकर रह गयी है और इसका

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

एकमात्र कारण है–''भौतिक उपलब्धियों की प्राप्ति की अन्धी असीम अंकाक्षा।''

तन-मन के सभी क्लेशों और संतापों, समाज में हिंसा एवं अनाचार, व्यक्तिगत विद्वेष तथा असन्तोष का मूल कारण धन के प्रति यह अन्धी दौड़ ही है। मानव जितना भी दौड़ लगा रहा है, विनाश की ओर जा रहा है। अत: इनसे बचने के लिए, इन सभी समस्याओं का समाधान है–''आद्याशक्ति परमेश्वरी के किसी भी रूप-अवतार अथवा देवी देवता की उपासना।''

उपासना ही एक ऐसा माध्यम है जिससे जीवात्मा परमात्मा को प्राप्त कर सकता है। इसी से मानव उस परम पिता परमात्मा के चरण-रज को पा सकता है, उसमें तल्लीन हो सकता है। इस कलिकाल में उपासना को ही सर्वदु:खभंजक एवं आराधना का सर्वश्रेष्ठ माध्यम कहा गया है, क्योंकि उपासना के द्वारा जीवात्मा के अन्त:करण की शुद्धि एवं उपास्य देव के प्रति प्रेम, विश्वास तथा श्रद्धा में वृद्धि होती है।

जहाँ तक आद्याशक्ति स्वरूपा माँ गायत्री की उपासना का प्रश्न है, तो वैसे ही परम दयालु और करुणा की जलधि है और ऊँ गायत्री नम:, ऊँ गायत्री नम: रटने पर तुरन्त प्रसन्न होकर समस्त भौतिक व आलौकिक वस्तुएं प्रदान करने वाली हैं और जिसे पाकर मानव को स्वत: ही मोक्ष की प्राप्ति हो जाती है। परन्तु आवश्यकता है नित्य स्तुति, वंदना, पूजन और उपासना द्वारा उनको प्रसन्न करने की।

उपासना के दस कर्म

भगवान विष्णु के अंशावतार महर्षि वेदव्यास जी ने उपासना के अन्तर्गत ''दस कर्म'' बतलाए हैं। इनमें से किसी भी एक कर्म द्वारा उपासना की जा सकती है। इन दस कर्मों में से समस्त कर्म करने की कोई आवश्यकता नहीं है। ये दस कर्म हैं–

मूर्ति पूजा, इष्टदेव नाम का जाप, स्तोत्रों का पाठ, सहस्त्रनाम पाठ, भजन-गायन, इष्टदेव के विविध चरित्रों व कार्य-कलापों का पठन-पाठन और श्रवण-मनन, आराध्य देव से सम्बन्धित यन्त्रों-मन्त्रों का विधि-विधान से पूजन, शतनाम पाठ, आराध्य देवी-देवता के प्रति आत्म समर्पण और आराध्य की वंदना-परिक्रमा करना।

नित्य नियम उपासना का फल

कोई भी कर्म हो, नियमपूर्वक निरन्तर करने से ही उसमें सफलता

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

मिलती है। वर्ष भर नियमपूर्वक बिना क्रम तोड़े पढ़ने वाला विद्यार्थी ही "प्रथम श्रेणी" प्राप्त करता है।

ठीक यही दशा पूजा, आराधना और उपासना की है। निश्चित समय पर नित्य उपासना करने से ही वांछित फलों की प्राप्ति होती है, जबकि प्रमाद और आलस्य पुण्य फलों में तो कमी कर ही देता है, बार-बार का यह प्रमाद, उपासना को खण्डित भी कर देता है और फिर हमारा ध्यान उपासना तो क्या सामान्य पूजा-पाठ में भी नहीं लगता।

जहाँ तक उपासना में लगाए जाने वाले समय का प्रश्न है तो इसके लिए एक समय निश्चित कर लें और प्रतिदिन उतना समय तो उपासना-पूजा में अवश्य लगाएं तथा यदि निश्चित किए गए समय से अधिक समय आप इसमें लगाते हैं तो और भी बेहतर है, क्योंकि नियम अथवा समय कम से कम के लिए होता है, अधिकरण की कोई सीमा नहीं।

क्या धन से किसी का मन भरा है? पाँच वाला पचास के लिए, हज़ार वाला लाख के लिए सतत् चेष्टा करता रहता है, उसे सन्तोष कभी नहीं होता। जब संसार के इस नाशवान धन से हम नहीं उकताते, सदैव अधिक की कामना करते रहते हैं तब 'प्रभु रूपी असीम धन' को हम सीमा में कैसे बाँध सकते हैं? जितने अधिक समय तक परमात्मा का चिन्तन-मनन, ध्यान, जप-तप आराधना और उपासना हो जाये उतना ही कम है, परन्तु इसमें एक दिन का भी व्यवधान नहीं पड़ना चाहिए।

यद्यपि महामातेश्वरी गायत्री परम दयालु हैं, अपने बच्चों का कभी बुरा नहीं सोचतीं, और हमें हमारे दोषों-अवगुणों के लिए क्षमा कर देती हैं तथापि हमें भी ध्यान रखना चाहिए कि उनकी उपासना-अर्चना में प्रमाद और आलस्य जैसे दोष न आने पाएं।

अयोग्य उपासक के लक्षण

उपासना के अयोग्य अथवा गुरु दीक्षा के लिए अनुपयुक्त व्यक्तियों के सम्बन्ध में शास्त्रकारों का मत है कि-

अपराधी मनोवृत्ति वाले, पापी, क्रूर, कायर, कटुभाषी, भ्रष्टाचारी, पर निन्दक, मन्त्र भ्रष्ट, आस्थाहीन, आलसी, क्रोधी, हिंसक, ईर्ष्यालु, अनैतिक मार्ग के अनुयायी, दुर्व्यसनी, शास्त्र निन्दक, अहंकारी, मूर्ख, दुर्बुद्धि, प्रलापी और लम्पट व्यक्ति न तो किसी गुरु द्वारा मन्त्र दिये जाने योग्य हैं, न ही वे दीक्षा प्राप्त कर पाते हैं। ऐसे लोगों को ज्ञानोपदेश, मन्त्र दीक्षा, साधना अथवा उपासना परामर्श व आध्यात्मिक संकेत देने का प्रयास सर्वथा निरर्थक है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

उपासना का स्थान

उपासना आरम्भ करने से पूर्व, उपासना का स्थान कैसा है, उसे भली-भान्ति समझ लेना चाहिए। उपासना करते समय उपासक बाह्य रूप से कोई कर्म नहीं कर रहा होता। वह निश्चल-निश्छल बैठा रहता है, इसलिए कि उपासना पूर्ण रूपेण मानसिक क्रिया है। कोई भी मानसिक क्रिया, ऐसा कार्य, जिसमें आप हृदय की सम्पूर्ण गहराई से जुड़कर, अपना तन-मन-सुध तक भूल जाएं, भीड़-भाड़ वाले स्थान में हो ही नहीं सकता। चाहे वह गम्भीर विषयों का अध्ययन हो अथवा आध्यात्मिक चिन्तन-मनन। अतः उपासना विशिष्ट स्थान पर ही किया जाए, तभी लाभप्रद होता है।

प्राचीन शास्त्रों में उपासना के लिए काशी, प्रयाग जैसे तीर्थों अथवा गंगा के तट पर या फिर किसी वाटिका, पार्क और खेत-खलिहानों जैसे स्थानों को उपयुक्त बताया गया है। इसमें साफ, स्वच्छ और शुद्ध निवास स्थान के कमरे को भी साधना-उपासना के लिए अनुकूल कहा गया है जहाँ उपासक एकान्त में बैठकर उपासना कर सकता है।

आद्याशक्ति स्वरूपा माँ गायत्री पर अपनत्व एवं पुत्र-पुत्री भाव का प्रभाव

भगवती गायत्री सम्पूर्ण जगत् की माता हैं। अतः वे अपनी सभी सन्तानों से एक जैसा प्यार तो करती ही हैं, परन्तु यह भी सत्य है कि जो जीव उनसे विशेष अनुराग व अपनत्व का भाव रखता है, उसे माँ गायत्री की विशेष कृपाएं अतिरिक्त रूप में अवश्य प्राप्त होती रहती हैं।

यह आद्याशक्ति महामाया का बनाया हुआ नियम है कि सद्भाव और अपनत्व की भावना का प्रत्युत्तर हमेशा प्रेम, दुलार और मातेश्वरी की विशेष कृपाओं के रूप में मिलता है, जबकि घृणा के प्रत्युत्तर में अधिकतर तो घृणा ही मिलती है या फिर मिलता है गहन उपेक्षा का भाव।

यह संसार का नियम है कि जिस व्यक्ति को हम प्रेम करते हैं, जो हमें अच्छे लगते हैं, जिनके प्रति हमारे हृदय में सम्मान का भाव होता है अथवा जिनके प्रति हमारा हृदय वात्सल्य भाव से भरा रहता है, हम उनका बुरा कभी सोच ही नहीं पाते। जिनके प्रति हमारे हृदय में प्रेम, आदर, श्रद्धा और प्रत्येक प्रकार से सुख पहुँचाने का सद्भाव होता है, वे सभी व्यक्ति स्वयं हमारे सद्भाव का उत्तर सद्भाव से और भलाई का जवाब उससे भी अधिक भलाई कर देने के लिए तत्पर रहते हैं। यह लौकिक नियम है कि जिसे हम तत्पर रहते हैं। यह लौकिक नियम है कि जिसे हम आदर और

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सम्मान देंगे, वह भी हमें आदर-मान देगा। जिसका हम भला करेंगे, वह भी हमारे कल्याण की कामना करेगा। मानव ही नहीं अपितु सम्पूर्ण जीव जगत् भी इसी नियम के अधीन रहकर व्यवहार करते हैं, क्योंकि यह स्वयं आद्याशक्ति महामाया का बनाया हुआ नियम है जिसे स्वयं वे भी नहीं तोड़ते।

माँ गायत्री के प्रति अपनत्व के भावों का विकास उनकी उपासना की प्रथम सीढ़ी तो है ही, साथ ही उपासना और अराधना का आधार स्तम्भ भी है। उस आद्याशक्ति स्वरूपा मातेश्वरी गायत्री की हम सन्तान हैं और वे हमारी माता इस भाव के हृदय में आते ही हम महामाया गायत्री की विशेष कृपाओं के अधिकारी बन जाते हैं। सन्तान कुछ भी करे, माता को कितना ही कष्ट पहुँचाए परन्तु माता तो माता ही रहती हैं। उनकी कृपा तो सन्तान पर वैसी ही बनी रहती है, उसमें तनिक भी कमी नहीं आती। सन्तान जब कुछ और बड़ी हो जाती है। वह खेलने-कूदने और स्कूल जाने लगती है। तब उसके प्रत्येक कार्य पर माता-पिता विशेष प्रसन्न होते हैं। उसे प्रोत्साहन और पुरस्कार देते हैं। उसकी किसी गलती पर उसे समझते हैं। परन्तु वह कितना भी शैतान हो, उसे घर से तो नहीं निकाल देते, रखते तो उसे घर में ही हैं।

जब सांसारिक माता-पिता अपनी अबोध सन्तान से घृणा नहीं करते, उन्हें घर से नहीं निकालते, बल्कि हर प्रकार से उनकी आवश्यकताओं की सतत् पूर्ति करते रहते हैं। तब वे परमेश्वरी जो सम्पूर्ण संसार की माता हैं, वे किस प्रकार अपनी सन्तानों से विमुख हो सकती हैं। यही कारण है कि जो भी भक्त एक ही बार में परम दयालु माता गायत्री को अपनी माँ मानकर चलता है, उसे उनकी कृपाओं की प्राप्ति अनायास ही अनवरत रूप से होने लगती है। एक बार माता-पुत्र का यह सम्बन्ध स्थापित हो जाए, उपासक की समस्या का समाधान स्वतः ही होने लग जाता है, क्योंकि वह बन जाता है आद्याशक्ति स्वरूपा मातेश्वरी गायत्री की प्रिय सन्तान।

उपासना हेतु मुख्य निर्देश

मन्त्रानुष्ठान अथवा उपासना हेतु नियमों का पालन करना तो अपरिहार्य है ही, कुछ अन्य नियम भी हैं, जिनका पालन करना आवश्यक होता है। अनेक विद्वानों-मर्मज्ञों ने परीक्षण करके इनकी व्यवहारिक उपयोगिता और प्रभाव को स्वीकार किया है। यदि आप मातेश्वरी गायत्री की अनुष्ठान रूपी उपासना करना चाहते हैं तो निम्नलिखित निर्देशों का पालन अवश्य करें-

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

1. स्नान करके, शुद्ध स्वच्छ वस्त्र पहनकर उपासना स्थल में जाना चाहिए।
2. वस्त्र दो ही हों और सिले हुए न हों।
3. साधना स्थल पूर्णतः शान्त, सुरक्षित और एकान्त में हों।
4. दिन भर में पहने हुए वस्त्र अनुष्ठान के समय नहीं पहनने चाहिएं।
5. आसन पर बैठ जाने पर बार-बार उठना उचित नहीं होता।
6. बैठने में शरीर सदैव सीधा रहे। मेरुदण्ड को झुकाना नहीं चाहिए।
7. अनुष्ठान या उपासना में पूजन-मन्त्र जप और आहुतियों की पूर्ति आवश्यक होनी चाहिए।
8. अनुष्ठान आरम्भ करते समय शुभ दिन, शुभ तिथि, शुभ मुहूर्त्त आदि का विचार अवश्य कर लेना चाहिए।
9. जप काल में नित्य देवता का आवाहन-विसर्जन करते रहना चाहिए।
10. धूप, दीप, अक्षत, चन्दन, बिल्वपत्र, पुष्प, गंगा जल, नैवेद्य आदि का प्रयोग नियमानुसार करना चाहिए।
11. अनुष्ठान की समाप्ति पर हवन, तर्पण और मार्जन क्रिया भी बहुत आवश्यक है। इसके पश्चात् दान, ब्राह्मण तथा कुमारी कन्याओं के भोजन को भी वरीयता दी गई है।
12. पूरी साधना काल में "ब्रह्मचर्य व्रत" का पालन करना चाहिए।
13. श्रृंगार, सज्जा, स्वादेच्छा, परामर्श न करके अपना कार्य स्वयं करें। कार्य और विचार दोनों ही पवित्र व स्वच्छ हों।
14. अनुष्ठान करने से पूर्व जैसा कुछ "संकल्प" [निश्चय] किया जाए, उसका अन्त तक पालन किया जाए।
15. अनुष्ठान से बचे समय में भी धार्मिक विषयों का चिन्तन, धर्म चर्चा, आध्यात्मिक विचार वाले लोगों का सामीप्य और इष्टदेवता का स्मरण कल्याणकारी होता है।
16. मन्त्रों का उच्चारण पूर्णतः शुद्ध हो।

उपासना में निषेध

धार्मिक शास्त्रों-ग्रन्थों में उपासना-आराधना में निम्नलिखित कार्यों का निषेध किया गया है-

1. मादक द्रव्यों का निषेध। बहुतेरे साधु-फकीर गांजे, चरस आदि का दम लगाकर कहते हैं-"इससे ध्यान लगता है।" उपासकों के लिए किसी भी प्रकार के मादक पदार्थों की स्वीकृति नहीं दी गई है। साधना काल में समस्त प्रकार की विलासित और मादक पदार्थों का

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

निषेध किया गया है। साधक अनुष्ठान काल में गांजा, भांग, चरस, शराब, ताड़ी, सिगरेट, बीड़ी, तम्बाखू, मांस, मछली, अण्डे आदि को सर्वथा त्याग कर संयमित जीवन व्यतीत करें। साधना में मन लगाने के लिए नशे का नहीं, आस्था का अवलम्ब लेना चाहिए।

2. कुसंगित, अश्लील दृश्य, अनैतिक विषयों की चर्चा, शृंगार उत्तेजक वस्तुएं, दृश्य अथवा वार्तालाप सर्वथा वर्जित है।
3. प्रतिकूल भोजन सर्वथा त्याज्य है। गरिष्ठ तामसिक भोजन से साधक की मनोशान्ति और शुचिता नष्ट होती है।
4. बिना स्नान किये, अपवित्र अवस्था में साधना-उपासना वर्जित है।
5. शिखा खोलकर उपासना नहीं करनी चाहिए।
6. बिना आसन बिछाए नंगी भूमि पर उपासना वर्जित है।
7. उपासना के समय किसी से वार्तालाप नहीं करना चाहिए।
8. भीड़-भाड़ वाले स्थान पर साधना करना निषिद्ध है।
9. माला जपते समय हाथ और सिर को खुला नहीं रखना चाहिए।
10. राह चलते या रास्ते में कहीं बैठकर जप नहीं किया जाता।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

उपासना में आसन और मालाओं का प्रयोग खण्ड

उपासना में विविध आसनों का प्रयोग

माँ गायत्री के प्रिय भक्तो! विभिन्न देवी-देवताओं की उपासना-आराधना में विभिन्न प्रकार के आसनों का प्रयोग किया जाता है जिनका अपना विशेष महत्त्व और उपयोगिता होती है। बिना आसन के नंगी भूमि पर बैठकर साधना-उपासना करने से, उपासक की उपासना का आधा फल पृथ्वी प्राप्त कर लेती है। इससे साधक के पुण्य फलों में न्यूनता आ जाती है और उसकी मनोवांछित उद्देश्यों की पूर्ति में विलम्ब हो जाता है। साधारणतः उपासना में निम्न प्रकार के आसनों का प्रयोग होता है–

1. कुशा आसन 2. मृग चर्म 3. व्याघ्र चर्म 4. ऊनी वस्त्र 5. रेशमी वस्त्र।

कुशा आसन की उपयोगिता

1. साधारणतः कोई भी उपासना हो, यदि कुशा आसन पर बैठकर जप एवं पूजा-पाठ किया जाए तो सफलता अवश्य मिलती है।

2. अन्तःकरण पवित्र होता है।

3. उपासक को फल की प्राप्ति में सुविधा होती है।

4. उपासक की दृढ़ इच्छाशक्ति और स्वास्थ्य में उत्तरोत्तर वृद्धि होती है।

5. दूषित प्रभावों अर्थात् भूत-बाधाओं का शमन होता है।

6. उपासना की उपासनात्मक उपलब्धि प्रबल होती है।

मृग चर्म आसन पर उपासना के लाभ

मोक्ष प्राप्ति अथवा धन के उद्देश्य से की जाने वाली उपासना में ''कृष्ण मृग चर्म'' विशेष रूप से अनुकूल प्रभाव देती है।

व्याघ्र चर्म आसन की महत्ता

यह ''रजोगुणी'' आसन है।

राजसिक वृत्ति वाले साधकों द्वारा, राजसी उद्देश्य की पूर्ति की जाने

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

वाली साधना में इसका प्रयोग विशेष प्रभावकारी होता है। सिंह के स्वभाव वाले सभी गुण इसमें आंशिक रूप में विद्यमान रहते हैं। परीक्षणों से सिद्ध हुआ है कि व्याघ्र चर्म के पास कोई जीव-जन्तु नहीं आते। इस पर बैठे हुए उपासक को सांप-बिच्छु का भय नहीं रहता, क्योंकि ये जन्तु व्याघ्र चर्म से भय खाते हैं और इसीलिए इस पर चढ़कर, आसीन उपासक को छूने का साहस नहीं कर पाते। निर्विघ्न उपासना के लिए "व्याघ्र चर्म" विशेष उपयोगी है। वैसे भी इसका वैज्ञानिक महत्त्व है; और पवित्रता में यह किसी से कम नहीं। "भगवान शिव" को तो यह इतना प्रिय है कि वे इसे ओढ़ने-बिछाने और पहनने तक के काम में लाते हैं।

ऊनी अथवा कम्बल के आसन का लाभ

उपासको! "कर्मसिद्धि" की लालसा से की जाने वाली उपासना में ऊनी वस्त्र या कम्बल का आसन अत्यन्त लाभदायक है।

रेशमी आसन की उपयोगिता

रेशमी आसन की भी उपासना में अपनी उपयोगिता है। इस पर बैठकर जप या उपासना करने वाले उपासक की शारीरिक विद्युत शक्ति पृथ्वी में प्रवेश न करके सुरक्षित रहती है। वस्तुतः यह आसन भी असंक्रामक पदार्थों की कोटि में आता है।

त्याग करने योग्य आसन

निम्नलिखित आसनों का उपयोग उपासना साधना में वर्जित है-

बाँस, पत्थर, घुनी लकड़ी, तिनके अथवा पत्तों से बने आसन पर बैठकर जप या उपासना करना अनिष्टकारक है। अर्थात्-

1. बाँस के बने आसन पर बैठकर उपासना करने से "दरिद्रता" आती है।

2. पत्थर का आसन उपासक को व्याधिग्रस्त बनाता है।

3. धरती पर बैठकर [बिना कोई आसन बिछाए] अर्थात् खुली भूमि पर उपासना करने वाले व्यक्ति दुःख से आक्रान्त रहते हैं।

4. छेद वाली लकड़ी [घुनी लकड़ी] के आसन का प्रयोग दुर्भाग्यकारी है।

5. तिनकों के बने आसन का प्रभाव साधक को धन-हानि और यश क्षीण का सन्ताप देता है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

6. पत्तों से निर्मित आसन मानसिक विघ्न उत्पन्न करता है।

7. सामान्य वस्त्र और कुर्सी का प्रयोग भी उपासना में अशुभकारी होता है।

फूल तोड़ने की विधि और मन्त्र

पूर्व दिशा की ओर मुख करके हाथ जोड़कर निम्न मन्त्र का उच्चारण करें–

''मा नु शोकं कुरुष्वत्वमं स्थान त्यागं चम कुरू।
देवता पूजनार्थाय प्रार्थयामि वनस्पते॥''

पहला फूल तोड़ते समय
''ॐ वरुणाय: नम:''
दूसरा फूल तोड़ते समय
''ॐ व्योमाय: नम:''
तीसरा फूल तोड़ते समय
''ॐ पृथिव्यै नम:'' बोलें।
तत्पश्चात् इच्छानुसार फूल तोड़ लें। [नित्यमय पूजा प्रकाश से]

उपासना में निषिद्ध फूल

उपासको! यहाँ उन फूलों का वर्णन कर रहा हूँ जिनको सामान्यत: सभी पूजाओं में चढ़ाने से वर्जित किया गया है।

सूंघा हुआ अथवा अंग में लगाया हुआ पुष्प अपवित्र होता है। इसलिए इसका प्रयोग भगवती की पूजा में न करें। भंवरे के सूंघने से फूल दूषित नहीं होता। जो फूल अपवित्र बर्तन में रखा हो, अपवित्र स्थान पर उत्पन्न हुआ हो, आग से झुलस गया हो, कीड़ों से विद्ध हो, सुन्दर न हो, जिसकी पंखुड़ियाँ बिखर गयी हों, जो फूल पौधे से टूटकर धरती पर गिर गया हो, जो पूर्ण रूप से खिला न हो, जिसमें से खट्टी गन्ध या सड़ी गन्ध आती हो–ऐसे पुष्पों का उपासना में प्रयोग नहीं करना चाहिए। जो पुष्प बाएं हाथ में, पहनने वाले अधोवस्त्र, आक और रेड़ के पत्ते में रखकर लाए गए हों, ऐसे फूल सर्वथा त्याज्य हैं। कलियों को चढ़ाना मना है, किन्तु यह निषेध कमल पर लागू नहीं होता। फूल को जल में डुबोकर धोना माना है। केवल जल से इसका प्रोक्षण कर देना चाहिए।

बासी जल और फूल का निषेध

जो फूल, पत्ते और जल बासी हो गए हों, उन्हें देवताओं को न चढ़ाएं,

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

किन्तु तुलसी पत्र और गंगाजल कभी बासी नहीं होते। तीर्थों का जल भी बासी नहीं होता। वस्त्र, यज्ञोपवीत और आभूषण में भी निर्माल्य का दोष नहीं आता। माली के घर में रखे हुए फूलों में बासी दोष नहीं होता। मणि, रत्न, सुवर्ण, वस्त्र आदि से निर्मित फूल भी बासी नहीं होते। इन्हें प्रोक्षण कर चढ़ाना चाहिए।

पुष्पादि चढ़ाने की विधि

उपासको! फूल, फल और पत्ते जैसे उगते हैं वैसे ही इन्हें चढ़ाना चाहिए। उत्पन्न होते समय इनके मुख ऊपर की ओर होते हैं। अतः चढ़ाते समय इनके मुख ऊपर की ओर ही रखने चाहिएं। दूर्वा एवं तुलसी पत्र को अपनी ओर तथा बिल्वपत्र का मुख नीचे की ओर करके चढ़ाना चाहिए।

दाहिने हाथ के करतल को उतानकर, मध्यमा, अनामिका और अंगूठे की सहायता से फूल को चढ़ाना चाहिए।

चढ़ाए हुए फूल को उतारने की विधि

चढ़ाए हुए पुष्प को अंगूठे और तर्जनी की सहायता से उतारें।

बिल्वपत्र तोड़ने का मन्त्र

उपासको! बिल्वपत्र तोड़ते समय निम्न मन्त्र का उच्चारण करें–

अमृतोद्भव श्रीवृक्ष महादेव प्रियः सदा।
गृहामि तव पत्राणि शिव पूजार्थ मादरात॥

उपरोक्त मन्त्र हाथ जोड़कर, बिल्वपत्र वृक्ष में शिव का ध्यान कर पढ़ें। मन्त्र पढ़ने के पश्चात् तीन पत्ते वाला शुद्ध व स्वच्छ बिल्वपत्र आवश्यकतानुसार वृक्ष से तोड़ लें।

बिल्वपत्र तोड़ने का निषिद्ध काल

किसी भी मास की चतुर्थी, अष्टमी, नवमी, चतुर्दशी और अमावस्या तिथियों को, संक्रान्ति के दिन और सोमवार को बिल्वपत्र न तोड़ें, अतः निषिद्ध समय में पहले दिन का रखा बिल्वपत्र चढ़ाना चाहिए। शास्त्रों में तो यहाँ तक कहा गया है–

अर्पितान्यपि बिल्वानि प्रक्षाल्यापि पुनः पुनः।
शंकरायार्पणीयानि न नवानि यदि क्वचित॥

अर्थात् यदि नूतन बिल्वपत्र न मिल सके तो चढ़ाए हुए बिल्वपत्र को धोकर बार-बार चढ़ाएं। [स्कन्द पुराण, आचारेन्दु, पृ० 165]

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

माला की उपयोगिता और फेरने का नियम

प्राचीन काल में ऋषियों-मुनियों ने जप-तप, पूजा-पाठ के लिए माला विशेष का नियम बनाया था जो आज भी उतना ही महत्त्व रखते हैं। व्यावहारिक रूप में हम रुद्राक्ष, तुलसी, कमलगट्ठा, बैजयन्ती, शंख, चंदन, राजमणि, पुत्रजीवा, स्फटिक आदि की मालाओं का प्रयोग जप कार्य में लाते हैं।

मन्त्र जप के लिए माला का पूर्ण और शुद्ध होना आवश्यक है। माला के दाने टूटे-फूटे तथा कीड़ों से छिद्रित नहीं होने चाहिएं। प्रायः माला 108 दाने की होती है। जपते समय माला का एक फेरा पूरा हो जाने पर "सुमेरू" तक पहुँचकर, वहीं से फिर विपरीत दिशा में जप प्रारम्भ कर देना चाहिए। सुमेरू को लांघकर आगे बढ़ना वर्जित है।

विभिन्न जप कार्यों में विभिन्न मालाओं का प्रयोग

1. धन प्राप्ति हेतु-मूंगे की माला।
2. शत्रु नाश के लिए-कमलगट्ठे की माला।
3. वैष्णवी मत साधना हेतु-तुलसी की माला।
4. अभीष्ट सिद्धि हेतु-चाँदी की माला।
5. पाप नाश हेतु-कुशा जड़ की माला।
6. देवी-देवता उपासना हेतु-लाल चन्दन एवं रुद्राक्ष की माला।
7. भैरवी विद्या साधना हेतु-मूंगा, शंख, मणि अथवा स्फटिक की माला।
8. सन्तान प्राप्ति हेतु-पुत्रजीवा की माला।
9. गणेश पूजन हेतु-हाथी दाँत की माला।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

चौथा भाग

माता गायत्री पूजन खण्ड

पूजन को हज़ार गुणा महत्त्वपूर्ण बनाने हेतु "माता गायत्री की मानस पूजा"

उपासको! शास्त्रों में मातेश्वरी गायत्री की पूजा को हज़ार गुणा अधिक महत्त्वपूर्ण बनाने के लिए एक उपाय बतलाया गया है और वह उपाय है– 'परमेश्वरी गायत्री की मानस पूजा' जिसमें भक्त अपनी आराध्य देवी को स्थूल रूप में कोई भी पूजन सामग्री नहीं चढ़ाता, बल्कि मन में ही कल्पनाओं के द्वारा सूक्ष्म रूप से सभी प्राकृतिक पूजन सामग्री निर्माण कर माँ गायत्री के चरणों में अर्पित करता है।

शास्त्रों में कहा गया है कि मातेश्वरी गायत्री को मनः कल्पित यदि एक फूल भी चढ़ा दिया जाए तो वह करोड़ों बाहरी फूल चढ़ाने के बराबर होता है। इसी प्रकार–मानस चन्दन, धूप, दीप, नैवेद्य भी भगवती को करोड़ों गुणा अधिक सन्तोष दे सकेंगे। अतः मानस पूजा बहुत अपेक्षित है।

वस्तुतः आद्याशक्ति भगवती को किसी वस्तु की आवश्यकता नहीं। वे तो भक्त की सच्ची भक्ति भावना की भूखी हैं। संसार में ऐसे दिव्य पदार्थ उपलब्ध नहीं, जिनसे परमेश्वरी को सन्तुष्ट किया जा सके। इसीलिए पुराणों में मानस पूजा को विशेष महत्त्व दिया गया है। मानस पूजा में भक्त अपनी इष्ट माता गायत्री देवी को कल्पवृक्षों से आवृत्त, कदम्ब वृक्षों से युक्त मुक्तामणि मण्डित भवन में चिन्तामणि से निर्मित सिंहासन पर विराजमान कराता है। स्वर्ग लोक की मन्दाकिनी गंगा के जल से अपने आराध्य को स्नान कराता है। कामधेनु गौ के दुग्ध से 'पंचामृत' का निर्माण करता है। वस्त्राभूषण भी दिव्य अलौकिक होते हैं। पृथ्वी रूपी गन्ध का अनुलेपन करता है। अपने आराध्य के लिए कुबेर की पुष्प वाटिका से स्वर्ण कमल पुष्पों का चयन करता है। भावना से वायु रूपी धूप, अग्नि रूपी दीपक तथा अमृत रूपी नैवेद्य भगवती को अर्पण करने की विधि है। इसके साथ ही त्रिलोक की सम्पूर्ण वस्तुएं, सभी उपचार सच्चिदानन्द धन परमेश्वरी के चरणों में भावना से भक्त अर्पण करता है। यह है मानस पूजा का स्वरूप।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

संक्षिप्त मानस पूजन विधि

उपासको! भगवती गायत्री की पूजा हो या किसी भी आराध्य देव की पूजा। यदि आपके पास पूजन सामग्री नहीं है और आप खरीदने में भी समर्थ नहीं हैं तो किसी भी दिन प्रातःकाल स्नान से पवित्र होकर, स्वच्छ वस्त्र पहनकर, पृथ्वी पर किसी स्वच्छ वस्त्र का आसन बिछाकर उस पर बैठ जाएं। अब हाथ जोड़कर आद्याशक्ति स्वरूपा पंचमुखी माँ गायत्री का ध्यान करते हुए निम्न मन्त्रों का उच्चारण करें–

(1) ॐ लं पृथिव्यात्मकं गन्धं परिकल्पयामि।

हिन्दी अनुवाद–हे माता गायत्री! मैं पृथ्वी रूप गन्ध [चन्दन] आपको अर्पित करता हूँ।

(2) ॐ हुं आकाशात्मकं पुष्पं परिकल्पयामि।

हिन्दी अनुवाद–हे पाँच मुखों वाली परमेश्वरी! मैं आकाश रूप पुष्प आपको अर्पित करता हूँ।

(3) ॐ यं वाच्वात्मकं धूपं परिकल्पयामि।

हिन्दी अनुवाद–हे जगत् जननी जगदम्बा! मैं वायुदेव के रूप में धूप आपको प्रदान करता हूँ।

(4) ॐ रं वह्नयात्मकं दीपं दर्शयामि।

हिन्दी अनुवाद–हे मातेश्वरी! मैं अग्निदेव के रूप में दीपक आपको प्रदान करता हूँ।

(5) ॐ वं अमृतात्मकं नैवेद्यं निवेदयामि।

हिन्दी अनुवाद–हे महामाया! मैं अमृत के रूप में नैवेद्य आपको निवेदन करता हूँ।

(6) ॐ सौं सर्वात्मकं सर्वोपचारं समर्पयामि।

हिन्दी अनुवाद–हे आदिशक्ति! मैं सर्वात्मा के रूप में संसार के सभी उपचारों को आपके चरणों में समर्पित करता हूँ।

संक्षिप्त मानस पूजन समाप्त

वृहद वैदिक गायत्री मानस पूजा

प्रातःकाल स्नान से पवित्र होकर माता गायत्री की तस्वीर के सामने कम्बल का आसन बिछाकर बैठ जाएं। एक अगरबत्ती तस्वीर के समक्ष जलावें। इसके पश्चात् एक लोटे में जल भर कर अपने पास रखें। अब अंजुलि में जल लेकर निम्न श्लोक का उच्चारण कर अंजुलि जल माता

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

गायत्री की तस्वीर पर छिड़क दें। क्रमानुसार नीचे लिखे हुए हर श्लोक में ऐसा ही करें–

[प्रथम श्लोक]

रत्नैः कल्पित मासनं हिम जलैः स्नानं च दिव्याम्बरम्।
नाना रत्न विभूषितं मृगमदा मोदाङ्कितं चन्दनम्॥
जाती चम्पक बिल्वपत्र रचितं पुष्पं च धूपं तथा।
दीपं देवि दयानिधे गायत्रि हत्कल्पितं गृहयन्ताम्॥

हिन्दी अनुवाद–हे देवी दयानिधे! हे गायत्री! यह रत्नों से निर्मित सिंहासन, शीतल जल से स्नान, नाना रत्नावली विभूषित दिव्य वस्त्र, कस्तूरी का गन्ध समन्वित चन्दन, जूही-चम्पा और बिल्वपत्र से रचित पुष्पांजलि तथा धूप और दीप ये सब मानसिक पूजोपहार ग्रहण कीजिए।

नोट :–जो उपासक संस्कृत मन्त्र नहीं पढ़ सकते हैं, वे 'हिन्दी अनुवाद' पढ़कर पूजन का सम्पूर्ण लाभ उठा सकते हैं।

[द्वितीय श्लोक]

सौवर्णे नवरत्नखण्ड रचिते पात्रे घृतं पायसं।
भक्ष्यं पञ्चविधं पयोदधि युतं रम्भाफलम् पानकम्॥
शाकानाम युतं जलं रूचिकरं कर्पूरखण्डोजज्वलम्।
ताम्बूलं मनसा मया विरचितं भक्त्या माते स्वीकुरू॥

हिन्दी अनुवाद–हे पाँच मुखों वाली भवानी! मैंने नवीन रत्न खण्डों से रचित सुवर्ण पात्र में घृत युक्त खीर, दूध और दधि सहित पाँच प्रकार का व्यंजन, कदली फल, शर्बत, अनेकों शाक, कपूर से सुवासित किया और स्वच्छ किया हुआ मीठा जल और ताम्बूल ये सब मन के द्वारा ही बनाकर प्रस्तुत किये हैं, माते! कृपया इन्हें स्वीकार कीजिए।

[तृतीय श्लोक]

छत्र चामरयोर्युगं व्यजनकं चादर्शकं निर्मलं।
वीणा भेरि मृदगकाहलकला गीतं च नृत्यं तथा॥
साष्टांग प्रणतिः स्तुतिर्वहुविधा ह्वेतसमस्तं मया।
संकल्पेण समर्पितं तव विभो पूजां गृहाण मातेश्वरि॥

हिन्दी अनुवाद–छत्र, दो चँवर, पंखा, निर्मल दर्पण, वीणा, भेरी, मृदंग, दुन्दुभि वाद्य, गान और नृत्य साष्टांग प्रणाम, नानाविध स्तुति–ये सब मैं संकल्प से ही आपको समर्पण करता हूँ। मातेश्वरी! मेरी यह पूजा ग्रहण कीजिए।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

[चतुर्थ श्लोक]

आत्मा त्वं गिरिजा मतिः सहचराः प्राणाः शरीरं गृहं।
पूजाते विषयोपभोग रचना निद्रा समाधि स्थितिः॥
सञ्चारः पदयोः प्रदक्षिणविधिः सतोत्राणी सर्वा गिरो।
यद्यतकर्म करोमि तत्तदिखिलं दयानिधे तवाराधनम्॥

हिन्दी अनुवाद—हे दयानिधे! मेरी आत्मा आप हैं, बुद्धि भी आप हैं। प्राण आपके गण हैं, शरीर आपका मन्दिर है। सम्पूर्ण विषय भोग की रचना आपकी पूजा है। निद्रा समाधि है। मेरा चलना फिरना आपकी परिक्रमा है तथा सम्पूर्ण शब्द आपके स्तोत्र हैं। इस प्रकार मैं जो-जो भी कर्म करता हूँ—वह सब आपकी ही आराधना है।

[पंचम् श्लोक]

करचरणकृतं वाक्कायजं कर्मजं वा।
श्रवण नयनजं वा मानसं वापराधम्॥
विहित मविहितं वा सर्व मेतत्क्षभस्व
जय-जय करुणाब्धे देवि भक्तवत्सला गायत्रि॥

हिन्दी अनुवाद—माते! मैंने हाथ, पैर, वाणी, शरीर, कर्म, कर्ण, नेत्र अथवा मन से जो भी अपराध किये हों, वे विहित हों अथवा अविहित, उन सबको आप क्षमा कीजिए।

हे करूणासागरी! हे भक्तवत्सला माँ गायत्री! आपकी जय हो!!!

[इति श्री गायत्री मानस पूजा सम्पन्न]

मानस पूजा से लाभ

उपासको! मानस पूजा में जितना समय लगता है उतना भगवती के सम्पर्क में बीतता है और तब तक संसार उससे दूर हटा रहता है। अपने आराध्य देवी के लिए बढ़िया से बढ़िया रत्नजड़ित आसन सुगन्ध की बौछार करते हैं। दिव्य फूल की वह कल्पना करता है और उसका मन वहाँ से दौड़कर उन्हें जुटाता है। इस तरह मन को दौड़ने की और कल्पनाओं की उड़ान भरने की इस पद्धति में पूरी छूट मिल जाती है। इसके दौड़ने के लिए क्षेत्र भी बहुत विस्तृत है। इस दायरे में अनन्त ब्रह्माण्ड ही नहीं, अपितु इसकी पहुँच के परे गोलोक, साकेत लोक, सदाशिव लोक भी आ जाते हैं। अपने आराध्य महामाया को इसे आसन देना है। वस्त्र और आभूषण पहनाना है। चन्दन लगाना है। मालाएँ पहनानी हैं, धूप-दीप दिखलाना है और नैवेद्य निवेदित करना है। इन्हें जुटाने के लिए उसे इन्द्रलोक से

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ब्रह्मलोक तक दौड़ लगाना है। पहुँचे या न पहुंचे, किन्तु अप्राकृतिक लोकों के चक्कर लगाने से भी वह नहीं चूकता, ताकि उत्तम साधन जुट जाये और जगदम्बा की अद्‌भुत सेवा हो जाए। इतनी दौड़-धूप से लायी गई वस्तुओं को आराधक जब भगवती के सामने रखता है, तब उसे कितना सन्तोष मिलता होगा? उसका मन तो निहाल ही हो जाता होगा।

इस तरह पूजा सामग्रियों के जुटाने में और भगवती के लिए उनका उपयोग करने में साधक जितना भी समय लगा पाता है, उतना समय वह अन्तर्गत में बिताता है। इस तरह मानस पूजा साधकों को समाधि की ओर अग्रसर करती रहती है और पूजन का रसास्वादन भी करती रहती है।

सर्वकामना प्राप्ति हेतु मातेश्वरी गायत्री का "वैदिक षोड़शोपचार पूजन"

उपासको! वेदों और शास्त्रों में मातेश्वरी गायत्री को प्रसन्न करने हेतु सर्वमनोवांछित कामना पूर्ति हेतु उपासना विधि में सर्वोत्तम उपासना विधि 'षोड़शोपचार पूजन' को माना गया है।

'षोड़शोपचार पूजन' का अर्थ होता है–सोलह उपचारों द्वारा पूजन विधि सम्पन्न करना। ये सोलह उपचार हैं–1. आवाहन 2. आसन 3. पाद्य 4. अर्घ्य 5. आचमनीय 6. स्नान 7. वस्त्र 8. यज्ञोपवीत 9. गन्ध 10. पुष्प-दूर्वा-माला आदि 11. धूप 12. दीप 13. नैवेद्य 14. ताम्बूल 15. आरती-प्रदक्षिणा और 16. पुष्पांजलि।

पूजन सामग्री

पाँच मुखों वाली माता गायत्री प्रतिमा या तस्वीर, सिंहासन, पंचपात्र, अरघी, मिट्टी का कलश, घण्टी, पाँच बत्ती वाला आरती स्टैण्ड, कम्बल या कुशा आसन, दीपक अभिषेक पात्र, भगोने [मिट्टी की ढकनी] गिलास, थाली, कटोरी, पान, सुपारी, अक्षत [चावल] तिल, जौ, मिठाई, चम्मच, रुद्राक्ष की माला, चन्दन, माता का सम्पूर्ण वस्त्र [जो लाल हो] व आभूषण, प्रतिमा को पोंछने हेतु लाल कपड़ा, चन्द्रोटा, शंख, गंगाजल, केशर, बिल्वपत्र, पुष्प व पुष्पमाला, तुलसी दल, दूर्वा, सात रंग के गुलाल, सिन्दूर, अगरबत्ती, रूई, माचिस, गाय का कच्चा दूध, दही, देसी शुद्ध घी, शहद, गुड़, गुलाब जल, गन्ने का रस, पानी वाला नारियल, नारियल का पानी, जल, श्रृंगार की वस्तुए, लौंग, इलायची, पंचमेवा, आम का पल्लव, केले का पत्ता, हवन सामग्री, पंचरत्न, मौली, रोली चन्दन, यज्ञोपवीत, समयानुसार फल, सात रंगों

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

में रंगाया चावल, आम की सूखी लकड़ी, पुरोहित एवं यजमान का श्वेत नवीन वस्त्र भेंट में देने के लिए द्रव्य, कलश हेतु सालूक [लाल कपड़े], सूखा नारियल हवन हेतु, गाय का गोबर आदि।

पूजन आरम्भ विधि

यजमान और पुरोहित दोनों ही स्नान से पवित्र होकर श्वेत धोती पहनें। शरीर के ऊपर श्वेत चादर रख लें। तत्पश्चात् पूजन स्थल पर गंगाजल छिड़क कर पूजन की सभी सामग्री अपने समीप एकत्रित कर लें। फिर आम लकड़ी से बना सिंहासन स्थापित करें। सिंहासन पर भी गंगाजल छिड़क दें। इसके बाद सिंहासन पर भगवती की तस्वीर या प्रतिमा स्थाति करें। तत्पश्चात् कम्बल या कुशा आसन पर पुरोहित उत्तरमुख होकर और यजमान पूर्व दिशा की ओर मुख करके बैठें। सुगन्धित अगरबत्ती एवं धूप तथा गाय के घी का चौमुखी दीपक जलावें। पूजन आरम्भ से पहले यजमान अपने सिर पे स्वच्छ रूमाल रख लें।

इसके बाद सर्वप्रथम दाहिने हाथ की अंजुलि में गंगाजल लेकर निम्न मन्त्र पढ़ें और मन्त्र समाप्ति के पश्चात् अंजुलि का जल शरीर पर छिड़क लें।

शरीर पवित्र करने का मन्त्र

ॐ अपवित्रः पवित्रोवा सर्वावस्थां गतोऽपिवा।
यः स्मरेत पुण्डरी-काक्षं स वाह्यभ्यंतरः शुचि॥
ॐ पुण्डरी-काक्षसं पुनातु॥

हिन्दी अनुवाद—कोई पवित्र हो, अपवित्र हो अथवा किसी भी अवस्था में क्यों न हो, जो पुण्डरीकाक्ष [भगवान विष्णु] का स्मरण करता है, वह बाहर और भीतर से भी परम पवित्र हो जाता है। अतः हे ऊँ रूप पुण्डरीकाक्ष हमें पवित्र करें।

नोट :—अब निम्न मन्त्र का उच्चारण करके कुशा की पवित्री [अंगूठी] अथवा स्वर्ण की मुद्रिका दाहिने हाथ में अंगूठे से चौथी उंगली में धारण करें।

पवित्री धारण मन्त्र

ॐ पवित्रे स्थो वैष्णव्यो सवितुर्वः प्रसव उत्पुणा-
म्याच्छिद्रेण पवित्रेण सूर्यश्य रश्मिभिः।
तस्यते पवित्र पते पूतरस्य यत्कामः पुणे तच्छकेचम्॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

नोट—अब पुरोहित यजमान के हाथ [पुरुष की दाहिनी कलाई, औरत हो तो बांई कलाई] में रक्षा सूत्र [मौली] निम्न मन्त्र पढ़कर बाँध दें।

रक्षा सूत्र बन्धन मन्त्र

ॐ मंगलम भगवान विष्णु मंगलम गरुड़ध्वजः।
मंगलम पुण्डरी काक्ष मंगलाय च तनो हरिः॥

नोट—अब पुरोहित यजमान को नीचे लिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए मस्तक, दोनों बाजू, सीना और कण्ठ पर चन्दन लगावें।

यजमान मस्तक चन्दन लेपन मन्त्र

ॐ चन्दनं वन्दिते चन्द्रनस्य महत्व-पुण्यं, पवित्र पाप नाशनम्।
आपदं हरते नित्यं, लक्ष्मी स्तिस्थि सर्वदा॥

नोट—अब निम्न मन्त्र पढ़कर शिखा बाँधें।

शिखा बन्धन मन्त्र

ॐ मानस्तोके तनयेमानङ्ग आयुषि मानौ,
गोषु मानोऊ अश्वेषु रीरिंषः।
मानो विरान भामिनो वधीर्ह है विष्मन्तः सदमित्वा हवामहे॥

नोट—अब दीपक की पूजा करें। दीपक की पूजा करने से पूर्व दीपक के नीचे चावल रख दें और दीप प्रतिमा की दाहिनी ओर स्थापित करें।

प्रज्जवलित दीप पूजन मन्त्र

"ॐ दीप ज्योतिषे नमः"

नोट—यह मन्त्र मुख से पढ़कर जल [गंगा जल मिश्रित] अक्षत, पुष्प, चन्दन, बिल्वपत्र और नैवेद्य दीपक के पास चढ़ावें। फिर दीप की ज्योति में मातेश्वरी गायत्री की ज्योतिर्मय रूप की भावना करते हुए, कर जोड़ कर यह श्लोक बोलें—

प्रज्जवलित दीप प्रार्थना मन्त्र

भो दीप गायत्रि स्वरूपं कर्म-साक्षी ह्वाविघ्नकृत।
यावम कर्म समाप्तिः स्यात् तावत त्वं सुस्थिरोभव॥

नोट—हे दीप! आप ज्योतिर्मय गायत्री स्वरूप हैं, कर्म के साक्षी तथा

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

विघ्न के निवारक हैं। जब तक पूजन कर्म पूरा न हो जाये, तब तक आप सुस्थिर भाव से सन्निकट रहें।

नोट—इसके पश्चात् निम्न मन्त्रों को पढ़कर 'आचमन' करें। आचमन करने की प्रक्रिया में दाहिनी हथेली के बीच में पाँच कतरा [बूँद] जल लें और उसे ओठों में लगाएं। यह जल कण्ठ के भीतर नहीं जाना चाहिए।

'आचमन' निम्न मन्त्रों से क्रमशः तीन बार करें–

आचमन मन्त्र

ॐ केशवाय नमः। ॐ नाराणाय नमः। ॐ माधवाय नमः।

तत्पश्चात् अन्तिम आचमन–

ॐ हृषिकेशवाय नमः॥

नोट—अब दाहिनी अंजुलि में जल लेकर नीचे लिखित मन्त्र का उच्चारण करें। उच्चारण समाप्त होते ही जल पूजा स्थल की भूमि पर छिड़क दें।

पृथ्वी पवित्री मन्त्र

ॐ अपर्सषन्तु ये भूता ये भूता भूवि संस्थिता।
ये भूता विघ्नकर्ता-रस्ते-नश्यन्तु शिवाज्ञया॥

नोट—इसके पश्चात् भगवान श्रीगणेश का ध्यान करें। किसी भी पूजन में सर्वप्रथम शुभता के दाता श्रीगणेश जी की पूजा व ध्यान की जाती है, तभी कोई भी पूजा-पाठ व उपासना में सफलता मिलती है। हाथ जोड़कर निम्न श्लोक का ध्यान करें–

श्रीगणेश आराधना मन्त्र

ॐ विश्वेश माधवं ढुण्ढि-दण्डपाणि।
वंदे काशी गुह्या गंगा भवानी मणिक कीर्णकाम्॥
वक्रतुण्ड महाकाव्य कोटि सूर्य सम्प्रभम्।
सुविघ्न कुरू मे देव सर्व-कार्येषु सर्वदा॥
सुमखश्यै-कन्तस्य कपिलो गजकर्णकः।
लम्बोदरस्य विकटो विघ्ननाशो विनायकः॥
धूम्रकेतु गणाध्यक्ष तचो भालचन्द्रो गजाननः।
द्वादशै-तानि नमामि च पठेच्छणु-यादपि॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

विद्यारम्भे विवाहे च प्रवेशे निर्गमे तथा।
संग्रामे संकटे चैव विघ्नस्तस्य न जायते॥
शुक्लां वर धरं देवं शशि-वर्ण चतुर्भुजम्।
प्रसन्न वदनं ध्यायते सर्व-विघ्नोप शान्तये॥
अभित्सतार्थ सिद्धयर्थं पूजितो य सुरेश्वरः।
सर्व विघ्नच्छेद तस्मै गणाधिपतये नमः॥

हिन्दी अनुवाद—हे विश्वनाथ! माधव, ढुण्ढिराज, गणेश, दण्डपाणि, भैरव, काशी, गुह्या, गंगा तथा भवानी कर्णिका का मैं वन्दना करता हूँ। टेढ़ी सूंड़ वाले गणपति देव! आप सदैव समस्त कार्यों में मेरे विघ्नों का निवारण करें।

सुमुख, एकदन्त, कपिल, गजकर्ण, लम्बोदर, विकट, विघ्न-नाशक, विनायक, धूम्रकेतु, गणाध्यक्ष, भालचन्द्र और गजानन—ये विवाह, गृह, प्रवेश, यात्रा संग्राम तथा संकट के अवसर पर इन बारह नामों का पाठ व श्रवण जो करता है, उनके कार्य में विघ्न उत्पन्न नहीं होता है।

शक्ल धारण करने वाले चन्द्रमा के समान गौर, चार भुजाधारी और प्रसन्न मुख वाले गणपति देव! मैं आपका ध्यान करता हूँ, आप हमारे सम्पूर्ण विघ्नों को शान्त करें।

देवताओं और असुरों ने भी अभीष्ट सिद्धि के लिए जिनकी पूजा की है, जो विघ्न-बाधाओं के हरने वाले हैं, उन गणपति जी को नमस्कार है।

नोट—अब आप 'स्वस्ति वाचन' के पाँच मन्त्र पढ़ें। इस मन्त्र का उच्चारण करते समय उपासक हाथ में चावल लेकर दो-चार दाने कर पूजा स्थल के सिंहासन पर छिड़कते जाएं। यह चावल तब तक छिड़कते रहें, जब तक सम्पूर्ण मन्त्र पढ़कर पूर्ण न कर लें।

स्वस्ति वाचनम् के पाँच मन्त्र

[पहला मन्त्र]

ॐ स्वस्तिनः इन्द्रो वृद्धश्रवा स्वस्तिनः पूषा विश्ववेदाः।
स्वस्तिन स्ताक्षर्यो अरिष्ट-नेमिः स्वस्तिनः बृहस्पतिर्दधातु॥

हिन्दी अनुवाद—अत्यन्त यशस्वी इन्द्र हमारा कल्याण करने वाले हों। जिनके संकट नाशक चक्र को कोई रोक नहीं सकता। वह परमात्मा गरुड़ और बृहस्पति हमारा कल्याण करें। [य.वे. 25/19 से प्राप्त]

[दूसरा मन्त्र]

पचः पृथिव्यां पचः औषधिषु पयो दिव्यन्त।
रिक्षे पयोधाः पश्यवतिः प्रदिशाः सन्तु मह्यम्॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

हिन्दी अनुवाद—हे अग्ने! तुम पृथ्वी में रस को धारण करो। औषधि में रस की स्थापना करो। स्वर्ग और अन्तरिक्ष में भी रस को स्थापित करो। मेरे लिए दिशा-प्रदिशा सभी रस देने वाले हों।

[य.वे. 18/39 से प्राप्त]

[तीसरा मन्त्र]

ॐ द्यौः शान्तिः अन्तरिक्षग्वं शान्तिः पृथिवी शान्तिः रापः शान्ति रोषधयः शान्तिः शान्ति-र्वनस्पतयः शान्तिः विश्वदेवाः शान्तिः स्र्वग्वं शान्तिः शान्ति रेव शान्तिः सामा शान्तिः शान्ति रेधि। सुशान्ति-र्भवतु॥

हिन्दी अनुवाद—स्वर्ग, अन्तरिक्ष और पृथ्वी शान्त रूप हो। जल, औषधि, वनस्पति, विश्व देवता, ब्रह्म-रूप ईश्वर, सब संसार शान्ति-रूप हो। जो साक्षात् शान्ति हैं, वह भी मेरे लिए शान्ति देने वाली हो।

[य.वे. 36/17 से प्राप्त]

[चौथा मन्त्र]

इमा रुद्राय तवसे कपर्दिने क्षयद्विराय प्रभरामहेमतिः।
यथा शमशादि द्विपदे चतुष्पदे विश्वं पुष्टं ग्रामे अस्मिन् नातुश्म्॥

हिन्दी अनुवाद—पुत्रादि मनुष्यों में जैसे कल्याण की प्राप्ति हो और इस ग्राम के मनुष्य उपद्रव से रहित हों, उसी प्रकार मैं अपने श्रेष्ठ मतियों को जटाधारी रुद्र के निमित अर्पित करता हूँ। [य.वे. 16/48 से प्राप्त]

[पाँचवां मन्त्र]

ॐ गणानांत्वा गणपतिग्वं हवामहे प्रियानांत्वा प्रियपतिग्वं हवामहे निधिनांत्वा निधिपतिग्वं हवामहे वसोमम आहम जानि -गर्भद मात्व मजासि गर्भधम।

हिन्दी अनुवाद—हे गणपति! तुम सब गणों के स्वामी हो, हम तुम्हें आहुत करते हैं। प्रियों के मध्य निवास करने वाले प्रियों के स्वामी हम तुम्हें आहुत करते हैं। हे निधियों के मध्य निवास करने वाले निधिपते! हम तुम्हें आहुत करते हैं। तुम श्रेष्ठ निवास करने वाले रक्षक होओ। हम गर्भ धारण जल को सब प्रकार से आकर्षित करते हैं, तुम गर्भ धारण करने वाले को अभिमुख करते हो। तुम सब पदार्थों के रचयिता होते हुए सब प्रकार से अभिमुख होते हो। [य.वे. 23/19 से प्राप्त]

नोट—अब पूजन का संकल्प करें। इस सन्दर्भ में दाहिनी हथेली पर पान, सुपारी, द्रव्य, गंगाजल, अक्षत, पुष्प, तिल लेकर निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करें! संकल्प मन्त्र के मध्य जहाँ भी 'अमुक' शब्द का उच्चारण किया गया है, वहाँ क्रमशः नगर, ग्राम, स्थान, मास, तिथि, नक्षत्र, योग, वार, गोत्र आदि का नाम उच्चारण करें। संकल्प मन्त्र उच्चारण पूर्ण होने के

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पश्चात् हथेली की वस्तुएं भगवती के सिंहासन पर अर्पित कर दें।

पूजन संकल्प मन्त्र

हरि ॐ तत्सत्! ॐ विष्णु र्विष्णु र्विष्णु नमः परमात्मने श्री पुराण-पुरुषोत्माय श्रीमद् भगवते महापुरुषस्य विष्णो-राज्ञया प्रर्वतमानस्य अद्य श्री ब्राह्मणोह्विं द्वितीय प्रहरार्द्धे, श्री श्वतवाराह कल्पे वैवस्वत मनवन्तरे अष्टा विशतितमे युगे कलियुगे कलि-प्रथम चरणे भूर्लोक जम्बू-द्विपे भारतवर्षे भरतखण्डे आर्यवर्त-देशे 'अमुक' नगरे 'अमुक' ग्रामे 'अमुक' स्थाने, वा वोद्धावतारे 'अमुक' नाम, संवत्सरे श्री सूर्य अमुकायेन अमुक तौ महामांगल्य-प्रद मासोत्तमे मासे 'अमुक' मासे, 'अमुक' पक्षे, 'अमुक' तिथौ, 'अमुक' नक्षत्रै, 'अमुक' वासरे, 'अमुक' योगे, 'अमुक' करणे, 'अमुक' राशि स्थित देव गुरौ शेषेसु ग्रहेषु च यथा अमुक शर्मा महात्मनः मनोकामना पूर्ति, विद्या-बुद्धि-ज्ञान-प्रगति-सफलता हेतु, धन-जन-सुख-सम्पदा, प्रसन्नता, परिवार सुख शान्ति, ग्राम सुख शान्ति हेतु श्री गायत्रि सहित सर्वदेवता पूजन, कलश स्थापन, हवन कर्म, आरती कर्म अहम् करिष्येत्।

हिन्दी अनुवाद—इसके पश्चात् भगवान विष्णु का पूजन करें। इस सन्दर्भ में केले के पत्ते पर सिंहासन के दाहिनी तरफ पाँच पान के पत्ते, पाँच सुपारी और नैवेद्य रखें और उसी पर भगवान विष्णु की पूजा करें। इस क्रम में सर्वप्रथम दाहिने हाथ की अंजुलि में जल लेकर निम्न मन्त्र पढ़ें। मन्त्र समाप्ति के बाद जल पान के पत्ते पर रख दें। इसी प्रकार क्रमशः अक्षत, तिल, चन्दन, बिल्वपत्र, पुष्प, तुलसी पत्ते, नैवेद्य और पुनः जल से पूजन करें।

भगवान विष्णु का पूजन

गंगाजल से :-

ॐ गंगाजले स्नानियम भगवते श्री विष्णवे नमः।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अक्षत से :-

इदं अक्षतम् समर्पयामि भगवते श्री विष्णवे नमः।

तिल से :-

एते तिला समर्पयामि भगवते श्री विष्णवे नमः।

चन्दन से :-

इदम् चन्दनम् लेपनम् समर्पयामि भगवते श्री विष्णवे नमः।

बिल्वपत्र से :-

इदम् बिल्व-पत्रानियम समर्पयामि भगवते श्री विष्णवे नमः।

पुष्प से :-

इदम् पुष्पम समर्पयामि भगवते श्री विष्णवे नमः।

नैवेद्य से :-

इदम् नैवेद्यं समर्पयामि भगवते श्री विष्णवे नमः।

पुनः गंगाजल से :-

एतानि गंध-पुष्प-धूप-दीप-ताम्बुल यथा भाग नैवेद्यानि भगवते श्री विष्णवे नमः।

नोट–उपरोक्त विधि और मन्त्र से ही 'पंचदेवता' का पूजन उसी स्थान पर करें। पूजन के अन्तर्गत जहाँ 'विष्णवे नमः' शब्द कहा गया है उस स्थान पर 'पंचदेवता नमः' शब्द उच्चारण करें।

पंचदेवता पूजन समाप्त होने के पश्चात् 'भगवती गायत्री' की कलश स्थापना करें।

माता गायत्री कलश स्थापना विधि और कलश पूजन

उपासको! सर्वप्रथम सतरंगे चावल या गुलाल से माता के सिंहासन के आगे पूजा स्थान पर अष्टदल कमल बनावें। तत्पश्चात् शुद्ध मिट्टी या जौ का थड़ा बनावें। उस थड़े के मध्य सिन्दूर से पाँच तिलक किया हुआ जल से भरा घड़ा रखें। उसके बाद कलश के पेंदे के पास हाथ रखकर यह मन्त्र पढ़ें–

कलश-भूमि स्पर्श मन्त्र

ॐ भूरसि भूमिरस्य दितिरसि विश्वछांया विश्वस्य भुवनस्य धत्रीं पृथिवीं दुखहिं पृथिवीं मांहिसी।

नोट–इसके पश्चात् कलश के मुख को दाहिनी हथेली से बन्द करके

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

निम्नलिखित मन्त्र पढ़ें–

ॐ वरुणस्यो त्तम्भ वरुणस्य-स्कम्भसार्जनीस्थां-वरुणस्य ऋत-सदन्यसि वरुणस्य ऋत-सदनमीस वरुणस्य ऋत-सदन-मासीद्।

नोट–अब कलश में सर्वोसधि डालें–

कलश सर्वोसधि समर्पण मन्त्र

ॐ या औषधि पूर्वाजाता देवेभ्यः स्वियुगमपुरा।
मनैनुव-भ्रणा-महग्वंशतन्धा-मणि सप्त च॥

नोट–अब कलश में दूर्वा [घास] डालें–

कलश दूर्वादल समर्पण मन्त्र

ॐ काण्डात-काण्डात प्ररोहन्ति पुरुषः पुरुषपरिः।
एवानो दूर्वे-प्रतनु सहस्त्रेण शतेन च॥

नोट–अब कलश में 'पंचरत्न' डालें–

कलश पंचरत्न समर्पण मन्त्र

ॐ परिवाज पतिः कविरग्निः हैव्यान्य-क्रमी-दधद्रत्नानि दाशुषे।

नोट–अब कलश में पुंगीफल [सुपारी] डालें–

कलश पुंगीफल समर्पण मन्त्र

ॐ या फलिनीयां अफलां अपुष्पा याक्य पुविषणीः।
बृहस्पतिः प्रसुता-स्तानो मुञ्चं त्वग्वं हसः॥

नोट–अब कलश में सुवर्ण या द्रव्य डालें–

कलश द्रव्य समर्पण मन्त्र

ॐ हिरण्य-गर्भःसमवर्त्त-ताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत्।
स दाधार पृथिवीद्या भुतोमाङ्ग कस्मै देवाय हविषा विधेम्॥

नोट–अब कलश में 'आम का पल्लव' डालें–

कलश आम्रपल्लव समर्पण मन्त्र

ॐ अम्बे अम्बिके अम्बालिके नमानयंति कस्यद्।
किंजिद वासिनं कलशं दधात्॥

नोट–अब कलश पे पानी वाला नारियल रखें–

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कलश श्रीफल समर्पण मन्त्र

ॐ श्रीश्चते लक्ष्मीश्य पत्न्यां ब्रहोरात्रो पाश्वे नक्षत्राणि-
रूप मश्विनो व्याप्तम।
इष्यान्नि षाणां मुम्म इषाण सर्व लोकम्प ईषाण॥

नोट—अब कलश पे लाल वस्त्र एवं मौली लपेटें-

कलश वस्त्र समर्पण मन्त्र

ॐ वस्त्रो पवित्रमसि शतधारं वसो पवित्र मसि सहस्त्र धारम्।
देवस्त्वा सविता पुनातु वसोः पवित्रेण शतधारेण सुत्वा काम धुक्षः॥

नोट—अब कलश के साथ गाय का गोबर स्पर्श करावें-

कलश गाय-गोबर-स्पर्श मन्त्र

ॐ मानस्तोषे तनयेमान आयुष्मान व्यर्दि-वृविषः।
सदमित्वा हवामहे इति गोमयेन् कलश स्पर्शयेत॥

नोट—अब कलश पे 'जल देवता' वरुण देव का आवाहन करें। इस क्रम में सटे हुए दोनों तलहथी [हाथ की तरत्थी] कलश के सामने करें और नीचे लिखित मन्त्र का उच्चारण करें-

श्री 'वरुण देव' आवाहन मन्त्र

ॐ तत्वा-यामि ब्रह्मणा वन्दमानस्त यजमानो हविर्भिः।
अहेऊ मानो वरुणोह वोध्यु-षग्वं आयुः प्रमोषिः॥
ॐ भूभुर्वः स्वः भो वरुण इहतिष्ठ स्थापयामि पूजयामि॥

नोट—इसके पश्चात् सम्पूर्ण तीर्थों एवं नदियों का कलश पे आवाहन करें-

सम्पूर्ण तीर्थ एवं नदियों का आवाहन मन्त्र

ॐ सर्वे-समुद्रा सरितसं तिर्थानी जलदा नदाः-
आयान्तु देविः पूजार्थ दुरि-तक्ष्कारकाः।
कलशस्य मुखे विष्णुः कण्ठे रूद्रः समाश्रितः॥

नोट—अब निम्न मन्त्र पढ़ते हुए कलश पर अक्षत [चावल] छिड़कें।

कलश प्राण-प्रतिष्ठा मन्त्र

ॐ मनोज्योर्ति-जुषता भाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञामिवं तनो-
त्वरिष्टं यज्ञ सीममं दधातु।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

विश्व-देवास इह गायत्रि सर्व देव सर्व देवी माद-
यन्तामे इह प्रतिष्ठ्॥

विशेष नोट–अब कलश पर वरुण देव, नवग्रह, इष्ट देवता, ग्राम देवता, इन्द्रादिक-दस्तिकपाल, कुल देवता, कुबेर, महालक्ष्मी, नवदुर्गा, महाकाली, बगलामुखी, दस महाविद्या, राम-लक्ष्मण-सीता, राधा-कृष्ण, भगवान शिव-गौरी, हनुमान और माता गायत्री के अंशावतार 24 देव तथा देवियों का पूजन करें।

इन उपरोक्त देवी-देवताओं का पूजन उसी प्रकार करें, जिस प्रकार पीछे 'भगवान विष्णु' का पूजन किया गया है।

इसके पश्चात् मातेश्वरी गायत्री का षोड़शोपचार पूजन आरम्भ करें। इस क्रम में सर्वप्रथम दोनों तलहथी मातेश्वरी गायत्री के सिंहासन के सामने पसारकर मन्त्रोच्चारण करें।

माता गायत्री आवाहन मन्त्र

ॐ सहस्त्र शीर्षाः पुरुषः सहस्त्राक्षः सहत्र पातस-
भूमिग्वं सव्वेत-स्तपुत्वा ऽयतिष्ठ दर्शागुलाम्।
आगच्छ गायत्रि देवि स्थाने-चात्र स्थिरो भव॥
यावत्पूजां करिष्यामि तावत्वं सिन्धौर भव।
ॐ भगवती श्री गायत्री देव्यै आवाहयामि स्थापयामि॥

नोट–अब सिंहासन पर बिछे वस्त्र का स्पर्श करते हुए यह मन्त्र उच्चारण करें–

माता गायत्री आसन समर्पण मन्त्र

ॐ विचित्र रत्न-खचितं दिव्या-स्तरण-संयुक्तम्।
स्वर्ण-सिंहासन चारु गृहिष्व गायत्रि माँ पूजितः॥

हिन्दी अनुवाद–हे गायत्री माँ! यह सुन्दर स्वर्णमय सिंहासन ग्रहण कीजिए। इसमें विचित्र रत्न जड़े गए हैं तथा इस पर दिव्य बिस्तर बिछा हुआ है।

नोट–अब हाथ की अंजुलि में जल लेकर निम्न मन्त्र पढ़ें। मन्त्र समाप्त होते ही जल सिंहासन पर छोड़ दें।

पाद्य जल समर्पण मन्त्र

ॐ सर्वतीर्थ समुदभूतं पाद्यं गन्धादि-भिर्युतम्।
अनिष्ट-हर्ता गृहाणेदं भगवती भक्त-वत्सला॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ॐ श्री गायत्री देव्यै नमः। पादयोः पाद्यं समर्पयामि॥

हिन्दी अनुवाद—हे भक्तवत्सला! यह सारे तीर्थों के जल से तैयार किया गया तथा चन्दन आदि से मिश्रित 'पाद्य जल' पैर पखारने हेतु ग्रहण करें।

नोट—अब अरघी से चन्दन युक्त जल सिंहासन पर निम्न मत्र उच्चारण कर समर्पित करें।

अर्घ्य समर्पण मन्त्र

ॐ गायत्रि देवि नमस्ते-स्तु गृहाणु करुणाकरी।
अर्यं च फलं संयुक्तं गंधमाल्या-क्षतैयुतम्॥

हिन्दी अनुवाद—हे करुणामयी महामाया गायत्री! आपको नमस्कार है। आप गन्ध, पुष्प अक्षत और फलादि रसों से युक्त यह अर्घ्य स्वीकार करें।

नोट—अब निम्न मन्त्र उच्चारण करते हुए अरघी से तीन बार जल सिंहासन पर छोड़ें।

आचमन मन्त्र

करूणाकरी गायत्रि नमस्तुभ्यं त्रिदशै-रभिवन्दित।
गंगोदकेन देवशि कुरूष्वा-यमनं भगवती॥

हिन्दी अनुवाद—हे दयालु! देव-वन्दित भगवती! आपको नमस्कार है। आप गंगाजल से आचमन करें।

नोट—इसके पश्चात् अरघी में दूध भरकर माता गायत्री देवी की प्रतिमा को स्नान करावें। इस क्रम में थोड़ा-सा दूध अरघी के द्वारा प्रतिमा के चरणों पर डालें।

दुग्ध-स्नान मन्त्र

कामधेनु समुदभुतं सर्वेषां जीवनं परम्।
पावनं यज्ञ-हेतुश्चः पयः स्नानार्थम-समर्पितम्॥

हिन्दी अनुवाद—हे माते! कामधेनु के थन से निकला सबके लिए पवित्र जीवनदायी तथा यज्ञ के हेतु यह दुग्ध आपके स्नान के लिए अर्पित है।

नोट—अब अरघी में दही लेकर माता को स्नान करावें—

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

दधि स्नान मन्त्र

पयस्तु 'गायत्रि' समुदभूतं मधुराम्लं शशि प्रभम्।
दध्या-नीतं मया स्नानार्थं प्रति-गृहयन्ताम्॥

हिन्दी अनुवाद—हे गायत्री रूपी माँ! यह दूध से निर्मित मीठा-खट्टा, चन्द्र के समान उज्ज्वल दधि [दही] ले आया हूँ। आप इससे स्नान करें।

नोट—इसके पश्चात् माता गायत्री को गाय के घी से स्नान करावें—

घृत-स्नान मन्त्र

नवनीतं समुत्पन्नं सर्व-संतोष-कारकम्।
घृतं तुभ्यं प्रदस्यामि स्नानार्थं प्रति-गृहयेन्ताम्॥

हिन्दी अनुवाद—हे जगदम्बे! मक्खन से उत्पन्न तथा सबको सन्तुष्ट करने वाला यह घृत मैं आपको अर्पित करता हूँ, इससे स्नान करें।

नोट—अब शहद से स्नान करावें—

शहद स्नान मन्त्र

पुष्प-रेणु समुदभूतं सुस्वादु मधुरं मधु।
तेज पुष्टिकरं दिव्यं स्नानार्थं प्रति-गृहयन्ताम्॥

हिन्दी अनुवाद—हे आद्याशक्ति स्वरूपा माँ गायत्री! पुष्प के पराग से उत्पन्न, तेज की पुष्टि करने वाला दिव्य स्वादिष्ट मधु आपके समक्ष प्रस्तुत है, इसे स्नान के लिए ग्रहण करें।

नोट—इसके पश्चात् गन्ने के रस से स्नान करावें—

शर्करा-स्नान मन्त्र

इक्षुसार समुदभूतं शर्करा पुष्टि वा शुभा।
मलाप-हारिका दिव्या स्नानार्थं प्रति-गृहयन्ताम्॥

हिन्दी अनुवाद—हे मातेश्वरी! ईख के सार तत्व से यह शर्करा रस निर्मित है, जो पुष्टिकारक, शुभ तथा मैल को दूर करने वाली है। आपकी सेवा में प्रस्तुत है। इसे स्नान हेतु ग्रहण करें।

शुद्धोदक - स्नान मन्त्र

गंगा च यमुना चैव गोदावरी सरस्वती।
नर्वदा सिन्धु कावेरी स्नानार्थं प्रति-गृहयन्ताम्॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

हिन्दी अनुवाद–हे दयामय माते! यह शुद्ध जल के रूप में गंगा, यमुना, गोदवरी, नर्मदा, सिन्धु और कावेरी का जल यहाँ विद्यमान है, शुद्धोदक स्नान के लिए यह जल ग्रहण करें।

नोट–अब मातेश्वरी के ऊपर सुगन्धित इत्र छिड़कें–

सुवासित स्नान मन्त्र

चम्पा-काशोप मालती मोगरा-र्दिभिः।
वासित स्निग्धता हेतु तैल चारु प्रति-गृहयन्ताम्॥

हिन्दी अनुवाद–हे परमेश्वरी! चम्पा, अशोक, मौलसरी, मालती और मोगरा आदि से वासित तथा चिकनाहट के हेतु यह तेल, इत्र आप ग्रहण करें।

नोट–अब मातेश्वरी को समस्त अंगार्थ लाल वस्त्र अर्पित करें–

वस्त्र समर्पण मन्त्र

शीत-वातोष्ण-संत्राणं लज्जाया रक्षणं परम्।
देहा-लंकारणं वस्त्रमतः शान्ति प्रयच्छ मे॥

हिन्दी अनुवाद–हे गायत्री माता! यह वस्त्र आपकी सेवा में समर्पित हैं। यह सर्दी, गर्मी, हवा से बचाने वाला, लज्जा का उत्तम रक्षक तथा शरीर का अलंकार है, इसे ग्रहण कर मुझे शान्ति प्रदान करें।

नोट–अब माता की प्रतिमा को लाल चादर ओढ़ावें।

उत्तरीय वस्त्र समर्पण मन्त्र

उत्तरीयं तथा देवि नाना-चित्रित मुत्तमम्।
गृहणेदं मया भक्तया दत्तं तत सफलं कुरू॥

हिन्दी अनुवाद–हे पाँच मुखी मोक्ष प्रदान करने वाली माँ! भिन्न-भिन्न प्रकार के चित्रों से सुसज्जित यह उत्तम उत्तरीय वस्त्र मैंने भक्ति पूर्वक अर्पित किया है। इसे ग्रहण कर मेरा जीवन सफल बनाएं।

नोट–अब भगवती को यज्ञोपवीत [जनेऊ] चढ़ाएं–

यज्ञोपवीत समर्पण मंत्र

नव-भिस्तन्तु-भिर्यक्तं त्रिगुणं देवता मयम।
उपवतिं मया दत्तं गृहाण परमेश्वरि॥

हिन्दी अनुवाद–हे परमेश्वरी! नौ तंतुओं से बना त्रिगुण और देवता

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

स्वरूप यह यज्ञोपवीत मैंने समर्पित किया है। आप इसे ग्रहण करें।

नोट—अब मातेश्वरी को चन्दन लगावें-

चन्दन विलेपन मंत्र

ऊं श्रीखण्ड चन्दनं दिव्यं गंधाढ्यं सुमनोहरम्।
विलेपन मातेश्वरि चन्दनं प्रति-गृहयन्ताम्॥

हिन्दी अनुवाद—हे मातेश्वरी! यह दिव्य श्रीखण्ड चन्दन सुगन्ध से पूर्ण तथा मनोहर है। विलेपन के लिए यह चन्दन स्वीकार करें।

नोट—अब अक्षत [चावल] चढ़ावें-

अक्षत समर्पण मंत्र

अश्ताश्च भगवती कुंकु-भाक्ता सुभोभिताः।
मया निवेदिता भक्व्या गृहाण परमेश्वरि :॥

हिन्दी अनुवाद—हे परमेश्वरी! ये कुंकुम में रंगे हुए सुन्दर अक्षत हैं। मैं भक्ति भाव से आपकी सेवा में अर्पित करता हूं, इन्हें ग्रहण कीजिए।

नोट—अब पुष्प चढ़ावे-

पुष्प समर्पण मंत्र

बन्दारूज-नाम्बदार मन्दार प्रिये धीमहि।
मन्दार जानि पुष्पाणि रक्त पुष्पाणि पेहि भो॥

हिन्दी अनुवाद—वन्दना करने वाले भक्तों के लिए मन्दार कल्पवृक्ष के समान कामना पूरक है। हे मन्दार प्रिय भगवती! मन्दार पुष्प समझकर यह लाल पुष्प ग्रहण कीजिए।

नोट—अब पुष्पमाला चढ़ावें-

पुष्पमाला समर्पण मंत्र

माल्या दीनि सुगन्धीनि साल्यादीनि वै देवी।
मया-हृताणि-पुष्पाणि गृहायन्ता पूजनाय भो॥

हिन्दी अनुवाद—हे जगत् माता गायत्री! मालती आदि पुष्पों की श्वेत मालाएं और पुष्प आपके लिए लाया हूं। आप इन्हें पूजा के लिए ग्रहण करें।

नोट—अब दूर्वा चढ़ावें-

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

दूर्वा अर्पण मंत्र

दूर्वा-कुरान सुहरि-तान्मृताण मंगल-प्रदान।
अनीतां स्वतं पूजार्थं गृहाण परमेश्वरिः॥

हिन्दी अनुवाद—हे परमेश्वरी! आपकी पूजा के लिए मेरे द्वारा अत्यन्त हरे अमृतमय तथा मंगलप्रद दूर्वाकुर लाए गए हैं। आप इन्हें ग्रहण करें।

नोट—अब सिन्दूर समर्पित करें-

सिन्दूर समर्पण मंत्र

सिन्दुंर शोभनं रक्तं सौभाग्यं सुख वर्द्धनम्।
शुभदं कामदं चैव सिन्दुंर प्रति-गृहयन्ताम्॥

हिन्दी अनुवाद—हे ब्रह्मशक्ति! सुन्दर लाल, सौभाग्य-सूचक, सुखवर्द्धक, शुभद तथा कामपूरक सिन्दूर आपकी सेवा में अर्पित है। इसे स्वीकार करें।

नोट—इसके पश्चात् मातेश्वरी गायत्री के चरणों में सात रंग गुलाल बारी-बारी से चढ़ावें-

सप्तरंग गुलाल अर्पण मन्त्र

नाना-परिमले द्रव्यौ-निर्मितं चूर्ण-मुत्तमम्।
गुलाल नामकं चूर्ण गन्धाढ्यं चारू प्रति-

हिन्दी अनुवाद—हे माते! तरह-रतह के सुगन्धित द्रव्यों से निर्मित यह गन्ध युक्त गुलाल नामक उत्तम चूर्ण ग्रहण कीजिए।

नोट—अब सुगन्धित अगरबत्ती जलाकर दिखावें-

सुगन्धित धूप अर्पण मन्त्र

वनस्पति रसोदभूतो गन्धाढ्यो गन्ध उत्तमः।
आघ्रेयः सर्व देवानांधूपोढ्यं प्रति-गृहयन्ताम्॥

हिन्दी अनुवाद—हे भक्त वत्सला गायत्री! वनस्पतियों के रस से निर्मित सुगन्धित, सुगन्ध रूप और समस्त देवी-देवताओं के सूंघने योग्य यह धूप [अगरबत्ती] आपकी सेवा में अर्पित है, इसे ग्रहण करें।

नोट—अब माता गायत्री को प्रज्जवलित दीप दिखावें-

प्रज्जवलित दीप दर्शन मन्त्र

साज्यं च वर्ति-संयुक्तं वहिनां योजितं मया।
दीप गृहाण त्रैलोक्य तिमिरा-पहम्॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

भक्त्या दीपं प्रयच्छामि देवि महेश्वरि।
त्राहि मां निरयाद् घोरा हो पञ्चोतीर्ण भो स्तुते॥

हिन्दी अनुवाद—हे माते! घी में डुबोई रूई की बत्ती को अग्नि से प्रज्जवलित करके दीपक आपकी सेवा में अर्पित कर रहा हूँ, इसे ग्रहण कीजिए। यह दीप त्रिभुवन के अन्धकार को मिटाने वाला है। मैं अपनी भगवती गायत्री माँ को यह दीप अर्पित करता हूँ। हे माते! आप हमें घोर नरक से बचाइये।

नोट—इसके बाद मिठाइयाँ एवं मौसम के अनुसार फल, पंचमेवा आदि नैवेद्य समर्पित करें—

नैवेद्य समर्पण मंत्र

नैवेद्यं गृह-यन्ताम देवि: भक्तिमे-ह्वाचलं कुरू।
ईप्सितं मे वरं देहि परत्र च परां-गतिम्॥
शर्करा खण्ड खाद्यानि दिव्य क्षीर घृताणि च।
आहारं भक्ष्य भोज्यं च नैवेधं प्रति-गृहयन्ताम्॥

हिन्दी अनुवाद—हे माता गायत्री! आप यह नैवेध ग्रहण करें तथा मेरी भक्ति को अविचल करें। मुझे वांछित वर दीजिए और परलोक में परम गति प्रदान कीजिए। शक्कर व चीनी से तैयार किए गए खाद्य-पदार्थ, दही-दूध, घी एवं भक्ष्य-भोज्य विभिन्न फल आहार नैवेद्य के रूप में अर्पित है। इसे स्वीकार कीजिए।

नोट—अब सिंहासन पर पान-बीड़ा चढ़ावें-

पान-बीड़ा समर्पण मंत्र

ॐ पूंगीफलं महादिव्यं नागवल्ली दलैर्युतम्।
एला-चूर्णादि संयुक्तं ताम्बलुं प्रति-गृहयन्ताम्॥

हिन्दी अनुवाद—हे जगदम्बा! महान दिव्य पूंगीफल [सुपारी], इलायची और चूना आदि से युक्त पान का बीड़ा आपकी सेवा में अर्पित है, इसे ग्रहण करें।

नोट—अब नारियल फल अर्पित करें-

नारियल फल अर्पण मंत्र

इदं फलं मया देव स्थापित पुर-तस्तव।
तेन मे सफलावात्ति भरवेजमनि जन्मनि॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

हिन्दी अनुवाद–हे शक्तिदात्री! यह नारियल फल मैंने आपके समक्ष समर्पित किया है, जिससे हमें जन्म-जन्मान्तर तक सफलता प्राप्त हो।

नोट :–अब मातेश्वरी गायत्री को द्रव्य [दक्षिणा] समर्पित करें–

द्रव्य समर्पण मंत्र

हिरण्यगर्भ-गर्भस्थं हेम बीजं विभावसोः।
अनन्तं पुण्यफल दमतः शान्ति प्रयच्छ मे॥

हिन्दी अनुवाद–हे देवी महामाया! सुवर्ण हिरण्य-गर्भ ब्रह्मा के गर्भ में स्थित 'अग्नि का बीज' है। यह अनन्त पुण्य फलदायक है। परमेश्वरी, यह आपकी सेवा में अर्पित है। इसे ग्रहण कर हमें शान्ति प्रदान करें।

नोट–इसके पश्चात् दोनों हथेलियों में पुष्प भरकर, खड़े होकर, मंत्र पढ़ने के पश्चात् हथेलियों का पुष्प 'पुष्पांजलि' के रूप में माता को समर्पित करें–

पुष्पांजलि समर्पण मंत्र

नाना सुगन्धि पुष्पाणि यथा कलोद भवा च।
पुष्पांजलि-र्मया दत्तौ गृहाण परमेश्वरिः॥

हिन्दी अनुवाद–हे परमेश्वरी! यथा समय पर उत्पन्न होने वाले तरह-तरह के सुगन्धित पुष्प मैं 'पुष्पांजलि' के रूप में अर्पित करता हूँ, इन्हें स्वीकार कीजिए।

नोट–अब खड़े होकर, हाथ जोड़कर माता गायत्री जी के सिंहासन या प्रतिमा के चारों ओर घूम-घूम कर पाँच बार 'परिक्रमा' करें और साथ में निम्न मंत्र का उच्चारण करते जाएं–

मातेश्वरी गायत्री प्रदक्षिणा मंत्र

यानि-कानि च पापानि च ज्ञाता-ज्ञात कृताणि च।
तानि-सर्वाणि नश्यन्ति प्रदक्षिणा पदे-पदे॥

हिन्दी अनुवाद–हे गायत्री माते! मनुष्यों से जाने-अनजाने में जो पाप हो जाते हैं। वे पाप आपकी परिक्रमा करते समय पद-पद पर नष्ट हो जाते हैं।

नोट–इसके पश्चात् लोटे [गड़वी] में जल भरकर, खड़े होकर, लोटे का जल बूंद-बूंद करके सिंहासन के पास गिरावें और निम्न मंत्र का उच्चारण करें–

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

विशेष अर्घ्य समर्पण मंत्र

रक्ष-रक्ष भक्त-वत्सला रक्ष त्रिलोक्य रक्षिकाः।
भक्तानां भयं कर्त्ता त्राता भाव भवार्ण-वात्॥

हिन्दी अनुवाद—हे भक्त-वत्सला माता गायत्री! रक्षा कीजिए-रक्षा कीजिए-रक्षा कीजिए। आप भक्तों को अभय देने वाले और भवसागर से उनकी रक्षा करने वाले हैं, आपको करोड़ों नमस्कार है।

नोट—उपासको! अब निम्नलिखित गायत्री मंत्र का रुद्राक्ष की माला से 11 माला जप करें-

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।

विशेष नोट—मातेश्वरी गायत्री का 'षोड़शोपचार पूजन' यहीं पर समाप्त होता है, किन्तु इसके पश्चात् हवन पूजन, आरती तथा विसर्जन कर्म अनिवार्य है।

अनिष्टता निवारण एवं दुःखों से मुक्ति हेतु 'माता गायत्री नित्य पूजन'

अनिष्टता निवारण एवं दुःखों से मुक्ति हेतु मातेश्वरी गायत्री की उपासना करने वाले उपासक को चाहिए कि वे प्रातः चार बजे [ब्रह्म मुहूर्त्त में] निद्रा को त्यागे। शौचादि से निवृत्त हो स्नान करके पवित्र हो जाएं, फिर स्वच्छ वस्त्र धारण कर। पूर्व दिशा की ओर मुख करके भगवती गायत्री की प्रतिमा या तस्वीर के समक्ष लाल कम्बल के आसन पर बैठ जावें। बैठने से पूर्व निम्नलिखित पूजन सामग्री अपने पास एकत्रित कर लें। भगवती गायत्री की प्रतिमा या तस्वीर 'आम की लकड़ी' वाले सिंहासन पर लाल कपड़ा बिछाकर स्थापित करें। तत्पश्चात् धूप या सुगन्धित अगरबत्ती व शुद्ध गाय के घी का दीपक जगावें। इसके बाद पूजा आरम्भ करें।

नित्य पूजन सामग्री

माता गायत्री देवी की प्रतिमा अथवा तस्वीर, आम की लकड़ी का सिंहासन, सिंहासन पर बिछाने हेतु लाल रंग का कपड़ा, लाल कम्बल या कुशा का आसन, दीपक, रूई, अगरबत्ती, गाय का घी, चन्दन, गंगाजल, तुलसी के पत्ते, माचिस, पुष्प, बिल्वपत्र, अक्षत [चावल], नैवेद्य, दूर्वा, सिन्दूर इत्यादि।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पूजन आरम्भ विधि

उपासको! सर्वप्रथम दाहिने हाथ की अंजुलि में गंगाजल लेकर नीचे लिखित मंत्र पढ़ें। मंत्र समाप्त होते ही अंजुलि का जल शरीर पर छिड़क लें।

पवित्र होने का मंत्र

हे मन्दाकिनी गंगे माँ, तन मन करो पवित्र।
हो जाएं देव, नाग, गन्धर्व व मानव मित्र॥
'श्री गायत्री' प्रेम की भावना, देहु हृदय जगाय।
रोम-रोम माँ-माँ जपे, और नहीं कुछ भाए॥
मेरी विनती गंगे माँ, चरण करें स्वीकार।
तन-मन-हृदय पवित्र करें, माँग रहा हूँ प्यार॥

नोट—मंत्र का उच्चारण समाप्त होते ही अंजुलि का जल शरीर पर छिड़क लें। तत्पश्चात् कर जोड़कर गणनायक श्री गणेश जी की वन्दना करें—

श्रीगणेश आराधना मंत्र

कृपा करें गणनायक जी, शुभता कर दें साथ।
ऋद्धि-सिद्धि शुभ लाभ जी, सब है तेरो हाथ॥
सर्व सिद्धि मम साथ करें, हे गणपति भगवान।
पूर्ण करें प्रभु कामना, बारम्बार प्रणाम॥

नोट—इसके बाद दाहिनी हथेली पर अक्षत, चन्दन, पुष्प, बिल्वपत्र, दूर्वा, सिन्दूर, गंगाजल एवं लड्डू लेकर नीचे लिखित मंत्र का उच्चारण करें। मंत्र समाप्त होते ही हाथ की वस्तुएं भगवान गणपति के सिंहासन पर समर्पित कर दें—

श्रीगणेश सामग्री समर्पण मंत्र

नाना विविध वस्तुओं से, गणपति तुझे रिझाता हूँ।
हृदय समर्पित करके प्रभु जी, अपना विनय सुनाता हूँ॥
पूजा की विधि न जानूं, न पूजन का सामान।
तन-मन-हृदय समर्पित है, हे गणपति भगवान॥

नोट—अब पुनः गंगाजल अंजुलि में लेकर नीचे लिखित मंत्र पढ़ें। मंत्र समाप्ति के पश्चात् अंजुलि का जल भगवती गायत्री के सिंहासन पर छिड़क दें—

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

माता गायत्री आसन शुद्धि मंत्र

हे जगतारिणी गंगे माँ, आसन करो पवित्र।
होंगी विराजित माँ गायत्री, संग में सारे इष्ट॥
आसन परम पवित्र किए, माँ होवें विराजमान।
पास मेरी एक भावना, पूजन का सामान॥
दीन-हीन पर दया करो, हे देवों के सरताज।
सर्व सुखों का साधन दो, विनती सुन लो आज॥

नोट—इसके पश्चात् गंगाजल से माँ गायत्री को स्नान करावें। इस क्रम में अंजुली में गंगाजल लेकर निम्न मंत्र पढ़ें। मंत्र समाप्ति के बाद अंजुली जल माता गायत्री की प्रतिमा या तस्वीर पर छिड़क दें।

माँ गायत्री को स्नान कराने का मंत्र

गंगा की ये पावन जल, अमृत रूप समान।
उस जल से हे जगदम्बे, करें आप स्नान॥
अपना तन व मन मेरा, माँ जी करो पवित्र।
भक्ति हमको दान दें, हे सृष्टि के इष्ट॥

नोट—इसके बाद निम्न मंत्र पढ़कर माँ गायत्री के चरणों पर अक्षत [चावल] चढ़ावें—

अक्षत [चावल] समर्पण मंत्र

शक्ति व सामर्थ्य नहीं, तण्डुल अर्पित करता हूँ।
हे अम्बे केवल तुझको, स्नेह समर्पित करता हूँ॥
लक्ष्मी-सरस्वती साथ लिए, सदा विराजें द्वार।
निर्बल की सुन याचना, कर मेरा उद्धार॥
हे दयामयी माँ दयानिधी, सुन लें मेरा पुकार।
हृदय कलश पर बैठे जी, विनय करें स्वीकार॥

नोट—अब माता के मस्तक पर, निम्न मंत्रोच्चारण करते हुए चन्दन लगावें—

चन्दन लेपन मंत्र

मेरे हृदय में सदा विराजें, चन्दन तुझे लगाऊँ मैं।
नेह लगाकर तेरे चरणों में, पुलकित हो लिपटाऊँ मैं॥
कराइये माँ अधम से, मस्तक चन्दन लेप।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

क्यों बालक से रूठी हो, नैन खोलकर देख॥
भवसागर में डूब रहा, माँ जी सुनो पुकार।
जीवन नैया पार करो, बनकर खेवनहार॥

नोट–अब माता गायत्रीके बिल्वपत्र चढ़ावें।

बिल्वपत्र समर्पण मंत्र

शिव का प्यारा बिल्वपत्र, कर अम्बे स्वीकार।
भक्ति भर दें रोम-रोम, बालक रहा पुकार॥
ग्रह अनिष्ट को नाश करें, हे जग के आधार।
धन-जनसुख सम्पत्ति दें, भर अम्बे भण्डार॥

नोट–अब निम्न मंत्र का उच्चारण करते हुए मातेश्वरी को पुष्प चढ़ावें।

पुष्प समर्पण मंत्र

पुष्पों की पंखुड़ियों से, अपना प्यार जताता हूँ।
सफल करो सब कामना, नित्य ही विनय सुनाता हूँ॥
मेरा मस्तक कमल समझके, अपने चरण विराजो जी।
रौशन कर दो सारे जग में, विद्या-बुद्धि पाऊँ जी॥

नोट–अब निम्न मंत्रोच्चारण करते हुए भगवती को तुलसी दल चढ़ावें–

तुलसी पत्र समर्पण मंत्र

तुलसी की पंखुड़ियों में, छिपा है हृदय पराग मेरा।
श्रद्धा सुमन समर्पित है, जगा दें अम्बे भाग्य मेरा॥
भक्ति ऐसी दान दें, युग-युग नहीं भुलाऊँ मैं।
जहाँ भी देखूँ जब भी देखूं, एक तुम्हीं को पाऊँ मैं॥

नोट–अब भगवती को सुगन्धित अगरबत्ती दिखावें–

सुगन्धित धूप समर्पण मंत्र

मन को माँ हर्षित करने, सुगन्ध कर स्वीकार।
सबको तूने तारी मैया, हमको भी अब तार॥
शक्ति सकल मनोरथ दें, पूरण कर सब काम।
बारंबार मैं नमन करूँ, हे सावित्री भगवान॥

नोट–अब निम्नलिखित मंत्र का उच्चारण करते हुए माँ गायत्री को प्रज्जवलित दीप दिखावें–

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

प्रज्जवलित दीप समर्पण मंत्र

दीपक की लौ से माते, भेज रहा सन्देश।
विनती बारंबार करूँ, पूरा करो उदेश॥
तुम बिनु मेरा जीवन है, कीट-पतंग समान।
हर्षित होकर "तनुज" का, पूर्ण करें अरमान॥

नोट—अब भगवती को नैवेद्य चढ़ावें—

नैवेद्य समर्पण मंत्र

भक्ष्य पदारथ मधुर भोज्य, अम्बे कर स्वीकार।
और नहीं कुछ पास में, कर मैया उद्दार॥
कृपा करो अनाथ पे, कर दो हमें सनाथ।
सदा विराजें मेरे घर में, संग में दीनानाथ॥

नोट—अब दोनों हाथों की अंजुली में पुष्प भरकर, घुटने के बल बैठकर या खड़े होकर नीचे लिखित मंत्र समाप्त होने के बाद हाथों का पुष्प माँ के चरणों पर समर्पित कर दें।

पुष्पांजलि ध्यान

विनती सुन लें गायत्री माँ, जीवन मेरा संवार।
अम्बे तार-तार-तार, भवानी तार-तार-तार॥1॥
बाधा से कह दो जगदम्बे, सीने न लिपटाए।
कहो निराशा से माता जी, प्रीति नहीं बढ़ाए॥
दिल से कह दो दरिद्रता से, करे न हमसे प्यार।
अम्बे तार-तार-तार, मैया तार-तार-तार॥2॥
दारूण दुख ने हे माता जी, जियरा मेरा जलाए।
डूबा गम के सागर दिल की, ज्योति बुझती जाए॥
चिन्ता ने नित ही लटकाए, गर्दन पे तलवार।
अम्बेतार-तार-तार, भवानी तार-तार-तार॥3॥
सदा के लिए गायत्री माँ, मेरे घर बस जाएं।
चरणों में ये दास पड़ा है, इतनी दया दिखाएं॥
कह दो उलझन से हे माता, करे नहीं लाचार।
अम्बे तार-तार-तार, भवानी तार-तार-तार॥4॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

गायत्री माँ तुम बिनु जग में, और न कोई मेरा।
अंधकार में मेरा जीवन, मांगू नया सवेरा॥
मैं भी "तनुज" तुम्हारा ही हूँ, कर मेरा उद्धार।
अम्बे तार-तार-तार, भवानी तार-तार-तार ॥5 ॥

नोट—इसके पश्चात् "गायत्री मंत्र" का एक या पाँच माला जप करें—

गायत्री मंत्र

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यम भर्गो देवस्य धीमहि धीयो योनः प्रचोदयात्।

नोट—मंत्र जाप समाप्त होने के बाद पुस्तक के अन्तिम पृष्ठ पर लिखी हुई आरती गावें, साथ ही थाल में पान पत्ते पर कर्पूर की बात्ती जलाकर माँ गायत्री को आरती दिखावें। इसके बाद प्रणाम करें। फिर चाय-नाश्ता आदि ग्रहण करके अपने कार्यों में संलग्न हो सकते हैं।

॥ इति श्री गायत्री पूजन कर्म सम्पन्न ॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पंचम भाग
माता गायत्री हवन विधि खण्ड

हवन का महत्त्व

किसी भी पूजा अथवा अनुष्ठान के बाद "हवन" करने का विधान है, क्योंकि यह आवश्यक अंग है। इसके बिना कोई भी अनुष्ठान पूर्ण हो ही नहीं सकता। हवन मात्र करने वाले को ही नहीं अपितु प्राणी मात्र को अपना कल्याणकारी प्रभाव देता है।

इस क्रिया में पवित्र समिधा के द्वारा अग्नि-विशिष्ट पदार्थों का मिश्रण मंत्रोच्चारण करते हुए अर्पित किया जाता है।

प्रत्येक बार मंत्र के अन्त में "स्वाहा" शब्द भी बोला जाता है। यह "स्वाहा" शब्द का अर्थ "भस्म होना नहीं" बल्कि "स्वाहा" नाम की देवी को अग्नि के द्वारा पूजन शान्ति के लिए समर्पित की जाती है।

हवन का विज्ञान-सम्मत महत्त्व

हवन का महत्त्व भी विज्ञान सम्मत है। हवन सामग्री में अनेकों पदार्थों का मिश्रण रहता है। उनके जलने पर वायु मण्डल में एक प्रकार का सुगन्धित धुँआ फैलता है। यह धुँआ प्रदूषण नाशक, वायु शोधक, सात्विकताकारी और भूत-बाधा निवारक होता है।

आध्यात्मिक दृष्टि से इसका प्रभाव यह होता है कि साधक द्वारा मंत्र जप से आकृष्ट देवता इस सुगन्धित धूप से सन्तुष्ट होकर उनकी कामना पूर्ति हेतु दयालु हो जाते हैं। वैसे भी तन-मन और वातावरण को शुचिता-मय बनाने में हवन क्रिया द्वारा उत्पन्न धुँए का चमत्कारी प्रभाव होता है।

हवन की लकड़ी

हवन कार्य के लिए [काष्ठ] लकड़ी प्रयोग के कुछ विशेष नियम हैं। आम की लकड़ी साधारणतः किसी भी हवन में प्रयोग कर सकते हैं। परन्तु नवग्रह के हवन और विविध अनुष्ठान के हवन में विविध प्रकार की लकड़ियों का उपयोग होता है।

नवग्रह हवन की लकड़ी :–आम, शैन, खैर, चिरचिरी, आक, गुल्लर, बेल, पलास और कुशा।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

गायत्री मंत्र के हवन में विभिन्न कार्यों के लिए विभिन्न प्रकार की लकड़ियों का प्रयोग होता है, जिसका विस्तृत वर्णन आगे लिखा जायेगा।

हवन सामग्री

हवन सामग्री में कुछ विशिष्ट वस्तुओं का मिश्रण किया जाता है। जैसे–गाय का घी, जौ, तिल, सरहड़, गुग्गुल, अक्षत, शक्कर, मेवा, चन्दन, जावित्री, लौंग, दालचीनी, अगरतर, जायफल, इलायची, आंवला, कपूर, इन्द्र जौ, गिलोच, नाग केशर, वालछड़, पटीलपन, पर्वार बीज मुलहठी, लाल चन्दन, असगन्ध, केशर, मोचरस, ब्राह्मणी, शंख पुष्पी, पुष्करमूल, मजीठ, धाम पुष्प, खस, गोकरू, सतावर, छरीला, देवदारू और केशर।

ऐसे बाज़ार में बनाई हवन सामग्री का पैकेट भी मिल जाता है, सुविधा के लिए वह भी ली जा सकती है, परन्तु वह शुद्ध और कीड़ों से रहित हो।

हवन के प्रकार और पूर्णाहुति का अर्थ

हवन कई प्रकार का होता है। कुछ लोग नित्य ही पूजा के समय हवन करते हैं, विशेष पर्वों, उत्सवों, धार्मिक क्रिया कलापों में तथा विविध कामनाओं की पूर्ति में भी हवन का प्रचलन है।

"मंत्र साधना" में भी हवन का विशेष महत्त्व है।

"हवन कुण्ड का निर्माण"–यथा सम्भव जप स्थल या पूजन स्थल के पास ही करना चाहिए। हवन में निर्देशित मन्त्र का उच्चारण करते हुए "स्वाहा" शब्द-ध्वनि के साथ अग्नि में "आहुति" डाली जाती है।

अन्तिम आहुति को "पूर्णाहुति" कहते हैं। पूर्णाहुति के पश्चात् साधक को इस आशय की प्रार्थना करनी चाहिए कि–"हे देवता! समस्त क्रिया में, मन्त्र जप में, पूजन में, मेरी भावना-व्यवहार व आचरण में कहीं कोई त्रुटि हो गई हो, तो उसे क्षमा कीजिए।"

"क्षमा याचना" के बाद, परम श्रद्धापूर्वक हवन कुण्ड से थोड़ा सा भस्म लेकर मस्तक पर धारण करनी चाहिए। "भस्म लेपन" के गुणों को चिकित्सा विज्ञान ने भी मुक्त कंठ से स्वीकार किया है।

भस्म धारण के पश्चात् साधक को चाहिए कि देवी प्रतिमा, हवन कुंड और आकाश की ओर उन्मुख होकर इष्ट देव या इष्ट देवी को प्रणाम करें, स्वयं को उनके चरणों में समर्पित कर दें।

हवन के बाद आरती, तत्पश्चात् प्रदक्षिणा और विसर्जन का विधान है। "विसर्जन" पूजा-पाठ या मंत्र साधना का अन्तिम चरण है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

हवन के लिए "कुश-कण्डिका" निर्माण

हवन के लिए चार अंगुल ऊँची, एक हाथ परिमाण चौरस "बेदी" बनावें, उस बेदी को कुशा से संचार करके उस कुशा को ईशान कोण में फेंक दें।

वेदी "वालुका" [रेता] का निर्माण करें, तो सर्वोत्तम है पश्चात् गाय के गोबर से लीप कर, खैर के "स्त्रुव" [बड़ा डंडी वाला चम्मच आकार का] से रेखा करके अनामिका और अंगूठे से मिट्टी निकालें, फिर गंगाजल छिड़क कर, कांशे के पात्रों के बीच में अग्नि लाकर वेदी पर स्थापना करें।

फिर पुष्प, चन्दन, ताम्बूल और वस्त्रादि लेकर "ब्राह्मण" को "वरण" दें, फिर वे आदेश करेंगे-"यथाविधि कर्म कुरू"। ऐसा संकेत होने पर आप कहें-कर्माणी [करता हूँ]।

ऐसा आचार्य [पुरोहित] के कहने पर अग्नि से दक्षिण दिशा में शुद्ध आसन देकर, पूर्व दिशा में अग्रभाग कुशाओं को रखकर उस पर अग्नि की प्रदक्षिणा करते हुए "ब्रह्मा" को स्थापित करें। फिर "प्रणीता पात्र" को आगे करके, जल से पूरित करते हुए कुशाओं से ढककर, ब्रह्मा का मुख देखकर, अग्नि को उत्तर दिशा में कुशाओं पर स्थापित कर दें।

इसके अनन्तर कुशाओं का "परिस्तरण" करें-कुशावों का चौथा हिस्सा अर्थात् चार कुशाएं लेकर अग्नि कोण से ईशान कोण तक, फिर चार कुशाएं ब्रह्मा से अग्नि तक, फिर चार कुशाएं नैऋत्य से वायव्य तक, फिर चार कुशाएं अग्नि से प्रणीता पर्यन्त स्थापित करें। फिर पवित्र छेदन के लिए तीन कुशाएं, बीच में गर्भ भाग वाली दो कुशाएं "पवित्रच्छेदन" के लिए रखें।

इसके पश्चात् "उपचवन" के लिए वेणी रूप तीन कुशाएं, तीन समिधा, स्त्रुव, घृत पात्र, चारू पात्र, पूर्ण पात्र आदि सब वस्तुएं परिच्छेदन के पूर्व, पूरब दिशाओं में रखें।

इसके बाद पवित्री को छेदन करने वाली कुशाओं से पवित्री को छेदन करके पवित्री सहित प्रणीता पात्र के जल को तीन बार प्रोक्षणी पात्र में डालकर, दोनों अनामिका और अंगूठे में से दो पवित्री को उत्तराय ग्रहण करके जल को तीन बार ऊपर को उछालें। फिर प्रोक्षणी पात्र को बाएं हाथ में लेकर दाहिने हाथ के अनामिका और अँगूठे से दोनों पवित्री को ग्रहण करके जल को तीन बार उछालें, उसके बाद प्रणीता पात्र के जल से

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

प्रोक्षणी पात्र को जल से स्थापना की हुई वस्तुओं का सेंचन करके, उसके अनन्तर अग्नि से उत्तर दिशा में और प्रणीता पात्र से दक्षिण दिशा में प्रोक्षणी पात्र को स्थापित करें।

पश्चात् घृत पात्र में घृत डालकर अग्नि पर रखें। उसके अनन्तर जलता हुआ तृण आदि लेकर घृत और चारू के ऊपर घुमाकर अग्नि में डालें। तीन बार स्त्रुप को तपावें और सम्मार्जन कुशाओं के अग्रभाग करके भीतर के स्त्रुव का सेंचन कर पहले की तरह पुनः स्त्रुप को तपाकर अपने दाहिने हाथ की ओर स्थापित करें। घृत को अग्नि से उतारकर तीन बार प्रोक्षणी पात्र के जल की तरह उछालें। फिर देखकर कोई अपद्रव्य हो तो वह निकाल दें। फिर स्त्रुव का पूजन करें। उपयवन कुशाओं को हाथ में लेकर प्रजापति का ध्यान करते हुए तीन समिधाओं को घृत में भिगोकर मौन धारण किए हुए अग्नि में डाल दें।

उसके बाद बैठकर दाहिने गोडे को दबाए हुए कुशा से ब्रह्मा से अन्वारम्भ कर आचार्य अत्यन्त प्रज्जवलित हुई अग्नि में स्त्रुप से घृत का हवन करें। आहुति देने के बाद स्त्रुप से बचे घी को "प्रोक्षणी पात्र" में डाल देवें।

हवन मन्त्र

ॐ प्रजापतये स्वाहा, इदं प्रजापतये।

ॐ इन्द्राय स्वाहा, इदम् इन्द्राय इत्याद्यारौ

ॐ अग्नये स्वाहा, इदं मगन्ये।

ॐ सोमाय स्वाहा, इदं सोमाय न मम इत्याज्य भागौ।

ॐ भूः स्वाहा, इदमग्न्ये।

ॐ भुवः स्वाहा, इदं बायवे।

ॐ स्वः स्वाहा, इदं सूर्याय।

ॐ तन्नो ऽ अग्ने वरुणस्य विद्वान देवस्य हेडो अवयासि सीष्ठ यजिष्ठो वह्निनतमः शोशुचानो विश्वे द्वेशा ग्वंसि प्रभु-मुग्ध-यस्मत् स्वाहा, इदं अग्नि वरुणाभ्यां न मम॥1॥

ॐ सत्वन्नो ऽग्ने वमो भवेति नेदिष्टो अस्या उषसो व्युष्टौ। अव यक्ष्वनो वरुणाग्वं-ररागो ब्रीहि मुडीकग्वं सुहवो नएधि स्वाहा, इदमग्नी वरुणाभ्यां न मम्॥2॥

ॐ अयाश्चा-ग्ने ऽस्य नभिसस्ति पाश्च सत्त्वभि त्त्वमया असि। अयानो यज्ञं वहास्य यानो धेहि भेष जग्वं स्वाहा, इदमग्नये न मम्॥3॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ॐ ये ते शतं वरुणये सहस्त्रं यज्ञिया: पाशा: वितता: महान्त स्तेभि नेडिद्य सवितोत विष्णुर्विश्वे मुञ्चतु मरूत: स्वर्का: स्वाहा। इदं वरुणाय सवित्रे विष्णवे विश्वेभ्यो मरुद्भ्य: स्वर्केभ्यश्च न मम्॥4॥

ॐ उदुत्तमं वरुण पाश मस्म द्वाधमं विमध्य मग्वं श्रथाय अथावय-मादित्य व्रते तवानाग सो आदित्ये स्याम स्वाहा॥5॥

ॐ गणानां त्वा गणपति-ग्वं हवामहे प्रियाणांत्वा प्रियपति ग्वं हवामहे निधिनांत्वा निधिपति ग्वं हवा महे व्योमम आहम जानि गर्भध-मात्वम जासि गर्भधम् स्वाहा, इदं महागणपतये॥6॥

ॐ ब्रह्म यज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद् विसीमत: सुरूयो वेन आव:। स वुधन्या उपमा अस्य विष्ठा सतश्च योनि-मस्त श्चविव: स्वाहा, इदं ब्रह्मणे॥7॥

ॐ इदं विष्णु विचक्रमे त्रेधा-निदधे-पदम्। समूढ़-मस्य पांऽग्वं सुरे स्वाहा, इदं विष्णवे॥8॥

ॐ नमस्ते रुद्र-मन्यव उतीत इषवे नम: बाहुभ्या-मुतते नम: स्वाहा, इदं रुद्राय॥9॥

ॐ अग्नि दूतं पुरोदधे हव्यवाह मुपषुवे। देवां आसा दयादिह स्वाहा, इदमग्नये॥10॥

ॐ स्योना पृथिवि नो भवा नुक्षा निवेशिनी। यच्छान: शर्म सप्रथा स्वाहा, इदं पृथिव्यै॥11॥

ॐ त्रातार मिन्द्र भवितार मिन्दं हवेहवे सुहवग्वं शूरमिन्द्रम। हवयामि शक्रं पुरूहुत मिन्दं स्वस्तिनो मधवा-धात्विन्द्र: स्वाहा, इदं इन्द्राय॥12॥

ॐ प्रजापते नत्व देतान्यन्यो विश्वा रूपाणि परिताबभूव। चत्कामास्ते जुहू-मस्तन्नो अस्तु वयं श्याम पतयो रयीणाम् स्वाहा। इदं प्रजापतये॥13॥

ॐ अम्बे-अम्बिके अम्बालिके नमान यति कश्चन ससत्य-शिवक: सुभद्रिकां श्रम्पील्य वसिनीम् स्वाहा, इदं दुर्गायै॥14॥

ॐ वातो वामनो वा गन्धर्वा सप्त विसति:। ते अग्रे अस्वम युञ्जस्ते अस्मिन्ज वमादधु: स्वाहा, इदं वायवे॥15॥

ॐ ऊर्ध्या अस्य समिधो भवन्त्युर्ध्वा शुक्रा: शुचिग्वं द्युमत्तमा सुप्रती कस्य सुनो: स्वाहा, इदं आकाशाय॥16॥

ॐ अश्विना भेषजं मधु भेषजं न सरस्वती। इन्द्र त्वष्टा यश: श्रियं रूपग्वं रूप मधु: सुते स्वाहा, इदं सरस्वत्यै॥17॥

ॐ आकृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेश चन्न मृतं मर्त्यञ्च। हिरण्ये सविता रथे नादे वोयाति भुवनानि पश्चन् स्वाहा, इदं सूर्याय॥18॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ॐ इदं देवा अस-पत्नग्वं सुवध्वं महते क्षत्राय महते ज्येष्ठाय महते ज्याना-राज्या-येन्द्र स्येन्द्रिय। इममं मुष्य पुत्र-मस्यै विष एष वोमि राजा सोमो ऽस्माकं ब्राह्मणा नाग्वं राजा स्वाहा, इदं चन्द्रमसे ॥19॥

ॐ अग्नि मूर्धादिवः ककुत्पतिः पृथिव्यां। अपाग्वं रेताग्वं सिजिन्वति स्वाहा, इदं भौमाय ॥20॥

ॐ उद्बुध्य स्वाग्ने प्रति जागृहित्वा मिष्ठा पूर्ते सग्वं सुजेथा मयञ्च अस्मिन् सधस्थे अध्युत्त रस्मिन् विश्वे देवाः यजमानश्च सीदत् स्वाहा, इदं बुधाय ॥21॥

ॐ बृहस्पते अति येदर्यो अहर्दि द्युमद्वि भाति क्रतु मञ्जनेषु। यद् दीयच्छ वस त्रृत प्रजात तद स्मासु द्रविनं धेहि यिंत्रम् स्वाहा, इदं बृहस्पतये ॥22॥

ॐ अन्नात्परि स्त्रुतो रसम्ब्रह्मणा व्यपिवत क्षत्रम्पयः सोमं प्रजापतिः त्रृतेन् सत्यमिन्द्रियं विपानग्वं शुक्र-मन्धस इन्द्रस्येन्द्रियमि दम्पयो ऽ मृतम्मधु स्वाहा, इदं शुक्राय ॥23॥

ॐ शन्नो देवी रभिष्टय आपो भवन्तु पीतये। शंय्यो-रभधि स्त्रवन्तु न स्वाहा, इदं शनैश्चराय ॥24॥

ॐ कयानिश्चत्र आभुव दूती सदा बुधः सखा। कचास-यिष्ठया वृता स्वाहा, इदं राहवे ॥25॥

ॐ केतु कृणवन्न केतवे पेशेर्मया अपेशते। समुषभिद भरणा यथा स्वाहा। इदं केतवे ॥26॥

नोट—इसके पश्चात् निम्नलिखित "गायत्री मंत्र" का इच्छानुसार अधिक से अधिक मंत्रों द्वारा आहुति डालें अथवा मंत्र जप संख्या का दशवां भाग मंत्र आहुति डालें–

ॐ भुर्भूवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यम भर्गो देवस्य धी महि धियो योनः प्रचोदयात् ॥

नोट—अब बची हुई समस्त हवन सामग्री को पान के पत्ते पर रखकर, उस पर सुपारी और द्रव्य तथा गाय के दूध से बनी खीर रखकर, खड़े होकर निम्नलिखित मंत्र का उच्चारण करके अन्तिम आहुति डालें–

मूर्द्धाण् मंत्र

ॐ मूर्द्धानं दिवो-अरति पृथिव्या वैश्वा-नरमृत मजात् मग्नि कविग्वं सम्भ्राज मतिथि जनाना-मासन्ना पात्रं जयन्तु देवाः स्वाहा ॥

नोट—अब कर जोड़ कर, खड़े होकर अग्नि की प्रार्थना करें–

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अग्नि प्रार्थना मंत्र

ॐ श्रद्धां मेधां यशः प्रज्ञां विधां पुष्टि श्रियं वलम्। तेजः आयुष्य-मारोग्यं देहि मेहव्य वाहन॥

नोट—अब हवन का भस्म ललाट, ग्रीवा, हृदय दोनों बाजू में लगावें। तत्पश्चात् अग्नि की प्रदक्षिणा करें—

अग्नि प्रदक्षिणा मंत्र

यानि-कानि च पापानि च जन्मान्तर कृतानि च।
तानि-तानि प्रणशयन्ति प्रदक्षिणे पदे पदे॥

तत्पश्चात् आरती करें।

नोट—अब दाहिने हाथ में जल लेकर निम्न मंत्र पढ़ें, मंत्र समाप्त होते ही जल अग्नि कुण्ड पर छिड़क दें।

हवन विसर्जन मंत्र

यान्तु देवगणाः सर्वे पूजा मादाय मामकीम्।
यजमान हितार्थाय पुनरा-गमनाय च॥

॥ इति श्री हवन कर्म सम्पन्न॥

विभिन्न प्रकार की वस्तुओं एवं लकड़ियों से गायत्री मंत्र का हवन करने का विभिन्न फल

विभिन्न रोग निवारक गायत्री हवन

[श्लोक]

गुडूच्याः पर्व विछिन्नाः पयोक्ता जुहूयाद् द्विजः।
एवं मृत्युञ्जयो होम सर्व-व्याधि विनाशनः॥
आम्रस्य जुहू चात्पत्रै पयोक्तैर्ज्व रशान्तये।
वचाभिः पयशा वत्ताभिः क्षयं हुत्वा विनाशयेत्॥
मधुत्रित चहोमेन राजयक्ष्मा विनश्यति।
निवेद्य भास्करा यान्न पायसं होम-पूर्वकम्॥
राज यक्ष्मा भिभूतं च प्राशयेच्छन्ति माप्नुयात्।
लताः पर्वसु विच्छिद्य सोमस्य जुहूयाद् द्विजः॥
सोमे सूर्येन संयुक्ते पयोवक्ताः क्षय शान्तये।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कुसुमैः शंख वृक्षस्य हुत्वा कुष्ठं विनाशयेत्॥
अपस्मा-रविनाशः स्याद् पामार्गस्य तण्डुलैः।
क्षीर वृक्ष समिद्धो मान्दु मान्दोऽपि विनश्यति॥
औदुम्ब रस मिद्दो मादति मेहः क्षयं प्रजेत्।
प्रमेहं शमयेद् हुत्वा मधुने क्षुर सेन वा॥
मधुत्रित यहोमेन नयेच्छान्ति मसूरिकाम्।
कविला सर्पिषाः हुत्वा नयेच्छार्ति मसूरिकाम्॥
उदुम्बर वदास्वत्थैः र्मागजा श्वामचं हरेत्।
पिपीलिका मधु वल्मिके गृहे जाते शतं शतम्॥
शमी समिद्भिन्नेन सर्पिषा जुहूयाद् द्विजः।
तदुत्थं शान्ति मायाति शेषे रतत्र बलिं हरेत्॥
अभ्रस्त नित भूकम्पा लक्षयादौ वजवेतसः।
सप्ताहं जुहूया देवं राष्ट्रे-राज्यं सुखी भवेत्॥

[देवी भागवत 11-24/22-23]

हिन्दी अनुवाद—सम्पूर्ण व्याधियों के नाश करने हेतु—उपासक "गुरूच" को टुकड़े-टुकड़े कर, उन्हें खीर में भिगोकर अग्नि में आहुति डालें।

ज्वर की शान्ति के लिए—दूध में आम के पत्तों को भिगोकर हवन करें। खीर से हवन करने पर "क्षय रोग" दूर होता है। दूध-दही और घृत से किए गए हवन में "राजयक्षमा" रोग को दूर करने की शक्ति है। सोमलता को गांठों पर से अलग-अलग करके, उसे दूध में भिगोकर अमावस्या तिथि को हवन करने पर "क्षय रोग" दूर हो जाता है। शंख के वृक्ष के पुष्पों से हवन करने पर "कुष्ट रोग" का निवारण होता है। अपामार्ग के बीज से यदि हवन किया जाये, तो "मृगी रोग" दूर हो सकता है। क्षीरी वृक्ष की समिधा से हवन करने पर "उन्माद रोग" शान्त हो जाता है। गूलर की समिधा [लकड़ी] का हवन करने से असाध्य प्रमेह रोग दूर हो जाता है। मधु अथवा ईख के रस से हवन करके पुरुष "प्रमेह रोग" को शान्त करें। दूध-दही और घी से हवन करने पर "चेचक रोग" शान्त होता है। कपिला गौ के घृत से हवन करके भी "चेचक रोग" को शान्त किया जा सकता है। गूलर, वट और पीपल की समिधाओं से हवन कर गौ, घोड़े और हाथी के रोग को दूर करें। पिपीलिका और मधुवल्लिक संज्ञक जन्तुओं द्वारा घर में उपद्रव [पीपरी और मधुमक्खी] होने पर मनुष्य समी की समिधाओं पर खीर और घृत से हवन करे। बिजली गिरने और भूकम्प आदि के लक्षित होने पर जंगली बेंत की समिधा से सात दिनों तक हवन करें। ऐसा करने से राष्ट्र में "राज्य सुख" विद्यमान रहता है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

लक्ष्मी प्राप्त करने हेतु गायत्री मंत्र हवन विधि

[देवी भागवत से]

[श्लोक]

अथ पुष्टिं श्रियं लक्ष्मीं पुष्पै र्हुत्वा ऽऽप्नुयाद् द्विजः।
श्रीकामो जुहूयात पद्मै रक्तैः श्रिय मवाप्नुयोत्॥
हुत्वा श्रिय मवाण्नोनि जाती पुष्पैर्नवैः शुभैः।
शालि तण्डल होमेन श्रिय माप्नोति पुष्कलाम्॥
समिद्भिर्बिल्व वृक्षस्य हुत्वा श्रिय मावाप्नुयात्।
बिल्वस्य शकलै र्हुत्वा पत्रैः पुष्पैः फलैरपि॥
श्रिय माप्नोति परमां सूलस्य शकलै रपि।
समिद्भि बिल्व वृक्षस्य पायसेन च सर्पिषा॥

[देवी भागवत 11-24/38-52]

हिन्दी अनुवाद–पुष्टि, श्री और लक्ष्मी की प्राप्ति के लिए द्विज [ब्राह्मण या उपासक] को चाहिए कि पुष्पों की आहुति दे। लक्ष्मी चाहने वाला पुरुष लाल पुष्पों से हवन करे, इससे उसे लक्ष्मी प्राप्त हो जाती है। बिल्व फल के [बेल फल] खण्डों, पत्रों और पुष्पों से हवन कर पुरुष उत्तम लक्ष्मी प्राप्त कर लेता है। समिधाएं भी बिल्व वृक्ष की ही होनी चाहिएं, दूध और घी मिलाकर हवन करें। सात दिनों तक प्रतिदिन दो-दो सौ आहुतियाँ देने पर लक्ष्मी को पाने का अधिकारी हो जाता है।

मुक्ति प्राप्ति हेतु गायत्री हवन विधि

पद्मानां लक्ष होमेन घृताक्ता नां हुताशने।
प्राप्नोति निखिलं मोक्षं सिध्यत्येव न शंसयः॥

[देवी भागवत 11-21-44]

हिन्दी अनुवाद–एक लाख कमल पुष्प को घी में डुबोकर हवन करने पर मनुष्य सम्पूर्ण मनोरथों को प्राप्त कर लेता है। मुक्ति भी सुलभ हो जाती है, इसमें कोई संशय नहीं है।

गायत्री मंत्र हवन से अन्य विभिन्न लाभ

[देवी भागवत से प्राप्त]

(1) एक सप्ताह तक लाल कमल की सौ आहुति देने पर "सुवर्ण" की प्राप्ति होती है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

(2) बछड़े के गोबर के खण्डों का हवन करने से पशुधन प्राप्त करता है।

(3) पलाश की समिधा का हवन करके पुरुष दीर्घ आयु प्राप्त करता है।

(4) मूल, फल और पल्लव सहित बिल्व की आहुति राज्य प्रदान करती है।

(5) कमल की सौ आहुति देने पर मानव निष्कंटक राज्य प्राप्त करता है।

(6) पीपल के वृक्ष की समिधाओं का हवन युद्ध आदि के अवसर पर विजय प्रदान करता है।

(7) खीर से यदि सौ आहुति दी जाये, तो सप्ताह में वृष्टि होती है।

(8) पलास की समिधा से हवन करने पर "ब्रह्म तेज" प्राप्त होता है।

(9) गायत्री का तिलों द्वारा किया गया हवन सब पापों का विनाशक है।

(10) ग्रह पीड़ा आदि की शान्ति हेतु यवों से हवन करें।

(11) विद्या प्राप्ति हेतु खीर से हवन करें।

(12) बेंत के पत्तों को घी में मिलाकर हवन करने से मनुष्य लखपति बन जाता है।

(13) लाल सरसों से गायत्री मंत्र का हवन करने से समस्त शत्रु वश में हो जाते हैं।

(14) लाल कनेर के पुष्पों से हवन करने पर सभी प्रकार के ज्वर नष्ट हो जाते हैं।

(15) गाय का दूध, मधु और घृत मिलाकर एक लाख मन्त्र द्वारा हवन करने से विदेश में रह रहा व्यक्ति अपने घर वापस आ जाता है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

माँ गायत्री चालीसा खण्ड

उपासको! शास्त्रों का मत है कि देवी-देवताओं का षोड़शोपचार पूजन, मन्त्रों का जप एवं स्तोत्रों का पाठ करने हेतु पर्याप्त ज्ञान की आवश्यकता होती है, परन्तु "चालीसों का पाठ" कहीं भी किया जा सकता है पवित्र होकर। चालीसों का सरल हिन्दी पाठ साधारण पढ़े-लिखे उपासक भी आसानी से कर सकते हैं। चालीसों का पाठ-मंत्र की साधना में परम शक्ति प्रदान करता है।

श्री पंचमुखी गायत्री चालीसा

[दोहा]

पंचमुखी गायत्री माँ, आद्याशक्ति अम्ब।
प्रथम मुख है "आद्याशक्ति", दूजे मुख "परब्रह्म"॥
तीजे "ब्रह्मा" चतुर्थ "विष्णु", पंचम "रूद्र" स्वयम्।
एक ही आदिशक्ति हैं, सृष्टि के स्तम्भ॥
ह्रीं श्रीं क्लीं मेधा, प्रभा, जीवन ज्योति प्रचण्ड।
शांति क्रान्ति जाग्रति प्रगति, रचना शक्ति अखण्ड॥
जगत जननी मंगल करनी, गायत्री सुख-धाम।
प्रणवो सावित्री स्वधा, स्वाहा तुझे प्रणाम॥

[चौपाई]

भूर्भुवः स्वः ॐ युत जननी। गायत्री नित कलिमल दहनी॥
अघर चौबीस परम पुनीता। इनमें बसें शास्त्र-श्रुति-गीता॥
शाश्वत सतोगुणी सतरूपा। सत्य सनातन सुधा अनूपा॥
हंसारूढ़ श्वेताम्बर धारी। स्वर्ण कांति शुचि गगन बिहारी॥
पुस्तक पुष्प कमंडुल माला। शुभ्र वर्ण तनु नयन विशाला॥
ध्यान धरत पुलकित हिय होई। सुख उपजत दुख दुरमति खोई॥
कामधेनु तुम सुर तरु छाया। निराकार की अदभुत माया॥
तुम्हरी शरण गहै जो कोई। टरै सकल संकट सों सोई॥
सरस्वती-लक्ष्मी-तुम काली। दिखै तुम्हारी ज्योत निराली॥
तुम्हरी महिमा पार न पावैं। जो शारद शतमुख गुण गावैं॥
चार वेद की मातु पुनीता। तुम ब्राह्मणी गौरी-सीता॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

महामन्त्र जितने जग माहीं। कोऊ गायत्री सम नाहीं॥
सुमिरत हिय में ज्ञान प्रकासै। आलस पाप अविद्या नासै॥
सृष्टि बीज जग-जननी भवानी। कालरात्रि वरदा कल्याणी॥
ब्रह्मा विष्णु रूद्र सुर जेते। तुम सों पावें सुरता ते ते॥
तुम भक्तन की भक्त तुम्हारे। जननिहिं पुत्र प्राण ते प्यारे॥
महिमा अपरम्पार तुम्हारी। जय जय जय त्रिपदा भयहारी॥
पूरित सकल ज्ञान-विज्ञाना। तुम सम अधिक न जग में आना॥
तुमहिं जानि कछु रहै न शेषा। तुमहिं पाय कछु रहे न क्लेशा॥
जानत तुमहि तुमहि ह्वै जाई। पारस परसि कुधातु सुहाई॥
तुम्हरी शक्ति दिपै सब ठाईं। माता तुम सब ठौर समाईं॥
ग्रह नक्षत्र ब्रह्माण्ड घनेरे। सब गति मान तुम्हारे प्रेरे॥
सकल सृष्टि की प्राण विधाता। पालक पोषक नाशक त्राता॥
मातेश्वरी दया व्रत-धारी। तुम संग तरे पातकी भारी॥
जापर कृपा तुम्हारी होई। तापर कृपा करैं सब कोई॥
मंदबुद्धि ते बुधि बल पावें। रोगी रोग रहित ह्वै जावै॥
दारिद मिटै कटै सब पीरा। नाशै दुख हरै भव भीरा॥
गृह क्लेश चित चिन्ता भारी। नाशै गायत्री भय हारी॥
सन्तति हीन सुसन्तति पावैं। सुख सम्पत्ति युत नहीं आवैं॥
जो सधवा सुमिरें चित लाई। अक्षय सुहाग सदा सुखदाई॥
घर-वर सुखप्रद लहै कुमारी। विधवा रहें सत्यव्रत धारी॥
जयति जयति जगदम्बा भवानी। तुम सम और दयालू न दानी॥
जो सदगुरु सों दीक्षा पावैं। सो साधन को सफल बनावैं॥
सुमिरन करें सुरूचि बड़भागी। लहैं मनोरथ गृही विरागी॥
अष्टसिद्धि नव निधि के दाता। सब समर्थ गायत्री माता॥
ऋषि मुनि यति तपस्वी योगी। आरत अर्थी चिंतित भोगी॥
जो जो शरण तुम्हारी आवैं। सो सो मनवांछित फल पावैं॥
बल बुद्धि विद्या शील सुभाऊ। धन वैभव यश तेज उछाऊ॥
सकल बढ़ें उपजें सुख नाना॥ जो यह पाठ करै धरि ध्याना॥

[दोहा]

यह चालीसा भक्ति युत, पाठ करे जो कोय।
तापर कृपा प्रसन्नता, गायत्री की होय॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ब्रह्म स्वरूपिणी गायत्री चालीसा

[दोहा]

ब्रह्म ज्ञान प्रसारिणी, सकल सिद्धि के खान।
बन्दहुं गायत्री तुम्हें, करहूं कृपा जन जान॥

[चौपाई]

जयति जयति गायत्री माता। ध्यावहिं शंकर विष्णु विधाता॥
ब्रह्मज्ञान प्रसारिणी जय जय। संकट काल निवारिणी जय जय॥
माद भरणि सुख-सम्पत्ति दायिनी। जयति-2 जय विश्व विधायिनी॥
''ॐ'' स्वरूपिणी कलिमल नाशिनी। भू र्भुवः स्वः स्वयं प्रकाशिनी॥
''तत्सवितु'' हंसानिनी धन्या। ''वरेण्यं'' वर विधि कन्या॥
''भर्गो'' भागहिं सकल कलेशा। ध्यावहिं जे देवश्य हमेशा॥
''धीमहि'' धैर्य स्थर्य सदुपायिणी। ''धियो'' बुद्धि-विद्या दायिनी॥
''योनः'' नित नव मंगलकारिणी। ''प्रचोदयात्'' निखिल अघ हारिणी॥
तूही सच्चिदानन्द स्वरूपा। सियाराम रूपिणी अनूपा॥
लषण पवनसुत कृष्ण स्वरूपिनी। राधा नारायण अनुरूपिणी॥
हयग्रीव अरू गरुड़ गोपाला। रमा रमेश नृसिंह विधि बाला॥
शिव पार्वती हंश अरू वृन्दा। भृगुपति सुरगुरु सूरज चंदा॥
क्षिती जल पावक गगन समीरा। ध्यानहिं धरत हरत भवपीरा॥
तूही जनेऊ मध्य विराजै। ब्रह्मसूत्र रूपिणी बनि भ्राजै॥
नव सूत्रण मध्ये सब देवा। करहि सतत जननी तव सेवा॥
ॐकार पावक रवि तक्षक। पितर प्रजापति शशि जग रक्षक॥
नवये निखिल देव अधिवासी। त्रिगुणी कृत श्रीविष्णु प्रकासी॥
ग्रंथि बंध शिवशंकर करहीं। मंत्र तुम्हार तुमहिं अनुसरहिं॥
प्रति अक्षर गुण रूप तुम्हारे। त्रिगुणी कृत नव सूत्रहिं धारे॥
ग्रंथि सुमेरू सहित मधु कर्णिनि। चतुर्विशतिक वर्ण सुधर्निनि॥
आदिशक्ति माँ चरित अनूपा। तोहिं भजि बनहिं रंक सुरभूपा॥
श्वेताम्बरा मराल विहारिणी। पुस्तक पुष्प कमंडल धारिणी॥
तुम्हरे शरण भक्त जो आवैं। वांछित सिद्धि सकल ते पावैं॥
ध्यान धरत हिय भरत हुलासू। सुख उपजत वर ज्ञान प्रकासू॥
तुही जननि सब कवट निवारिणी। दारिद दुरित अविद्या हारिणी॥
चारिऊ वेद करहिं तव ज्ञाना। ॠषि-मुनि सुरहु लगावहिं ध्याना॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

तूही शारदा गौरी काली। ध्यावहिं विष्णु विरंचि कपाली॥
तूही माँ दुर्गा दुःख हारिणी। मोदमयी सुख शान्ति प्रसारिणी॥
महामंत्र जेते जग माहीं। कोऊ गायत्री सम नाहीं॥
बिनु गायत्री मिलहि न ज्ञाना। बिना ज्ञान दुर्लभ निर्वाना॥
गुरु दीक्षा लै जो तोहि ध्यावैं। सुर दुर्लभ पद ते जन पावैं॥
महिमा अमित अतुल सुखदाई। नेति नेति कहि वेदन गाई॥
जेहि पर कृपा करहुं तुम माता। तेहि पर कृपा करहिं जगत्राता॥
वाणी सिद्ध होह तव ध्याये। मनवांछित पावहिं तेहि पाये॥
सकल पदारथ जे जग माहीं। ते भक्तन कहं दुर्लभ नांहीं॥
पावहिं सतत अनुग्रह तोरा। जे तव चरितहिं होंह विभोरा॥
कलियुग एकु चहै व्रत नेमा। गायत्री जप पावहिं क्षेमा॥
अकथ अनादि तोर गुण गाथा। सादर भक्त नवावहिं माथा॥
कौन सके महिमा कहि तोरी। अगम अपार अनंत अछोरी॥
करहिं पाठ नित जे चालीसा। सुख सम्पत्ति पावहिं वागीशाः॥

[दोहा]

श्री गायत्री अम्बिका, दुर्गा मंगल मूल।
पुरवहु मन मनोकामना, मिटहिं सकल भव शूल॥
नित्य नेम करि भक्तियुत, पाठ करहि जे प्रात।
तिनकी पुरवहिं कामना, श्री गायत्री मात॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

माँ गायत्री कवच, स्तोत्र एवं स्तुति खण्ड

श्री गायत्री-पञ्जर स्तोत्र

[श्री ब्रह्मा जी द्वारा रचित]

[श्लोक]

भगवन्तं देवदेवं ब्रह्माणं परमेष्ठिनम्।
विधातारं विश्वसृजं पद्मयोनिं प्रजापतिम्॥१॥
शुद्ध स्फटिक सङ्काशं महेन्द्र शिखरो-पहम।
बद्ध पिङ्ग जटार्जूट-तड़ित-कनक-कुण्डलम्॥२॥
सरञ्चन्द्रा भवदनं स्फुर-दिन्दी-वरेक्षणम्।
हिरण्मयं विश्व रूप-मुपवीत-जिनावृतम्॥३॥
मौक्ति कामाक्ष-वलय-स्तन्त्री लय-समन्वितः।
कर्पूरोद-धूलित-तनुः स्त्रष्टु-र्नचन-वर्द्धनम्॥४॥
विनये-नोप सङ्गमय शिरसा प्रणिपत्य च।
नारदः परिप-प्रच्छ देवर्षि-गण-मध्यगः॥५॥

हिन्दी अनुवाद—जगत-पिता ब्रह्मा जी जो इस सृष्टि के विधाता हैं, संसार की सृष्टि करने वाले हैं, कमल से उनकी उत्पत्ति है, जो प्रजाओं के पति हैं॥१॥ जिनके शरीर का रंग शुद्ध स्फटिक के समान उज्जवल है, जो महेन्द्र गिरि के समान शोभायमान हैं, जिन्होंने पीत वर्ण का जटाजूट बाँधे हुए हैं, जिनका कानों का कुंडल बिजली के समान चमाचम कर रहा है॥२॥ जिनका मुख-मण्डल शरतकालीन चन्द्रमा के समान प्रसन्न तथा जिनका नयन कमल के समान शोभायमान है, जो हिरण्य गर्भ हैं, जिनके शरीर पर यज्ञोपवीत तथा अजिन शोभा पा रहा है॥३॥ मोतियों के जप माला का वलय [कंकण] जिनके हस्त में शोभायमान है, जो तन्त्री [वीणा] लय से संयुक्त हैं, जिनका तन कर्पूर से उपलिप्त है तथा जिनके दर्शन से नैनों को आनन्द प्राप्त होता है॥४॥ ऐसे ब्रह्मा जी के समीप देवर्षि नारद ने विनयपूर्वक जाकर प्रणाम किया और उनसे पूछा॥५॥

[श्लोक]

श्री नारद-उवाच :-

भगवान्! देव-देवेश! सर्वज्ञ! करुणानिधे।
श्रोत-मिच्छामि प्रश्नेन भोग-मोक्षेक-साधनम्॥६॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ऐश्वर्यस्य समग्रस्य फलदं द्वन्द्वं वर्जितम्।
ब्रह्म -हत्यादि पापघ्नं पापाद्य-रिभया-पहम्॥७॥
यदेकं निष्फलं सूक्ष्मं निरञ्जन मना-मयम्।
यत्ते प्रियतमं लोके तन्मे ब्रूहि पितर्मम॥८॥

हिन्दी अनुवाद—देवर्षि नारद जी ने पूछा—हे भगवन्! हे देवदेवेश! हे सर्वज्ञाता! हे करुणानिधि! मैं आपसे जानना चाहता हूँ कि भोग और मोक्ष प्राप्त करने का क्या साधन है?॥६॥ मनुष्य सम्पूर्ण ऐश्वर्य से परिपूर्ण कैसे हो सकता है? ब्रह्म-हत्या आदि पापों से कैसे मुक्त हो सकता है? तथा पापरूपी दुश्मनों का दमन करने का क्या उपाय है?॥७॥ इस संसार में निराकार, माया रहित तथा निर्दोष क्या है? तथा आपका सबसे प्रियतम कौन हैं। हे प्रभु! आप कृपाकर ये सब हमें बतलाएँ॥८॥

[ब्रह्मोवाच]

शृणु नारद! वक्ष्यामि ब्रह्म-मूल - सनातनम्।
सृष्टयादौ वन्मुखे क्षिप्तं देव-देवेन विष्णुना॥९॥
प्रपञ्च बीज मित्या हुरूत पत्ति-स्थिति हेतुकम्।
पुरा मया तु कथितं कश्य पाय सुधीमते॥१०॥
सावित्री पञ्जरं नाम रहस्यं निगम-त्रये।
ऋष्यादिकं च दिग्वर्णं साङ्ग वरणकं क्रमात्॥११॥
वाहनाऽयुध मन्त्रा-स्त्रं मूर्ति-ध्यान-समन्वितम्।
स्तोत्रं शृणु प्रवक्ष्यामि तव स्नेहाच्च नारद॥१२॥

हिन्दी अनुवाद—श्री ब्रह्मा जी ने कहा—हे नारद! जो सृष्टि का "मूल परब्रह्म" [आद्यशक्ति] हैं, जो सनातन हैं और सृष्टि के आरम्भ में देवाधिदेव श्री विष्णु ने जिसे मेरे मुख में प्रक्षिप्त किया था॥९॥ जो समस्त प्रपंच-भूत इस संसार का बीज तथा उसके स्थिति का कारण हैं और जिसे मैंने पूर्व काल में महर्षि कश्यप को उपदेश किया था। जो वेदों में "सावित्री पंजर" [गायत्री] नाम से विख्यात हैं, जो ऋषि, दिग्वर्ण, सांगावरण, वाहन, आयुध, मन्त्र, अस्त्र, मूर्ति तथा ध्यान से युक्त हैं, उस "स्तोत्र" को सुनो, क्योंकि तुम मेरे पुत्र हो, इसलिए तुम्हारे ऊपर स्नेह कर, यह अत्यन्त गोपनीय स्तोत्र सुना रहा हूँ॥१०-१२॥

[श्लोक]

ब्रह्म निष्ठाय देयं स्याद देयं यस्य कस्यचित्।
आचम्य नियतः पश्चादात्म-ध्यान-पुरः सरम्॥१३॥
ओमित्या-दौविचिन्त्या-थब्योम-हेमाब्ज-संस्थितम्।
धर्म-कन्द-गतज्ञान-मेश्वर्यैष्टि दलान्वितम्॥१४॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

वैराग्य कर्णिका-सिनां प्रणव - ग्रह-मध्यगाम्।
ब्रह्म वेदि समायुक्तां चैतन्य-पुरम-ध्यगाम्॥१५॥
तत्व हंश समाकीर्णां शब्द पीठे सु-संस्थिताम्।
नाद विन्दु कला तीतां गोपुरे-रूप शोभिताम्॥१६॥

हिन्दी अनुवाद—यह स्तोत्र ब्रह्मनिष्ठ मनुष्य को ही बताना चाहिए, जिस किसी को नहीं। स्तोत्र पाठ आरम्भ करने से पूर्व स्नानादि से पवित्र होकर, आचमन करना चाहिए, तत्पश्चात्–"ब्रह्म स्वरूपा गायत्री का ध्यान" करना चाहिए॥१३॥

गायत्री ध्यान का स्वरूप—जो गायत्री "प्रणव" (ॐकार) स्वरूपिणी हैं, जो गगन सदृश सुवर्णमय कमल पर विराजित हैं, जिस कमल का धर्मरूप कन्द है, जिससे ज्ञान की उत्पत्ति हुई है और जो गायत्री माँ ऐश्वर्य आदि आठ कलाओं से युक्त हैं॥१४॥ जो वैराग्य रूप कमल कर्णिका पर विराजमान हैं और प्रणव ही जिनका घर है, जो ब्रह्म रूपी वेदी से युक्त हैं तथा चैतन्य रूपी पुर में निवास करती हैं॥१५॥ जो तत्त्वरूपी हंश से घिरी हुई हैं तथा शब्द पीठ पर विराजित हैं, नाद-बिन्दु तथा कला से परे हैं, जो शब्द ही चैतन्य पुर का गोपुर [प्रधान द्वार] है॥१६॥

[श्लोक]

निगमार्गल सञ्छन्नां निर्गुन द्वार-वाटिकाम्।
चर्तुवर्ग फलोपेतां महाकल्प वनैर्वृताम्॥१७॥
सान्द्रा-नन्द सुधा-सिन्धु निगम द्वार वाटिकाम्।
विद्या ऽ विद्या मृतत्व-वादि प्रकारैर भि संवृताम्॥१८॥
ध्यान-धारण योगादि तृण गुल्म-लता वृताम्।
सद-सच्चित स्वरूपाख्य मृग-पक्षी-समा कुलाम्॥१९॥
विद्याऽविद्या विचारत्वा लोका लोका चला वृताम्।
अविकार समा-शिलष्ट-निज ध्यान गुणा वृताम्॥
पञ्ची करण- पञ्चोत्थ-भूतृ-तत्व निवेदिताम्॥२०॥
वेदो-पनिषद्-दर्थाख्य देवर्षि-गण-सेविताम्।
इतिहास-ग्रह-गणैः सदारैर-भि-वन्दिताम्॥२१॥

हिन्दी अनुवाद—विद्या-अविद्या, अमृत-तत्वादि रूप प्रकार [चहारदीवारी] से जो चैतन्य रूप पुर में परिवेष्टित हैं, जो वेद रूपी अर्गला से संछन्न हैं, तथा जो निर्गुण द्वार वाली वाटिका [बगीचा] रूप हैं॥१७॥ जो धर्म, अर्थ, काम तथा मोक्ष रूपी चतुर्वर्ग से संयुक्त हैं तथा जो मनुष्य के वांछा सिद्धि के लिए महाकल्प वृक्ष रूप वन से आवृत्त हैं। जो घने आनन्द के सुधा-सागर हैं, निर्गुण ब्रह्म ही जिनका द्वार है, वैसी ही वाटिका

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

है, जो वाटिका में ध्यान-धारण योग रूप तृण-गुल्म-लता से आवृत्त हैं। तथा जिस वाटिका में सत्-असत्-चित्त स्वरूप मृग एवं पक्षी विचरण कर रहे हैं॥१८-१९॥ विकार रहित और ध्यान रूपी गुणों से आवृत्त हैं तथा पञ्ची करण [वेदान्त विषय] पंचोत्थ, [पंच ज्ञानेन्द्रियों से भाषित होने वाला] चित् तथा भूत तत्त्वों से जिसका ज्ञान होता है॥२०॥ वेद और उपनिषद् रूपी महर्षि गण जिस निर्गुण वाटिका रूपी सावित्री में निवास करते हैं, इतिहास रूपी ग्रह स्त्री समेत जिसकी प्रार्थना करते हैं॥२१॥

[श्लोक]

गाथाप्सरो भिर्यक्षैश्च-गण-किन्नर-सेविताम्।
नाग सिंह-पुराणाख्यै पुरुषैः कल्प चारणैः॥२२॥
कृतगान - विनोदादि - कथलापन - तत्परा।
तदित्य वाङ्ग - मनो -गम्य - तेजोरूप धरां पराम्॥२३॥
जगतः प्रसवित्रीं तां सवितुः सृष्टि कारिनिम्।
वरेण्य-मित्यन्न-मयीं पुरुषार्थ फल-प्रदाम्॥२४॥
अविद्या वर्ण-वर्ज्यां च तेजोवद् गर्भ-संज्ञिकाम्।
देवस्य सच्चिदानन्द - परब्रह्म रसात्मि काम्॥२५॥

हिन्दी अनुवाद—अनेक प्रकार की गाथाएँ रूपी अप्सरा, यक्ष, गण, किन्नर जिसमें निवास करते हैं। पुराण रूपी नृसिंह जिस वाटिका में गरज रहा है, कल्याण रूपी चारण पुरुष जिसकी स्तुति करते हैं॥२२॥ तथा चारण रूपी कल्प पुरुष अनेक प्रकार के विनोद और गाथाओं से गान कर रहे हैं, जो परब्रह्म स्वरूपा हैं, वाणी और मन से सर्वथा परे हैं, दिव्य तेजोमय स्वरूप ही जिनका विग्रह है॥२३॥ इस चराचर जगत को जन्म देने वाली तथा सविता की भी सृष्टि करने वाली, जगत के भरण-पोषण के लिए अन्न स्वरूप धारण करने वाली, धर्म, अर्थ तथा काम एवं मोक्ष रूप चारों पदार्थों के फल को देने वाली हैं॥२५॥ जिनमें अविद्या का लेश नहीं है, जो सर्वदा तेजो रूपेण विराजित हैं, सच्चिदानन्द देवता की जो परब्रह्म रूप रस स्वरूपा हैं॥२५॥

[श्लोक]

धीमयं हंश वै तद्वद् ब्रह्म द्वैत - स्वरूपिणीम्।
धियो यो नस्तु सविता प्रचोदया-दुपासिताम्॥२६॥
परोऽसो सविता साक्षादनो निर्हरणाय च।
परो रजस इत्यादि परं ब्रह्म सनातनम्॥२७॥
आपो ज्योति रिति द्वाभ्यां पाञ्च भौतिक संज्ञकम्।
रसोऽमृतं ब्रह्म पदैस्तां नित्यां तपिनीं पराम्॥२८॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

भूर्भुवः सुवरित्ये-तैर्निग-मत्व-प्रकाशिकाम्।
मर्ह्रजनः-स्तपः सत्य लोकोपरि-सु संस्थिताम्॥२९॥
ताद-गस्या विराड् रूप - किरीट - वर राजिताम्।
व्योम केशाल-काकाश रहस्यं प्रव-दाम्यहम्॥३०॥

हिन्दी अनुवाद—परब्रह्म के अद्वैत-स्वरूपिणी भगवती सावित्री का मैं ध्यान करता हूँ। वह सविता देवता मेरे द्वारा उपासित होकर हमारी बुद्धि को अच्छे कार्य में प्रेरित करें॥26॥ पाप को दूर करने के लिए जो साक्षात् सविता स्वरूपा हैं तथा रजोगुण से परे जो सनातन परब्रह्म स्वरूप हैं॥27॥

"आपो ज्योति" इन दो रूपों से इस संसार के मूल पंचभौतिक शरीर से विराजित हैं। तथा अमृत-रस-रूपी अपने किरणों से नित्य सूर्य रूपा हैं॥28॥ जो "भूर्भुवः स्वः" इन तीनों पदों से समस्त पदार्थ को प्रकाशित करने वाली हैं तथा मह, जन, तप तथा सत्य लोक से ऊपर विराजमान हैं॥29॥ सुन्दर किरीट से सुशोभित होकर जो इस संसार में विराट रूप से विराज रही हैं। आकाश रूपी केशों वाली उस व्योम केशा भवानी का मैं रहस्य बतला रहा हूँ॥30॥

[श्लोक]

मेघ-भ्रुकुटिका - क्रान्त - विधि विष्णु शिवार्चिताम्।
गुरु-भार्गव कर्णान्तां सोम सूर्याग्नि लोचनाम्॥३१॥
इडा पिङ्गल सूक्ष्माभ्यां वायु नाशा पुटान्वि ताम्।
सन्ध्या-द्विरोष्ठ-पुटितां-लसद् वाग भूप जिह्विकाम्॥३२॥
संध्यांसौ द्युमणे कण्ठ - लसद् बाहु समन्विताम्।
पर्जन्य हृदयासक्त वसु-सुस्तन - मण्डलाम्॥३३॥
आकाशोदर वित्रस्त नाभ्य वान्तर-देशकाम्।
प्राजा-पत्याख्य जघनां कटीन्द्राणीति संज्ञिकाम्॥३४॥
उरू-मलय - मेरुभ्यां शोभमाना सुरद्विषम्।
जानुनी जह्नु -कुशिक - वैश्वदेव - सदा भुजाम॥३५॥

हिन्दी अनुवाद—मेघ ही जिनकी मनोहर भृकुटि है तथा ब्रह्मा-विष्णु और रूद्र जिनकी सदैव वन्दना करते हैं। बृहस्पति और शुक्र जिस विराट स्वरूपा भवानी के कान हैं। चन्द्रमा तथा सूर्य जिनके दो नैन हैं॥३१॥ वायु ग्रहण के लिए सूक्ष्म इड़ा और पिंगला ही जिनके नासिका के दो छिद्र हैं, दोनों सन्धाएँ ही जिस विराट देवी के दो ओष्ठ हैं, शोभना वाणी ही जिनकी जिह्वा है॥३२॥ दोनों संध्या ही जिनके स्कन्ध देश हैं, द्युमणि सूर्य जिनके कंठ हैं, पर्जन्य ही जिनका हृदय है, वसु ही जिनके मनोहर स्तन हैं॥३३॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

गगन ही जिनका नाभि से अवान्तर देश तक व्याप्त उदर है, प्रजापति ही जिनके जंघा हैं तथा समस्त इन्द्रियाँ ही जिनके कटि प्रदेश हैं ॥३४॥ मलय तथा मेरू ही उरू हैं, असुर ही जिनके शत्रु हैं, वैष्वदेव ही जिनकी भुजाएँ हैं ॥३५॥

[श्लोक]

ग्रह-राश्यृक्ष देवर्षि मूर्ति चपर -संज्ञिकाम्।
तिथि-मासर्तु- वर्षाख्य - सुकेतु निमि - सात्मिकाम् ॥३६॥
अहोरात्रार्द्ध-मासाख्यां सूर्या -चन्द्र मसात्मिकाम्।
माया कल्पित - वैचित्र्य सन्ध्याच्छादन संवृताम् ॥३७॥
ज्वलत कलानल प्रख्यां तड़ित कोटि सम - प्रभाम्।
कोटि सूर्य - प्रतीकाशां चन्द्र कोटि सु-शीतलाम् ॥३८॥
सुधा मण्डल मध्यस्थां सानद्रा-नन्दा-मृतात्मिकाम्।
प्रागतीतां मनोरम्यां वरदां वेद-मातरम् ॥३९॥
चराचर मयीं नित्या - ब्रह्माक्षर समन्विताम्।
ध्यात्वा स्वात्मनि भेदेन ब्रह्म पञ्जर-मारभेत ॥४०॥

हिन्दी अनुवाद–[काल स्वरूपिणी देवी का वर्णन] जिस पर ब्रह्म स्वरूपिणी भवानी की ग्रह, राशि, नक्षत्र तथा देवर्षि मूर्तियाँ हैं, तिथि-मास-ॠतु, वर्ष और निमिष ही जिनके ध्वजा हैं ॥३६॥ दिन-रात और पक्ष ही जिनका नाम है, सूर्य तथा चन्द्र ही जिनकी आत्मा हैं, माया-कल्पित विचित्रता से युक्त संध्या ही जिनका वस्त्र है ॥३७॥ जो जलते हुए कालाग्नि के समान विकराल हैं और करोड़ों विद्युत के समान देदीप्यमान जिनकी कान्ति है। करोड़ों सूर्य के समान जो तेजस्वी हैं तथा करोड़ों चन्द्र के समान जो सुशीतल हैं ॥३८॥ जो सुधा-मण्डल के मध्य में विराजित रहने वाली हैं तथा घने आनन्द सागर के समान हैं। सृष्टि आरम्भ के पूर्व से ही जो विद्यमान हैं, जो हृदय को आनन्द प्रदान करने वाली हैं तथा साक्षात वेदों की माता हैं ॥३९॥ चर-अचर जगत ही जिनका स्वरूप है, जो नित्य तथा अक्षर हैं। इस प्रकार भगवती का विराट रूप तथा कालात्मक रूप का ध्यान कर, तब ब्रह्म-पंजर स्तोत्र का पाठ करना चाहिए ॥४०॥

[श्लोक]

पञ्जरस्य ॠषिश्चाहं छन्दो विकृति-रुच्यते।
देवता च परो हंशः परब्रह्मा ऽधि देवता ॥४१॥
प्रणवो बीज शक्तिः स्यादों कीलक मुदा-हृतम्।
तत्तत्वं धीमहि क्षेत्रं धियोऽस्त्रं यः परं पदम् ॥४२॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

मन्त्र-मापो ज्योति-रिति योनिर्हसः सन्बन्धकम्।
विनि-योगस्तु सिद्धयर्थं पुरुषार्थ चतुष्टये॥४३॥
ततस्तै रङ्ग-षटकं स्यात्तै-रैव व्यापक-त्रियम्।
पूवोक्त देवतां ध्यायेत् साकार-गुण-संयुताम्॥४४॥

हिन्दी अनुवाद—पुनः परम-पिता ब्रह्मा जी ने कहा—हे नारद! सुनो, "गायत्री पञ्जर" स्तोत्र का ऋृषि मैं हूँ, विकृति ही इनका छन्द है, परब्रह्म ही इनका अधि-देवता तथा हंश ही इसका देवता है॥४१॥ "प्रणव" बीज शक्ति है तथा "ॐ" इनका कीलक है। "तत्"-तत्व है, "धीमहि" - क्षेत्र है, "श्रियः" अस्त्र है, "यः" यह्री पद है, "आपो ज्योती" मन्त्र है, "हंसः" योनि है, पुरुषार्थ चतुष्टय की सिद्धि ही गायत्री पञ्जर पाठ का—"विनियोग" है॥४२-४३॥

तदनन्तर अंग न्यास तथा कर न्यास करें। पश्चात् व्यापकादि तीन मुद्रा प्रदर्शित कर, आकार और गुण का स्मरण करता हुआ भगवती गायत्री का "ध्यान" करे॥४४॥

[ध्यान मंत्र]

[श्लोक]

पञ्च-वक्त्रां-दशुभुजां त्रिपञ्च नयनै-र्युताम्।
मुक्ता विद्रुम-सौवर्णां सित-शुभ्र समान नाम॥४५॥
वाणीं परां रमां मायां चामरै-र्दर्पणै-र्युताम्।
षडङ्ग-देवता-मन्त्रै रूपाध वचवा - त्मिकाम्॥४६॥
मृगेन्द्र वृष-पक्षीन्द्र मृग-हंसानने स्थिताम्।
अर्द्धैन्दु-वद्ध मुकुट-किरीट -मणि -कुण्डलाम्॥४७॥
रत्न-ताटङ्क- माङ्गल्य परग्रै वेय नुपूराम्।
अङ् गुलीयक -केचुर कंकणाद्यै रलङ् कृताम्॥४८॥
दिव्य-स्त्रग-वस्त्र-संछन्न रवि मण्डल मध्यगाम्।
पराभ्याब्ज-युगलां शंख-चक्र गदा ऽङ्कुशाम्॥४९॥
शुभ्रं कपालं दधतीं वहन्ती मक्ष - मालिकाम्।
गायत्री वरदां देवी सावित्रीं वेद-मातरम्॥५०॥

हिन्दी अनुवाद—[पंचमुखी गायत्री ध्यान] जिन भगवती गायत्री माँ के पाँच मुख तथा दश भुजा हैं, पन्द्रह नेत्र हैं। जिनके पांचों मुख क्रमशः मोती, मूंगा, सुवर्ण, स्वच्छ तथा शुभ्र हैं॥४५॥ सरस्वती, रमा, माया तथा चामर व दर्पण से संयुक्त हैं। षडंग, देवता तथा मन्त्रों से जिनके रूपादि अवयव ज्ञात

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

होते हैं।।४६।। जो दुर्गा रूप से सिंह पर, माहेश्वरी रूप से बैल पर, वैष्णवी रूप से गरुड़ पर तथा ब्राह्मणी रूप से हंसासन पर विराज रही हैं। अर्द्ध चन्द्र से संयुक्त जिनका मुकुट एवं किरीट है तथा जिनका कुण्डल मणि से संयुक्त है।।४७।। जो रत्न-जड़ित ताटक [कान का बाला] तथा सौ भाग्य युक्त ग्रैवेचक [गले का हार, कंठा] नुपूर [पैर का आभूषण] अंगूठी, केयर [बाजूबन्द] तथा कंकणादि अलंकारों से अलंकृत हैं।।४८।। अनेक सुन्दर माला तथा वस्त्र से विभूषित होकर आदित्य मण्डल में निवास करने वाली हैं। वर, भय, कमल का जोड़ा, शंख, चक्र, गदा, अंकुश, शुभ्र कपाल तथा जप माला जिनके हाथों में शोभायमान हैं। ऐसी वर देने वाली तथा बुद्धि को प्रेरणा प्रदान करने वाली भगवती वेदमाता गायत्री का स्मरण करना चाहिए।।४८-५०।।

[श्लोक]

आदित्य पथ गाभिन्यां स्मरेद् ब्रह्म-स्वरूपिणीम्।
विचित्र मंत्र जननीं स्मरेद् विद्या सरस्वतीम्।।५२।।
त्रिपदा ऋृङ्मयी पूर्वामुखी ब्रह्मास्त्र संज्ञिका।
चतुर्विंश तित-त्वाख्या पातु पाचीं दिशं मम।।५३।।
चतुष्पाद यजुर्ब्रह्म दण्डाख्या पातु दक्षिणाम्।
षट्त्रिंशं-तत्व युक्ता सा पातु मे दक्षिणां दिशम्।।५४।।
प्रत्यङ् मुखी पञ्चपदी पञ्चाशत्तत्व रूपिणी।
पातु प्रतीची मनिषं शाम ब्रह्म शिरोडङ्किता।।५५।।
सौम्या ब्रह्मस्व रूपाख्या साथर्वाङ्ग रसा-त्मिकाम्।
उदीचीं षट्पदा पातु चतुशषष्ठि कलात्मिका।।५६।।

हिन्दी अनुवाद–आदित्य पथ से चलने वाली, विचित्र मंत्रों को उत्पन्न करने वाली, ऐसी परब्रह्म स्वरूपा भगवती सरस्वती का ध्यान करना चाहिए।।५२।। पूर्वाभि-मुखी, त्रिपाद ऋृचा से युक्त, ऋृग्वेद स्वरूपा, चौबीस तत्त्वों वाली ब्रह्मास्त्र संज्ञिका भगवती पूर्व दिशा में हमारी रक्षा करें।।५३।। चार पाद वाली दक्षिणा-भिमुखी यजुर्वेद स्वरूपा, छत्तीस तत्त्वों वाली, ब्रह्म दण्ड संज्ञिका भवानी दक्षिण दिशा में हमारी रक्षा करें।।५४।। पाँच पाद वाली पश्चिमा-भिमुखी पचास तत्त्वों वाली सामवेद स्वरूपिणी ब्रह्म-शिर-संज्ञिका देवी पश्चिम दिशा से मेरी रक्षा करें।।५५।। छह पद वाली, चौंसठ कला युक्त अथर्वांगि रस स्वरूपा, उत्तरभिमुखी ब्रह्म-स्वरूप संज्ञिका देवी उत्तर दिशा से मेरी रक्षा करें।।५६।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

[श्लोक]

पञ्चा शत्ततत्व भव-पादा - सताक्षरी।
व्योमाख्या पातु मे चोर्ध्वां दिशं वेदाङ्ग - संस्थिता॥५७॥
विधुन्निभा ब्रह्म संज्ञा मृगा रूढ़ा चतुर्भुजा।
चापेषु चर्मा ऽ सिधरा पातु मे पावकीं -दिशम्॥५८॥
ब्राह्मणी कुमारी गायत्री रक्ताङ्गी हंश-वाहिनी।
विभ्रत्कमण्डल-ल्वक्ष स्त्रक स्त्रुवान् मेपातु नैर्ऋतीम्॥५९॥
चतुर्भुजा वेदमाता शुक्लाङ्गी वृष-वाहिनी।
वराभय कपालाक्ष-स्त्रग्विणी पातु वारूणीम्॥६०॥
श्यामा सरस्वती वृद्धा वैष्णवी गरुड़ासना।
शङ्खाराब्जा-भयकरा पातु शैवीं दिशं मम्॥६१॥

हिन्दी अनुवाद–ग्यारह पाद [पैर] वाली, पचास तत्वों से युक्त, शताक्षरी, जिनका वास वेदांग में है, वह कामाख्या देवी ऊपर से मेरी रक्षा करें॥५७॥ मृग की सवारी करने वाली, चार भुजाओं वाली, बिजली के समान देदीप्यमान, धनुष, बाण, ढाल एवं तलवार धारण करने वाली ब्रह्म संज्ञिका देवी अग्नि कोण से मेरी रक्षा करें॥५८॥ हंश की सवारी करने वाली, रक्तवर्णा, कमंडल, अक्षमाला, स्त्रक तथा स्त्रुवा को धारण करने वाली, कौमारी ब्रह्मशक्ति स्वरूपा माँ गायत्री नैत्र्कृत्य कोण से हमारी रक्षा करें॥५९॥ शुक्ल वर्णा, बसहा की सवारी करने वाली, वर, अभय, कपाल और अक्षमाला को धारण करने वाली, चार भुजा वाली भगवती वेदमाता, पश्चिम दिशा से मेरी रक्षा करें॥६०॥ श्यामा सरस्वती, शक्तियों में श्रेष्ठ, गरुड़ की सवारी करने वाली, शंख, असि, अब्ज तथा अभय को धारण करने वाली, वैष्णवी शक्ति ईशान कोण से मेरी रक्षा करें॥६१॥

[श्लोक]

चातुर्भुजा वेदमाता गौराङ्गी सिंह-वाहना।
वरा ऽभयाब्ज युगलै-र्भुजैः पात्व धरां दिशम्॥६२॥
तत्तत्पार्श्व-स्थिताः स्व स्ववाहना-युध भूषणाः।
स्व-स्वदिक्षु स्थिताः पान्तु ग्रह शक्त्य-ङ्ग देवता॥६३॥
तत्तत्पार्श-स्थिताः स्व स्व-वाहनायुध-भूषणाः।
स्व-स्वदिक्षु स्थिताः पान्तु ग्रह-शक्त्यङ्ग देवताः॥६४॥
मन्त्राधि देवता रूपा मुद्रा-धिष्ठान देवताः।
व्यापकत्वेन पात्व स्माना पहृत्तल -मस्तकम्॥६५॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

तत्पदं मे शिरः पातु भाल मे सवितुः पदम्।
वरेण्यं मे दृशौ पातु श्रुति भर्गः सदामम्॥६६॥
घ्राणं देवस्य मे पातु पातु धीमहि मेमुखम्।
जिह्वां मम धियः पान्तु कण्ठं मे पातु यः पदम्॥६७॥

हिन्दी अनुवाद–गोरे रंग वाली, सिंह पर सवार, चार भुजाओं वाली वेदमाता, जिनके हाथों में वर, अभय तथा कमल के जोड़े हैं वे महामाया नीचे से हमारी रक्षा करें॥६२॥ अपने-अपने दिशाओं में स्वामिनी रूप से विराजित ग्रहों की शक्तियाँ, अपने प्रत्यधि-देवता सहित, अपने वाहन, आयुध तथा आभूषणों से सुसज्जित होकर उन-उन दिशाओं से हमारी रक्षा करें॥६३॥ मंत्रों के प्रत्यधि-देवता रूप तथा मुद्रा के अधिष्ठान देवता, अपने व्यापक रूप से पैर के तलबे से लेकर मस्तक पर्यन्त हमारी रक्षा करें॥६४॥ ''तत्'' पद मेरे शिर की रक्षा करें, ''सवितुः'' पद मस्तक की, ''वरेण्यम्'' हमारे नेत्रों की तथा ''भर्गः'' पद मेरे कानों की रक्षा करें॥६५॥ ''देवस्य'' हमारे नाशिका की, ''धीमहि'' हमारे मुख की, ''धियः'' पद हमारे जीभ की तथा ''यः'' पद मेरे कण्ठ की रक्षा करें॥६६॥ ''नः'' पद कन्धों की तथा ''प्रचोदयात्'' पद हमारे भुजाओं की रक्षा करें। ''पर'' पद हमारे हाथों की तथा ''रजसे'' मेरे पैरों की रक्षा करें॥६७॥

[श्लोक]

नः पदं पातु मे स्कन्धौ भुजौ पातु प्रचोदयात्।
करौ मे च परः पातु पादौ मे रजसेऽवतु॥६७॥
असौ मे हृदयं पातु मम-मध्य मदाऽवतु।
ओं मे नाभिं सदा पातु कटिं मे पातु मे सदा।
ओं मापः सक्विथनी पातु गुह्यं ज्योतिः सदा मम्॥६८॥
उरूः मम रसः पातु जानुनीं अमृतं मम्।
जंघे ब्रह्मा पदं पातु गुल्फौ भूः पातु मे सदा॥६९॥
पादौ मम भुवः पातु सुवः पात्व खिलं वपुः।
रोमाणि मे महः पातु रोमकं पातु मे जनः॥७०॥
प्राणांश्च धातु-तत्वानि तदीशः पातु मे तपः।
सत्यं पातु ममायूंषि हंसौ बुद्धिं च पातु मे॥७१॥
शुचिषत पातु मे शक्रं वसुः पातु श्रियं मम्।
मतिं पात्वान्त-रिक्ष-सद्धोता दानं च पातु मे॥७२॥

हिन्दी अनुवाद–''असो'' मेरे हृदय की तथा ''अदा'' मेरे हृदय मध्य और ''ॐ'' मेरे नाभि की, तथा ''मे'' पद मेरे कमर की रक्षा करें। ''ॐ

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

आप:'' पद सक्थिनी [घुटनों] की तथा ''ज्योति:'' हमारे गुप्त स्थानों की रक्षा करें ॥६८॥ ''रस:'' मेरे ऊरू की तथा ''अमृत'' जानु की, ''ब्रह्मपद'' जंघों की तथा ''भू'' पद मेरे गुल्फ-प्रदेश की रक्षा करें ॥६९॥ ''मह:''- मेरे रोमों की तथा ''जन:'' मेरे अन्य केशों की रक्षा करें ॥७०॥ ''तप:'' प्राण, मुख, धातु तथा जीव की रक्षा करें। ''सत्यं'' मेरे आयु की तथा ''हंस:'' मेरे बुद्धि की रक्षा करें ॥७१॥ ''शुचिसत्'' हमारे शुक्र की, वसु हमारी श्री की, अन्तरिक्ष मेरी मति की और ''होता'' मेरे दाँतों की रक्षा करें ॥७२॥

[श्लोक]

वेदिषत पातु मे विद्या-मतिथिः पातु मे गृहम्।
धर्मं दुरोण-सत्पातु नृषत्पातु सुतान् मम ॥७३॥
वरसत्पातु मे भार्या-मृत-सत्पातु मे सुतान्।
व्योम-सत् पातु मे बन्धून् भ्रातृण-ब्जाश्च पातु मे ॥७४॥
पशून मे पातु गोजाश्च-ॠतजाः पातु मे भवम्।
सर्वं मे अद्रिजाः पातु यानं मे पात्वृतं सदा ॥७५॥
अनुक्त-मथ यत स्थानं शरीरेऽन्तर्बहिश्च यत्।
तत्सर्वं पातु मे नित्यं हंसः सोऽहम हर्निशम ॥७६॥
इदं तु कथितं सम्यङ्ग मया ते ब्रह्म पंजरम्।
सन्ध्योः प्रत्यहं भक्त्या जप काले विशेषतः ॥७७॥

हिन्दी अनुवाद–''वेदिषत'' हमारी विद्या की, तथा ''अतिथि'' मेरे गृह की, ''दुरोणसत्'' धर्म की और ''नृषत्'' मेरे पुत्रों की रक्षा करें ॥७३॥ ''वरसत'' मेरी पत्नी की, तथा ''ॠतसत्'' बालकों की, ''व्योमसत्'' बन्धुओं की तथा ''अजा'' मेरे समस्त भाई-बन्धुओं की रक्षा करें ॥७४॥ ''गोजा'' मेरे पशुधन की, ''ॠतजा'' मेरे जन्म की, ''अदित्रा'' मेरे सब कुछ की तथा ''ॠत'' हमारे वाहनों की रक्षा करें ॥७५॥ इस शरीर की रक्षा के लिए हमने जिन स्थानों को नहीं कहा है तथा जो स्थान शरीर के भीतर और बाहर हैं, जिन्हें इस कवच में नहीं कहा गया है, उन सभी स्थानों की हंश, ''सोऽहम्''-ये दोनों पद रक्षा करें ॥७६॥

[श्लोक]

धारयेद् द्विजवर्यो यः श्रावयेद् वा समाहिताः।
स विष्णु स शिवः सोऽहं सोऽक्षरः स विराट-स्वरूप ॥७८॥

हिन्दी अनुवाद–ब्रह्मा जी ने नारद से कहा–यह ब्रह्म-पंजर नामक स्तोत्र मैंने तुमसे कहा। जो उपासक भक्तिपूर्वक दोनों संध्या के जप काल

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

में इसका सावधानी से पाठ करते हैं अथवा किसी को सुनाते हैं, वे विष्णु, शिव, साक्षात् परब्रह्म, अक्षर तथा स्वयं ''विराट रूप'' बन जाते हैं ।।७७-७८ ।।

माँ गायत्री शताक्षर मंत्र स्तोत्र

[श्लोक]

शताक्ष-रात्मकं देब्या नामावष्टा-विंशतिः शतम्।
श्रुणु वक्षयामि तत्सर्व-गुह्यं - सनातनम् ।।१ ।।
भूतिदा भुवना वाणी वसुधा सुमना मही।
हरिणी जननी नन्दा सविसर्गा - तपस्विनी ।।२ ।।
पयिस्वनी सती त्यागा चौन्दवी सत्यवी रसा।
विश्वा तुयो परा रेच्च्या निर्घृणी यमिनी-भवा ।।३ ।।
गोवेद्या च जरिष्ठा च स्कन्दिनी धीमर्ति-र्हिमा।
भीषणा योगिनी पक्षी नदी प्रज्ञा च चोदिनी ।।४ ।।
धनिनी यामिनी पद्मा रोहिणी रमणी ॠषिः।
सेनामुखी सामयी च बकुला दोष्-वर्जिताः ।।५ ।।

हिन्दी अनुवाद–ब्रह्मा जी ने कहा हे नारद! देवी का ''सताक्षर मंत्र'' जो अत्यन्त गोपनीय है तथा सनातन है–उसे सुनो ।।१ ।। भगवती के नाम इस प्रकार हैं–भूतिदा, भुवना, वाणी, वसुधा, सुमना, मही, हरिणी, जननी, नन्दा, सविसर्गा, तपस्विनी ।।२ ।। पयस्विनी, सती, त्यागा, ऐन्दवी, सत्यवी, रसा, विश्वा, तूर्या, परा, रेच्च्या, निघृणि, यमिनी, भवा ।।३ ।। गो, वेधा, जरिष्ठा, स्कन्दिनी, धी, मति, हिमा, भीषणा, योगिनी, पक्षी, नदी, प्रज्ञा, चोदिनी ।।४ ।। धनिनी, यामिनी, पद्मा, रोहिणी, रमणी, ॠषि सेनामुखी, सामयी, बकुला, दोष वर्जिता ।।५ ।।

[श्लोक]

सर्व-कारग दुधा सोमोद्दवा ऽहंकार-वर्जिता।
द्विपदा च चतुष्पादा त्रिपदा चैव षटपदा ।।६ ।।
अष्टापदी नवपदी सा सहस्त्राक्ष - रात्मिका।
इदं यः परमं गुह्यं सावित्री मन्त्र पञ्जरम् ।।७ ।।
नामाष्ट-विंशति-शतं शृणु-याच्छ्रा-वयेत् पठेत्।
मर्त्यानाम मृत्तत्वाय भीतानाम-भयाय च ।।८ ।।
मोक्षाय च मुमुक्षूणां श्रीकामानां श्रिये सदा।
विजयाय युयुत्सूनां व्याधिता नाम-रोगकृत् ।।९ ।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

वश्याय वश्य-कामानां विद्यायै वेद-कामिनाम्।
द्रविणाय दरिद्राणां पापिनां पाप-शान्तये॥१०॥
वादिनां वादि विजये कवीनां कविता-प्रदम्।
अन्नाय क्षुधितानां च स्वर्गाय नाक मिच्छताम्॥११॥

हिन्दी अनुवाद—सर्वकाम दुधा, सोमोद्‌वा, अहंकार वर्जिता, द्विपदा, चतुष्पदा, त्रिपदा, षट्पदा॥६॥ अष्टापदी, नवपदी, सहस्त्राक्ष-रात्मिका। इन स्तोत्रों से मरने वालों को अमर बनाने के लिए, डरे को भय रहित करने के लिए सुनना-सुनाना तथा पढ़ना चाहिए॥७॥ मुमुक्षुओं के मोक्ष के लिए, लक्ष्मी चाहने वालों को लक्ष्मी की प्राप्ति के लिए, युद्ध में वीरों के विजय के लिए, व्याधि-ग्रस्तों को व्याधि से छुटकारा पाने के लिए, इस मंत्र को सुनना-सुनाना तथा पढ़ना चाहिए॥८॥ वश में करने के लिए, विद्या चाहने वालों को विद्या प्राप्ति के लिए, दरिद्रों को द्रव्य प्राप्ति के लिए, पापियों को पाप शान्ति के लिए सुनना-सुनाना तथा पढ़ना चाहिए॥९॥ शास्त्रार्थी को शास्त्रार्थ में विजय के लिए, कवियों को कविता प्राप्ति के लिए, भूखों को भोजन पाने के लिए, स्वार्गार्थी को स्वर्ग प्राप्ति के लिए सुनना-सुनाना तथा पढ़ना चाहिए॥१०॥ पशु चाहने वालों को पशु प्राप्ति के लिए, पुत्र चाहने वालों को पुत्र प्राप्ति के लिए, दुखियों को अपने दुःख को दूर करने के लिए तथा शत्रुओं को भय उत्पन्न करने के लिए पढ़ना-सुनना तथा सुनाना चाहिए॥११॥

[श्लोक]

पशुभ्यः पशुका-मानां पुत्रेभ्यः पुक्ष-कांक्षिणाम्।
क्लेशिनां शोक-शान्तयर्थं नृणां शत्रु भयाय च॥१२॥
राज-वश्याय द्रष्टव्यं पञ्जरं नृप-सेविनाम्।
भक्त्यर्थं विष्णु-भक्ताणां विष्णु सर्वान्त-रात्मनि॥१३॥
नाचकं विधि-सृष्टाणां शान्तये भवति ध्रुवम्।
निःस्पृहाणां नृणां मुक्तिः शाश्वती भवति ध्रुवम्॥१४॥
जप्यं-त्रिवर्ग-संयुक्तं गृह-स्थेन विशेषतः।
मुनिनां ज्ञान-सिद्धयर्थं यतीनां मोक्ष-सिद्धये॥१५॥
उधन्तं चन्द्र-किरण-मुपस्थाय कृताञ्जलिः।
कानने वा स्वभवने तिष्ठञ्छुद्धो जपेदिदम्॥१६॥

हिन्दी अनुवाद—राज-सेवकों को राजा को वश में करने के लिए, विष्णु भक्तों को सर्व अन्तर्यामीं विष्णु में भक्ति की प्राप्ति के लिए इस सावित्री पंजर का पाठ सुनना तथा सुनाना चाहिए॥१२-१३॥ गृहस्थ जनों

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

के लिए यह स्तोत्र शान्ति कारक तथा काम-क्रोधादि से निःस्पृह मुनियों को निश्चय ही मुक्ति देने वाला है ॥१४॥ विशेष कर गृहस्थों को त्रिवर्ग प्राप्ति के लिए इसका पाठ करना चाहिए। इस स्तोत्र का पाठ करने से यतियों-संन्यासियों को मोक्ष तथा मुनियों को ज्ञान की प्राप्ति होती है ॥१५॥ चन्द्रमा की किरण का उदय होने पर भगवती सावित्री का उपस्थान कर हाथों को जोड़कर अपने गृह अथवा जंगल, या शिव मंदिर में शुद्ध होकर इसका पाठ करना चाहिए ॥१६॥

[श्लोक]

सर्वान् कामान्-वाप्नोति तथैव शिव-सन्निधौ।
मम प्रीति करं दिव्यं-विष्णु भक्ति विवर्द्धनम् ॥१७॥
ज्वरार्तानां कुशाग्रेण मार्जयेत् कुष्ठ-रोगिणाम्।
अंगभंगं यथा लिंगं कवचेन तु साधकः ॥१८॥
मण्डलेन् विशुद्ध येत् सर्व रोगैर्न संशयः।
मृत प्रजा च या नारी जन्म वध्या तथैव च ॥१९॥
कन्यादि-वन्ध्या या नारी तासा-मङ्ग प्रमार्ज येत्।
पुत्रा न रोगिन स्तास्तु लभन्ते दीर्घ-जीविनः ॥२०॥
तास्ताः संवत्सराद्-र्वाग् गर्भं तु दधिरे पुनः।
पति-विद्वेषिणी या स्त्री अंगं तस्याः प्रमार्ज चेत् ॥२१॥
तमेव भजते सा स्त्री पतिं कामवशं भवेत्।
अश्वत्थे राज-वश्यार्थं बिल्ब मूले स्वरूप-भाक् ॥२२॥

हिन्दी अनुवाद–इससे मनुष्य के सम्पूर्ण मनोकामनाओं की सिद्धि होती है। इस स्तोत्र से मैं [ब्रह्मा] तथा विष्णु दोनों ही प्रसन्न होते हैं। साधक इस कवच से कोढ़ी तथा ज्वरार्त कुशा द्वारा अंग-प्रत्यंग पर मार्जन करे तो निश्चय ही रोगी को रोग से छुटकारा मिल जाता है, इसमें संशय नहीं है। जिस स्त्री को लड़का होकर मर जाता है अथवा जो जन्म से ही बन्ध्या है ॥१७-१९॥ अथवा केवल कन्या को ही जन्म देने वाली जो स्त्रियाँ हैं, उन स्त्रियों को, जिनके पुत्र दीर्घजीवी नहीं हैं, उन्हें मंत्र से मार्जन करने पर दीर्घजीवी पुत्र होते हैं ॥२०॥ काक-वन्ध्यादि सभी प्रकार की स्त्रियां इस कवच से मार्जन करने पर एक वर्ष के भीतर ही गर्भ धारण कर, दीर्घजीवी पुत्र को जन्म देती हैं। जिस स्त्री का पति अपनी स्त्री से विद्वेष करता है, उस स्त्री को इस स्तोत्र से अंग-प्रत्यंग मार्जन करने से पति कामवश हो जाता है तथा कामातुर होकर अपनी स्त्री से प्रेम करने लग जाता है। राजा

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

को वश में करने के लिए पीपल के वृक्ष के नीचे तथा रूप प्राप्ति के लिए बिल्व-वृक्ष के नीचे॥२१-२२॥

[श्लोक]

पलाश मूले विद्यार्थीं तेजसा-भिमुखो रवौ।
कन्यार्थी चण्डिका-गृहे जपेच्छत्रु-भयाय च॥२३॥
श्रीकामो विष्णु-गेहे च उद्याने श्रीर्वशी भवेत्।
आरोग्यार्थे स्वगेहे च मोक्षार्थीं शैल-मस्तके॥२४॥
सर्व कामो विष्णु गेहे मोक्षात्री यत्र कुत्रचित्।
उपा-रम्भे तु हृदयं जपान्ते कवचं पठेत्॥२५॥
किमत्र बहु-नोक्तेन शृणु नारद! तत्वतः।
यं यं चिन्तयते नित्यं तं तं प्राप्नोति निश्चितम्॥२६॥

हिन्दी अनुवाद–विद्या प्राप्ति के लिए पलाश के नीचे तथा तेज की प्राप्ति के लिए सूर्य के सम्मुख, कन्या की प्राप्ति तथा शत्रु को भय उत्पन्न करने के लिए काली के मंदिर में इसका पाठ करना चाहिए॥२३॥ लक्ष्मी की प्राप्ति के लिए विष्णु मंदिर में, शोभा प्राप्ति के लिए पर्वत के ऊपर इस स्तोत्र का पाठ करना चाहिए॥२४॥ अथवा सम्पूर्ण कामनाओं की प्राप्ति के लिए विष्णु मंदिर में, मोक्षार्थी जहाँ कहीं भी इस स्तोत्र का पाठ कर सकता है। साधक जप के आरम्भ में गायत्री हृदय तथा जप के अन्त में गायत्री कवच का पाठ करें॥२५॥ हे नारद! बहुत कहने से क्या, सच पूछो तो, मनुष्य जिन-जिन कामनाओं को करता है वह सब इस गायत्री स्तोत्र के पाठ से प्राप्त करता है। इसमें कोई संशय नहीं है॥२६॥

श्री ब्रह्मा जी द्वारा महर्षि विश्वामित्र को उपदेशित गायत्री कवच

[श्लोक]

[विनियोगः]

ॐ अस्य श्री गायत्री-कवचस्य ब्रह्म ऋृषिः गायत्री छन्दो गायत्री देवता, ॐ भूः बीजम्, भुवः शक्तिः, स्वः कीलकम् गायत्री-प्रीतयर्थं जपे विनियोगः।

विनियोगः–हाथ में जल लेकर "ॐ अस्य श्री गायत्री कवचस्य" से आरम्भ कर "जपे विनियोगः" तक मन्त्र पढ़कर नीचे गिरा देना चाहिए।

नोट–अब कर जोड़ कर "ध्यान वन्दना" पढ़ें।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

[ध्यान]

पञ्च वक्त्रां दश भुजां सूर्य कोटि समप्रभाम।
सावित्रीं ब्रह्म-वरदां चन्द्र कोटि सु-शीतलाम्॥१॥
त्रिनेत्रां सित वक्त्रां च मुक्ता हार-विराजिताम्।
वराऽभयांकुश कशा हेम-पात्राक्ष-मालिकाम्॥२॥
शङ्ख-चक्राब्ज युगलं कराभ्यां दधतीं पराम्।
सित-पंकज संस्थां च हंसा रूढ़ां सुखस्मिताम्॥
ध्यात्वैवं मनसाम्भोजे गायत्री कवचं जपेत्॥३॥

हिन्दी अनुवाद–"जो गायत्री माता पंचमुखी तथा दश भुजाओं वाली हैं, जिनकी कान्ति करोड़ों सूर्य के समान है और करोड़ों चन्द्रमा के समान जो शीतल हैं, जो ब्रह्मा आदि समस्त देवताओं को वरदान देने वाली हैं, त्रिनेत्रा हैं तथा मुख मण्डल अति प्रसन्न है, जो मोतियों की माला से विभूषित हैं, जिनके दशों हाथों में वर, अभय, अंकुश, कशा, स्वर्ण पात्र, अक्षमाला, शंख, चक्र तथा ध्वज विराजमान हैं, जो परब्रह्म स्वरूपिणी हैं, जो श्वेत कमल के आसन पर विराज रही हैं, जिनका हंश वाहन है, प्रसन्नता से जो मन्द-मन्द मुस्का रही हैं।" साधक इस प्रकार गायत्री माँ का हृदय में ध्यान कर, तब "कवच पाठ" आरम्भ करे।

[कवच पाठ]

[ब्रह्मोवाच]

विश्वामित्र! महाप्रज्ञ "गायत्री कवचं" शृणु।
यस्य विज्ञान-मात्रेण त्रैलोक्यं वशयेत् क्षणात्॥१॥
सावित्री मे शिरः पातु शिखायाम्-मृतेश्वरी।
ललाटं ब्रह्म-दैवत्या भ्रुवौ मे पातु वैष्णवी॥२॥
कर्णौ मे पातु रूद्राणी सूर्या सावित्रिका ऽम्बिके।
गायत्री वदनं पातु शारदा दशनच्छादौ॥३॥
द्विजान यज्ञ-प्रिया पातु रसनायां सरस्वती।
सांख्या-यनि नाशिका मे कपौलो चन्द्र हासिनी॥४॥

हिन्दी अनुवाद–परम-पिता ब्रह्मा जी ने विश्वामित्र से कहा–हे अत्यन्त बुद्धिमान महर्षि विश्वामित्र! तुम यह "गायत्री कवच" सुनो। जिनके केवल पाठ मात्र से ही उपासक तीनों लोकों को अपने वश में कर लेता है॥१॥

सावित्री हमारे शिर की, अमृतेश्वरी शिखा की, ब्रह्म देवता ललाट की तथा वैष्णवी दोनों भौहों की रक्षा करें॥२॥ रुद्राणी मेरे दोनों कानों की, सूर्य में रहकर समस्त सृष्टि का सृजन करने वाली भगवती दोनों नैनों की,

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

गायत्री माँ मुख की तथा सरस्वती मसूड़ों की रक्षा करें ॥३॥ यज्ञप्रिया दांतों की, शारदा जीभ की, सांख्यायनि नाक की तथा चन्द्र-हासिनी कपोल की रक्षा करें ॥४॥

[श्लोक]

चिबुकं वेदगर्भा च कण्ठं पात्वघ-नाशिनी।
स्तनो मे पातु इन्द्राणी हृदयं ब्रह्म-वादिनी ॥५॥
उदरं विश्व-भोक्त्री च नाभौ पातु सुरप्रिया।
जधनं नारसिंही च पृष्टं ब्रह्माण्ड-धारिणी ॥६॥
पाश्र्वौ मे पातु पद्माश्री गुह्यं गो गोण्त्रिकाऽवतु।
ऊर्वो-रोंकार रूपा च जान्वोः सन्ध्या-त्मिकाऽवतु ॥७॥
जङ्घयोः पातु अक्षोभ्या गुल्फयो-ब्रह्म-शीर्षका।
सूर्या पदद्वयं पातु चन्द्रा पादाङ्गगु च ॥८॥
सर्वाङ्ग वेद जननी पातु मे सर्वदा ऽनघा।
इत्ये तत् कवचं ब्रह्मणं! गायत्र्याः सर्व-पावनम् ॥९॥

हिन्दी अनुवाद–वेद गर्भा चिबुक की, पापनाशिनी क्ंठ की, इन्द्राणी स्तन की तथा ब्रह्म-वादिनी हमारे हृदय की रक्षा करें ॥५॥ विश्व-भोक्त्री उदर की, सुरप्रिया नाभि की, नारसिंही जंघों की और ब्रह्माण्ड-धारिणी हमारे पीठ की रक्षा करें। पद्माश्री दोनों पार्श्व की, गोपिण्का गुप्त स्थान की, ॐकार रूपा दोनों ऊरू की और संध्यात्मिका दोनों घुटनों की रक्षा करें ॥६-७॥ अक्षोभ्या दोनों जांघ की, ब्रह्म-शीर्षका गुल्फ की, सूर्या दोनों पांवों की तथा चन्द्रा पैर के अंगुलियों की रक्षा करें ॥८॥ समस्त पापों का विनाश करने वाली वेद-जननी मेरे सम्पूर्ण अंगों की रक्षा करें। ब्रह्मा जी ने कहा–हे विश्वामित्र! इस प्रकार यह "गायत्री कवच" सदैव साधक को पवित्र करता है ॥९॥

[श्लोक]

पुण्यं पवित्रं पापघ्नं सर्व-रोग-निवारणम्।
त्रिसन्ध्यं यः पठेद् विद्वान सर्वान-कामान वाप्नुयांत ॥१०॥
सर्व-शास्त्रार्थ तत्वज्ञः स भवेद् वेद-वित्तमः।
सर्व यज्ञ फलं प्राप्य ब्रह्मान्ते सम-वाप्नुयात्॥
प्राप्नोति जप-मात्रेण पुरुषार्थश्च तुर्विधान् ॥११॥

हिन्दी अनुवाद–यह गायत्री क़वच पुण्य, पवित्र, पापों का नाश करने वाला तथा रोगों को दूर करने वाला है। जो विद्वान् तीनों काल में इस गायत्री कवच का पाठ करते हैं, उनका सम्पूर्ण मनोरथ सिद्ध हो जाता

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

है ॥१०॥ गायत्री कवच के पाठ से पाठक सम्पूर्ण शास्त्रों के तत्त्व के ज्ञाता एवं वेदज्ञ हो जाता है और उसे सम्पूर्ण यज्ञों के फलों की प्राप्ति होती है। तथा साधक अन्त में ब्रह्मपद को प्राप्त करता है, तथा चारों पुरुषार्थ [धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष] की प्राप्ति अनायास ही हो जाती है ॥११॥

माता गायत्री के 108 नामों का जप

आद्याशक्ति, आदि ब्रह्म, गायत्री, शिवा, नमो नमः।
उमा, सती, गौरी, पार्वती माँ, नमो नमः ॥१॥
दुर्गा, काली, सावित्री, सविता, अम्बे, नमो नमः।
लक्ष्मी, सरस्वती, राधा, रूक्मिणी, वैष्णवी माँ, नमो नमः ॥२॥
वामदेवी, प्रिया, सत्या, दशविद्या माँ नमो नमः।
विश्वा, विलासिनी, प्रभावती, शान्ता, कान्ता, नमो नमः ॥३॥
विद्रुमा, विशालेशा, व्यापिनी, विमला, नमो नमः।
तमोपहारिणी, सूक्ष्मा, जया, विश्वयोनि, नमो नमः ॥४॥
वसा, पद्मालया, भदा, पराशोभा, नमो नमः।
संध्या, चतुष्पदा, त्रिपदा, भुवनेश्वरी, नमो नमः ॥५॥
अचिन्त्य लक्ष्णये, अव्यक्तायै, माहेश्वरी, नमो नमः।
अविद्यायै, अजितायै, अपराजितायै, नमो नमः ॥६॥
अणिमादि गुण धारायैः, कपालिनी, कान्ता, नमो नमः।
कामदा, काम सुन्दरी, कालरात्रि, कामिनी, नमो नमः ॥७॥
कुरू कुल्ला, कमनीय स्वभाविनी, कुलीना, नमो नमः।
कुलकत्री, काम्या, काम स्वरूपिणी, कामधेनु, नमो नमः ॥८॥
कुलकान्ता, करालास्या, कौमारी, कलावती, नमो नमः।
कुलपालिनी, कुलजा, कलहा, कामेश्वरी, नमो नमः ॥९॥
कामकान्ता, कामहर्ती, कपर्दिणी, कमला, नमो नमः।
कामाख्या, कृशोदरी, कालिन्दी, कृष्ण माता, नमो नमः ॥१०॥
कुलिशांगी, शांति, कांति, प्राणशक्तिः, नमो नमः।
ऋृतम्बरा, महा समहा, निखिला, महामाया, नमो नमः ॥११॥
महायोगेश्वरी, त्रिगुणालया, योगमाया, नमो नमः।
प्रकृति, स्थिति, चिंता, मेधा, विजया, नमो नमः ॥१२॥
माया, मोहिनी, महाभोगा, रमणी, रमा, नमो नमः।
त्रैलोक्य सुन्दरी, राधा, रौद्री, सर्वाधारा, नमो नमः ॥१३॥
काष्ठा, निष्ठा, प्रतिष्ठा, ज्येष्ठा, श्रेष्ठा, नमो नमः।
Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

छठा भाग
माँ गायत्री यंत्र-मंत्र-खण्ड

यंत्र-मंत्र का परिचय शक्ति और महत्त्व

उपासको! आज का युग अत्यधिक तीव्र गति से ''यांत्रिक विकास'' की ओर अग्रसर होता जा रहा है। इस ''तांत्रिक शक्तियों'' का निर्माण ''देवासुर संग्राम'' से पूर्व हो चुका था। उस समय देवी-देवताओं ने ऐसे स्वचालित यंत्रों का निर्माण किया जो शत्रुओं पर प्रहार करके पुनः अपने पूर्व स्थान पर लौट आता था, जिसका प्रत्यक्ष प्रमाण ''सुदर्शन चक्र'', अग्नि बाण, ''ब्रह्म शक्ति'' आदि हैं।

पूर्व काल के मूल यांत्रिक परिभाषाओं को लेकर ही आज के वैज्ञानिकों ने परमाणु बम, हाइड्रोजन बम, नेपाम बम आदि विश्व संहारक यंत्र तैयार किया है, जो छोटा आकार का होते हुए भी संसार को संहारने की शक्ति रखता है।

इन यंत्रों को हम ''भौतिक यंत्रों'' के नाम से जानते हैं, परन्तु आज इस परम पवित्र पुस्तक में जिन यंत्रों का वर्णन करने जा रहा हूँ, उसका नाम है-''सिद्ध यंत्र''-जो आड़ी, तिरछी रेखाओं, बिन्दुओं, अंकों और त्रिकोणों आदि से स्वचालित है। इस ''सिद्ध यंत्र'' को यही कल-पुर्जे चलाते हैं। भौतिक यंत्र दिखाई पड़ता है और इससे हमारा भौतिक जगत प्रभावित होता है, किन्तु इसकी अपेक्षा-''सिद्ध यंत्र'' मनुष्य का जीवन बदलने की शक्ति रखता है।

''सिद्ध यंत्रों''-में इतनी शक्ति छिपी हुई है, जिसे प्राप्त करने के बाद मानव किसी भी असम्भव कार्य को सम्भव में बदल सकता है। ये यंत्र जो इतनी ''विस्फोटक ऊर्जा'' अपने गर्भ में छुपाए हुए हैं, आखिर क्या रहस्य है इसका ?

यंत्रों को समझने के पहले हमें ''मंत्र संसार'' में पदार्पण करना होगा, तभी हम इस ''रहस्यमयी गुत्थी'' को सुलझा सकेंगे।

यह सम्पूर्ण विश्व भगवान का स्वरूप है। उसी प्रकार ''शब्द'' मात्र भी भगवान हैं। जगत का मूल कारण ''शब्द'' है, यह बात ''स्फोट वाद'' प्रतिपादित करता है।

पाठको! प्रत्येक शब्द एक कंपन उत्पन्न करता है और प्रत्येक कंपन एक रूप व्यक्त करता है। ग्रामोफोन के रेकार्ड पर कुछ रेखाएं मात्र होती

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

हैं, जो आँखों से नहीं दिखती। इन्हीं रेखाओं पर सूई घूमती है, जिससे "शब्द" उत्पन्न होता है। ये रेखाएँ गाने वाले के शब्द के कंपन से रिकार्ड पर बनी है। वर्षों पहले फ्रांस में किसी वैज्ञानिक ने एक ऐसा यंत्र बनाया था कि उसके सम्मुख कोई गीत या स्तुति गाने से यंत्र में लगे पर्दे पर रखे रेत के कण उछल उछल कर एक आकृति बना देता था। एक भारतीय सज्जन ने उस यंत्र के सम्मुख–"काल भैरव" की स्तुति गाई तो यन्त्र के पर्दे पर–"काल भैरव का रूप" बन गया।

पाठको! मंत्र शब्दों का समूह है, मंत्र ईश्वरीय शक्ति है, यह निर्वाण का मार्ग है। यह शिव और शक्ति का प्रतीक है और साक्षात "देवता" है। मंत्र बिन्दु से विराट की ओर ले जाता है, जिससे हम आत्मा और परमात्मा का साक्षातकार करते हैं।

शब्दों के समूह "मंत्रों" की अपनी ही भाषा है, अपना ही स्वर है, सुर और ताल भी अपना ही है। जो मानव इस सुर ताल को समझ लेता है, जान लेता है, पहचान लेता है, वह अपने ईश्वर के समीप हो जाता है, क्योंकि श्रद्धा पूर्वक सुर व ताल में लयबद्ध होकर बोला जाता है तो मंत्र के देवता उन पर प्रसन्न हो जाते हैं और उन्हें वरदान देते हैं, जिससे साधक के मनोकामनाओं की पूर्ति होती है।

शब्दों से कम्पन होती है, सृष्टि के सब पदार्थ कम्पन से बनते-बिगड़ते हैं, यह विज्ञान भी मानता है। इसलिए यंत्र-मंत्र की शक्ति को समझना कठिन नहीं होना चाहिए। किन्तु शब्दों में क्या शक्ति है, यह सर्वज्ञ ऋृषि-मुनि जानते थे। उन्होंने ऐसे शब्दों की रचना की तथा उनके प्रयोग की ऐसी विधि निश्चित की जिससे उन मंत्रों को निर्दिष्ट विधि से काम में लेकर अभीष्ट फल प्राप्त किया जा सके।

इस विचारधारा को लेकर वेदों, पुराणों और अनेक "तांत्रिक ग्रन्थों की रचना" ऋृषि-महर्षियों ने की। युग का परिवर्तन होता गया और परिवर्तन के प्रभाव से मंत्रों का प्रभाव घटा। क्योंकि इन शक्तियों को प्राप्त करके प्राणी गलत कार्य करने लगे। अतः ऋृषि-महर्षियों ने मंत्र को गुप्त रखने की विधि अपनायी। इस विद्या को जीवित रखने के लिए उन्होंने मंत्र की ऐसी गुप्त विधि का निर्माण किया, जिसे "यंत्र" कहा गया।

यंत्र के सूक्ष्म शब्द, अंक, त्रिकोण एवं भुपूर का महत्त्व

यंत्र के सूक्ष्म शब्द एवं समस्त अंक "देवी और देवता" हैं। जैसे वैज्ञानिक छात्र ही समझ सकते हैं कि "H.Q." का क्या तात्पर्य है, उसी

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

प्रकार एक "तांत्रिक" ही समझ सकता है कि "श्रीं-क्रीं-ह्लीं-ऐं-गं-क्लीं" क्या है ?

पाठको! ये सभी सूक्ष्म शब्द देवी-देवता के स्वरूप हैं। "श्रीं"-का मतलब लक्ष्मी, "क्रीं" का महाकाली, "ह्लीं" का बगलामुखी, "ऐं" का सरस्वती, "गं" का गणेश और "क्लीं" का तात्पर्य दुर्गा माँ होती हैं। इसी प्रकार यंत्रों के प्रत्येक अंक भी देवता हैं, जो यंत्र में लिखने पर अपना प्रभाव दिखाता है।

इतना ही नहीं, यंत्र के लाईन, त्रिकोण और भुपूर का भी बहुत विशाल और अद्‌भुत अर्थ है। जैसे-बिन्दु का मतलब "ब्रह्मा", त्रिकोण का मतलब "शिव" और भुपूर की तुलना "भगवती" से की गई है। उस यंत्रों का रेखाचित्र अनुभूतियों के सूक्ष्म लोक के और शक्ति के विविध स्वरूपों के रेखाचित्र हैं और सूक्ष्म शसक्त रूप से कार्य करते हैं।

इनके ज्ञाता नहीं रहे, समझने वाले नहीं रहे, प्रयोग करने वाले नहीं रहे। इसलिए यह तकनीक इतनी सीमित हो गयी है कि आज इसका अर्थ समझना दुश्वार हो गया है।

पाठको! "यंत्र-मंत्र की शक्तियां" तुरन्त लाभ प्रदान करती हैं, इसमें कोई संशय नहीं करना चाहिए। अपने द्वारा वर्षों के "रिसर्च" के अनुसार यंत्रों-मंत्रों एवं ज्योतिष पर आधारित अनेकों पुस्तकें मैं लिख चुका हूँ, जो "अमित पॉकेट बुक्स" जालन्धर सिटी से प्रकाशित हो चुकी हैं और इनसे भारत ही नहीं बल्कि दुनिया के कोने-कोने के पाठक गण पूर्ण लाभ उठा रहे हैं, क्योंकि पुस्तक में मैंने केवल उसी यंत्रों मंत्रों का वर्णन किया है- "जिसकी सिद्धियां स्वयं प्राप्त की हैं। वर्तमान समय में भी हज़ारों दु:खी लोग मिलकर यंत्र-मंत्र प्राप्त कर पूर्ण रूप से लाभान्वित हो रहे हैं और आप भी किसी भी समस्याओं से उबरने हेतु, मनोकामनाओं की पूर्ति हेतु सम्पर्क स्थापित कर-यन्त्र मन्त्र प्राप्त कर दु:खद जीवन को सुखी बना सकते हैं।"

पाठको! यह परम-पवित्र उपासना ग्रन्थ "माता गायत्री" के विषयों पर आधारित है। अत: इसमें मात्र "मातेश्वरी गायत्री" जी के तीन अत्यन्त शक्तिशाली, महा-प्रभावी चमत्कारिक यंत्र का विस्तृत चर्चा करेंगे।

यंत्र लिखने का विधान

पाठको! "श्रद्धा" यंत्रों का "प्राण" है। श्रद्धा सहित रहकर यंत्र का निर्माण करना "जीवन" है। यंत्रों में रेखाओं, बीजाक्षरों या मंत्रों को विधि विशेष द्वारा संयोजित किया जाता है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

यंत्र के प्रति सन्देह करने से यंत्र "मृत" हो जाता है और मृत वस्तु कोई भी कार्य नहीं कर सकती। यंत्र के बारे में यह भी कहा गया है कि– "कर गये तो कसरत, चूक गये तो मौत"। क्योंकि यंत्र लिखते समय, मंत्र की सिद्धि करते समय जरा-सी असावधानी साधक को "मृत्यु के मुख" में झोंक देता है। इसलिए यंत्र-मंत्र की साधना प्राप्ति हेतु किसी "सिद्ध गुरु" से "दीक्षा" लेकर ही, "सिद्ध गुरु रक्षा कवच यंत्र"–धारण करके ही यंत्र-मंत्र की साधना आरम्भ करनी चाहिए। यंत्र साधना का प्रयोग विधि पुस्तकों में जो वर्णित है, इसे मात्र "पथ प्रदर्शक" ही समझें, सिद्धि दाता नहीं। सिद्धि तो "सिद्ध गुरु" ही प्रदान करा सकते हैं। यदि आप आवश्यकता समझें तो यंत्र मंत्र की सिद्धि में हमसे परामर्श, सहयोग एवं "सिद्ध गुरु रक्षा कवच यंत्र" प्राप्त कर सकते हैं। मैं यंत्र-मंत्र के प्रचार-प्रसार व विस्तार हेतु दृढ़ संकल्पित हूँ।

यंत्र मनुष्य की गुप्त सूक्ष्म शक्तियों का उदय करता है। यंत्र की रचना करते समय रेखाएँ शुद्ध भाव से खींचनी चाहिएं, क्योंकि रेखाएँ ही मनुष्य के अन्तःकरण की गुप्त शक्तियों को आन्दोलित करती है। उस समय मन तथा चित्र के सहयोग से "आसक्ति" उत्पन्न होती है और अहंकार तथा बुद्धि के सहयोग से "भाव तत्व" का उदय होता है। पूर्ण ज्ञान प्राप्त करने हेतु पढ़ें–"पंडित वाई. एन. झा तूफान" द्वारा रचित–"यंत्र-मंत्र द्वारा भाग्य बदलिए" (2) विपत्ति नाशक टोटके।

यंत्र विद्या वेद और ईश्वरीय शक्ति का सम्मिश्रण

उपासको! यन्त्र का मूल "वेद" है और वेदों का मूल "मंत्र" जो शब्दों, अंकों, रेखाओं आदि के रूप में "ईश्वरीय अवतार" के रूप में हम मानव को प्राप्त है। गोस्वामी तुलसीदास जी ने "राम चरित मानस" में कहा है कि–"कलियुग में कष्टों को देखकर उसे दूर करने के लिए जग हित की करुण कामना से प्रेरित होकर "श्री उमा महेश्वर" ने मंत्रों और यंत्रों की सृष्टि की। यद्यपि इन यंत्रों और मंत्रों के अंक, अक्षर, मतलब आदि अनमिल होते हैं तथा इसका कोई अर्थ भी नहीं होता तथापि भगवान शिव के प्रताप से ये मंत्र और यंत्र तत्काल अपना चमत्कारिक फल प्रकट करते हैं।

यंत्र-मंत्र की शक्तियों का "वेद" स्वतः प्रमाण है अतः इनको किसी

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

से प्रमाणित होने की आवश्यकता नहीं। क्योंकि यंत्र-मंत्र की प्रमाणिकता भगवान शंकर के मुख से निकले होने के कारण सिद्ध है।

यंत्र-मंत्र साधना में—गुरु से प्राप्त "सिद्ध गुरु रक्षा कवच यंत्र"—स्थापित करने की आवश्यकता क्यों ?

पाठको! "सद्-गुरुदेव" के स्वरूप एवं लीला को जानना सहज नहीं कहा जा सकता। गुरु तत्व, गुरु-शिष्य सम्बन्ध, गुरु यंत्र कृपा, गुरु योग इत्यादि क्रियाओं की विशद विवेचना से भारतीय संस्कृति की आर्य-परम्परा में, उपनिषदों में "गुरु की परम महत्ता" स्वीकार की गई है। माया से आवद्ध इस संसार के दु:खों से त्रस्त जीवों के उद्धार हेतु गुरु ही एकमात्र गति हैं। शास्त्रों में गुरु को "शंकर स्वरूप" माना गया है, क्योंकि वे ही वास्तव में "शं" अर्थात् "कल्याण", आत्मोद्धार एवं "कर" अर्थात् करने वाले हैं। वस्तुत: श्री भगवान की अनुग्रह शक्ति ही शुभ योग, शुभ सन्धि और शुभ आग्रह द्वारा केन्द्रिभूत होकर "गुरु शक्ति" के रूप में मूर्त्त हो अभिव्यक्त होती हैं।

गुरुदेव की उपस्थिति बिना, उनकी छत्रछाया के बिना कोई भी यंत्र-मंत्र की साधना नहीं मिल सकती। सभी साधकों की यंत्र-मंत्र सिद्धि काल में गुरु का उपस्थित होना भी मुश्किल है, अत: इसी समस्या का समाधान हेतु-गुरु से प्राप्त-"सिद्ध गुरु रक्षा कवच यंत्र"-सिंहासन पर स्थापित करने का प्रावधान है। गुरु द्वारा दिए गये इस यंत्र में "गुरु की शक्ति" छिपी रहती है, जो सिंहासन पर स्थापित होकर, "रिमोट कंट्रोल" बनकर साधक के तन-मन, ज्ञान व मस्तिष्क को संचालित करते रहते हैं और साधना काल में आने वाली समस्त बाधाओं का नाश करते रहते हैं, परिणामस्वरूप साधक प्रथम बार में ही साधना में सफलता प्राप्त कर लेता है, इसलिए गुरु द्वारा प्राप्त "सिद्ध गुरु रक्षा कवच यंत्र"-यंत्र-मंत्र साधना काल में पूजन स्थल के सिंहासन पर स्थापित करने का प्रावधान है। इस यंत्र की शक्ति सिंहासन पर स्थापित होकर, साधक के प्राण तत्त्व में समाहित हो जाता है और साधक के मन को साधना में लीन कर देता है।

सद्गुरुदेव जानते हैं कि साधक के भीतर "ऊर्जा" है और जब उसका संचारण बाहर की दिशा में होता है तो वह बाहर निकलकर छिन्न-भिन्न हो जाती है, उसका प्रभाव तीव्रतम नहीं हो सकता। "सिद्ध गुरु रक्षा कवच यंत्र" उस ऊर्जा को भीतर से ऊर्ध्वगति प्रदान करता है, उसे संयोजित

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

करके साधना सफलता की दिशा में मोड़ देता है। यह यंत्र उस ऊर्जा के वर्तुल को निरर्थक नहीं होने देता है। तब यंत्र की शक्ति साधक के हृदय में अवस्थित "आज्ञा चक्र" को स्पर्श करता है, तब आज्ञा चक्र शरीर में स्थित नीचे पुर, अनाहत, विशुद्ध चक्रों में ऊर्जा का प्रवाह, शक्ति का प्रवाह जहां भी अवरुद्ध हो गया है उसे हटाकर आज्ञा चक्र की ओर ऊर्ध्व गति देता है और यह आज्ञा चक्र से सहस्त्रार में स्थापित हो जाता है, तो साधना काल के रोग, शोक, अनिष्ट, ब्याधि आदि समाप्त हो जाते हैं और साधक अपनी साधना में प्रथम बार में ही सफल हो जाता है।

पाठको! "मंत्र जप की आवश्यकता"–यंत्र सिद्धि काल में क्यों पड़ती है। इसे ऐसे समझें।

मनुष्य के मुख से जो भी "शब्द" निकलता है, वह पूरे ब्रह्माण्ड में फैल जाता है। वह शब्द या ध्वनि कभी मिटता नहीं है। यह एक वैज्ञानिक सत्य है। इसी प्रकार मंत्र का उच्चारण करने से भी एक विशिष्ठ ध्वनि कम्पन उत्पन्न होता है। जब साधक मंत्र जप करता है तो मंत्र से उत्पन्न कम्पन ऊपर उठते हुए "ईथर" के माध्यम से कुछ ही क्षणों में मंत्र देव तक पहुंच कर लौट आते हैं और लौटते समय उन कम्पनों में यंत्र देव की सूक्ष्म शक्ति, तेजस्विता एवं प्राणवत्ता व्याप्त हो जाती है, जो पुनः साधक के शरीर से टकरा कर उसमें उन गुणों को बढ़ा देती है, जिससे साधक साधना में सफल हो जाता है।

पाठको! आइये, अब आपको माँ गायत्री के कुछ अभूतपूर्व यंत्रों की साधना का सरल विधि बता रहा हूँ, जिसे अपना कर आप अपने जीवन की समस्त कामना प्राप्त कर सकते हैं।

"वांछा कल्पलता गायत्री यंत्र" साधना विधि

[अपार धन प्राप्ति, व्यापार में प्रगति, सन्तान प्राप्ति, विदेश यात्रा में सफलता, विवाह एवं समस्त कार्यों में पूर्ण प्रगति हेतु]

उपासको! यह यंत्र अत्यन्त अद्‌भुत चमत्कारी है। "वांछा"–शब्द का तात्पर्य है–"मनुष्य की इच्छा" और "कामना"। "कल्पलता" शब्द का अर्थ है–"कल्प वृक्ष"–अर्थात् समस्त कामनाओं की पूर्ति करने वाला "दैवीय वृक्ष"।

इसका तात्पर्य यह है कि यह यंत्र–"कल्प वृक्ष" के समान साधक के

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

समस्त कामनाओं एवं भावनाओं को पूर्ण करने की सामर्थ्य एवं शक्ति रखता है।

तान्त्रिक ग्रन्थों में इसके बारे में बताया गया है–

वांछा कल्पलता गायत्री यन्त्रः न होमो न च तर्पणम्।
यंत्र रचणं स्मरण गायत्री सिद्धि स्यात् यदिच्छति हिं तद् भवेत्॥
दशा वृत्या तथा विष्णु, रुद्रं महाशक्ति-र्भवेदिह।
सार्व भौमः शतावृत्या भवत्येव न संशयः॥

अर्थात्–यह "वांछा कल्पलता गायत्री साधना" विश्व की दुर्लभ व सरल साधना है। इसके प्रयोग में होम, तर्पण एवं न्यास करने की जरूरत नहीं होती। केवल इस यंत्र का निर्माण, एवं मंत्र जप से ही श्रेष्ठ साधक की प्रत्येक इच्छा पूरी हो जाती है।

यंत्र साधना व निर्माण विधि–इस यंत्र का निर्माण व सिद्धि मंगलवार को, शुभ मुहूर्त्त में करें। दिन भर उपवास रखें। रात्रिकाल 10 बजे स्नान से पवित्र होकर नए सफेद वस्त्र [बिना सिले हुए] धारण करें, कंधे पर अंगोछा रखें। पवित्र एकान्त कमरे में पूर्व दिशा में आम लकड़ी या बेल (बिल्व) की लकड़ी से बना सिंहासन स्थापित करें। सिंहासन पर सफेद वस्त्र बिछाकर माता गायत्री की तस्वीर स्थापित करें। तांबे की प्लेट में गुरु से प्राप्त किया हुआ–"सिद्ध गुरु रक्षा कवच यंत्र" लाल कपड़े में लपेट कर, गायत्री माता की तस्वीर के समक्ष रखें। सुगन्धित अगरबत्ती व शुद्ध देशी घी (गाय का घी) का चौमुखी दीपक जगावें। इसके पश्चात् इसी पुस्तक में वर्णित नित्य पूजन विधि द्वारा माता गायत्री का "पंचोपचार पूजन" सम्पन्न करें। गुरु द्वारा प्राप्त यंत्र के ऊपर भी अक्षत, गंगाजल, चन्दन, पुष्प चढ़ावें एवं धूप-दीप दिखावें।

इसके बाद माता गायत्री का करजोड़ कर ध्यान करें–

[ध्यान मंत्र]

पञ्च वक्त्रां दश भुजां सूर्य कोटि सम-प्रभाम्।
सावित्रीं ब्रह्म वरदां चन्द्र कोटि सु-शीतलाम्॥
त्रिनेत्रां सित-वक्त्रां च मुक्ता हार विराजिताम्।
बराऽ अभयांकुश कशा हेमपात्राक्ष मालिकाम्॥
शंख-चक्राब्ज -युगलं कराभ्यां दधतीं पराम्।
सित-पंकज-संस्थां च हंसारूढ़ा सुख-स्मिताम्॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

इसके पश्चात् भोजपत्र एवं रक्त चन्दन की स्याही, अनार की कलम से नीचे चित्र का यंत्र निर्माण करें– [यंत्र चित्र]

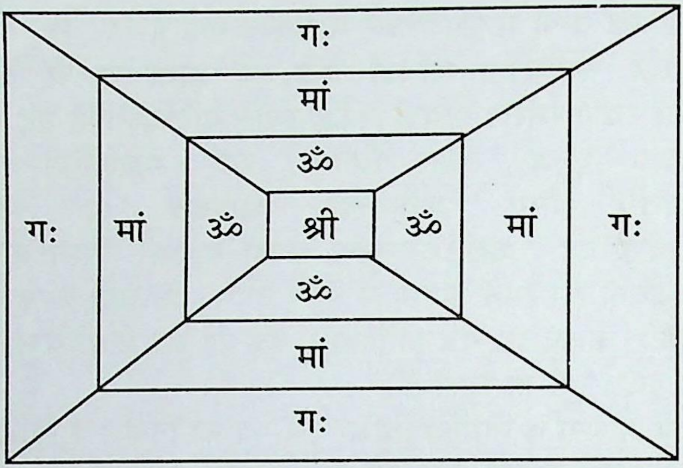

स्वयं निर्मित यंत्र को चांदी की ताबीज में बंद कर, पीले कपड़े में लपेट कर, कांसे की प्लेट में गुरु यंत्र वाले प्लेट के साथ रख दें। तत्पश्चात् रुद्राक्ष की 108 दाने वाली माला से 11 माला नीचे लिखित मंत्र का जप करें–

यंत्र साधना हेतु मंत्र–

ॐ भूर्भुवः स्वः ॐ तत्सवितु र्वरेण्यम ॐ भर्गो देवस्य धी महि ॐ धियो योनः प्रचोदयात् ॐ।

मंत्र जप समाप्त होने के बाद–कांशे की थाली में पान के पत्ते पर कपूर जलाकर माता की आरती उतारें और पुस्तक में वर्णित गायत्री आरती वन्दना गाएं। तत्पश्चात् सिंहासन पर मस्तक रखकर माता को प्रणाम करें।

इसके पश्चात् दूसरे दिन की रात्रि में माता का पंचोपचार पूजन कर, ध्यान कर, मंत्र जप 11 माला पूर्ण कर आरती सम्पन्न करें। यह विधि 21 रात्रि सम्पन्न करें।

अन्तिम रात्रि में आरती सम्पन्न करने के बाद माता को प्रणाम् करें तत्पश्चात् गुरु यंत्र एवं स्वयं निर्मित यंत्र को प्रणाम करें। स्वयं निर्मित ताबीज को लाल डोरे में अथवा सोने या चांदी की चैनी में डालकर, गले में धारण कर लें। साधना सम्पन्न होने के पश्चात्–सिद्ध "गुरु रक्षा कवच यंत्र" को बहती दरिया में प्रवाहित कर दें। गुरु यंत्र के साथ सवा किलो लड्डू एवं ग्यारह लाल फूल भी प्रवाहित करें।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

इसके बाद आप किसी को भी विधिपूर्वक यंत्र निर्माण कर 51 माला मंत्र जप सम्पन्न कर, यंत्र प्रदान करेंगे, तो यंत्र धारण कर्त्ता की समस्त कामनाएं पूर्ण हो जाएंगी। यह यंत्र स्वयं सिद्ध करें, अथवा ''पंडित संजीव कुमार झा'' के कार्यालय से सिद्ध यंत्र प्राप्त कर गले में धारण करें, कोई पूजा-पाठ की आवश्यकता नहीं।

वांछा-कल्पलता गायत्री यंत्र धारण करने से लाभ

1. इस यंत्र को धारण करने से या घर की पूजा स्थल पर स्थापित करने से धन प्राप्ति के अनेकों अवसर अपने आप प्राप्त होने लगते हैं, जिससे यंत्र धारण कर्त्ता पूर्ण रूप से धन संग्रह कर लेता है।
2. इस महायंत्र को पीले कपड़े में लपेट कर घर की पूजा स्थल पर, पीतल के प्लेट में रखकर, नित्य धूप-दीप दिखाने से समस्त प्रकार के पारिवारिक कलह-क्लेश शांत हो जाते हैं और घर में सुख-शान्ति व प्रसन्नता का आविर्भाव होता है।
3. इस यंत्र की साधना से साधक का व्यक्तित्व अत्यधिक आकर्षक हो जाता है। उसके इर्द-गिर्द एक तेज युक्त आभा-मण्डल निर्मित हो जाता है। वह जिस कार्य में भी हाथ डालता है, सफलता उसके कदम चूमती है।
4. यदि यंत्र धोकर, धोया जल रोगी को पिलाया जाये तो वह अवश्य रोग मुक्त हो जाता है।
5. ''विदेश यात्रा'' पर जाने वाले व्यक्ति यदि यंत्र धारण कर ''एम्बैसी'' में जाये जो निर्विघ्न कागज़ी कार्यवाही सम्पन्न हो जाती है और वह विदेश जाने में कामयाब हो जाता है।
6. जिस लड़के या लड़की के विवाह में विलम्ब हो रहा हो, उसे यह यंत्र धारण करने से शीघ्र विवाह हो जाता है और दाम्पत्य जीवन सुखी रहता है।
7. यंत्र धारण कर्त्ता ऋृण से मुक्त हो जाता है।
8. सभी प्रकार की शारीरिक और मानसिक परेशानियाँ दूर हो जाती हैं।
9. घर में चोरी-डकैती का भय सदा के लिए समाप्त हो जाता है।
10. कभी-कभी ऐसे स्वप्न आते हैं, जो बुरे भविष्य का संकेत करते हैं अथवा जिनके स्मरण आते ही मन पूरी तरह से भयग्रस्त हो जाता है। इस यंत्र को गले में धारण कर सोने से ऐसे भयानक स्वप्न आने बन्द हो जाते हैं।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

11. यह यंत्र गले में धारण करने से भूत, प्रेत, चुड़ैल, डाकिनी आदि की ब्याधि सदा के लिए समाप्त हो जाती है।
12. यह यंत्र धारण करके किसी से भी मिलने जाएं और कोई भी कार्य कहें, तो सामने वाला तुरन्त कार्य कर देता है।
13. यह दिव्य यंत्र धारण करने से शरीर के ''तांत्रिक प्रयोग'' नष्ट हो जाते हैं।
14. यंत्र को धोकर, धोया जल 11 दिन तक घर आंगन या दुकान, फैक्ट्री आदि में छिड़कने से किया-कराया ''तांत्रिक प्रयोग'' भी सदा के लिए समाप्त हो जाते हैं।
15. यदि इस यंत्र को धोकर, रजस्वला समय में स्त्री को 5 दिन पिलाई जाये तो वह अवश्य गर्भ धारण करती है और पुत्र ही उत्पन्न होता है।

पाठको! मैंने इस यंत्र के प्रयोग को कई स्थानों पर कई प्रकार से आज़माया है, कितने दुःखी व्यक्ति को यह यंत्र सिद्ध करके दिया है। इस कलियुग में भी इस दिव्य यंत्र का प्रभाव देखकर दंग रह गया हूँ।

परीक्षा, इंटरव्यू, नौकरी प्राप्ति, विद्या-प्राप्ति, लेखन कला तथा समस्त कला जगत में ख्याति प्राप्त करने हेतु

''महासरस्वती गायत्री यंत्र'' साधना विधि

पाठको! ''महासरस्वती गायत्री यंत्र'' की साधना कोई भी छात्र-छात्राएं, कोई भी स्त्री या पुरुष सम्पन्न कर सकता है। गृहस्थ सुख के आकांक्षी साधक-साधिकाओं के लिए यह एक अत्यन्त सरल, महा-उपयोगी साधना विधि है। महा-सरस्वती गायत्री यंत्र की साधना करने से अथवा यंत्र [सिद्ध यंत्र] धारण करने से ''धारण कर्त्ता'' किसी प्रकार से ''न्यून'' नहीं रह सकता है। क्योंकि जिसके ऊपर ''महासरस्वती गायत्री'' की दया हो, ''मेधा'' अर्थात् प्रत्युत्पन्नमति हो, ''वरा'' अर्थात् वरदायक प्रभाव हो, शुभ्रता का एक आभा मण्डल हो, उसका जीवन किस प्रकार से ''न्यून'' रह सकता है।

इसी साधना के द्वारा मेरा और मेरे पिता श्री विद्यावारिधी पण्डित वाई. एन. झा तूफान का नाम ''एशिया और यूरोप'' में रौशन हो रहा है। इनकी

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अपार कृपा से ही काव्य, लेखन कला, ज्योतिष, यंत्र-मंत्र-तंत्र आदि अनेकानेक सफलताएं हासिल की हैं। यह साधना मेरे पिता श्री एवं मेरा परम-पवित्र अनुभव हैं, आप भी करके देखें, जीवन सफल हो जाएगा।

यंत्र साधना विधि–

किसी भी माह के शुक्ल पक्ष के पंचमी तिथि शुभ नक्षत्र से योग खाता हो–उस दिन, अथवा–माघ मास के ''बसंत पंचमी'' के दिन यह साधना आरम्भ करें।

''यंत्र साधना'' आरम्भ करने वाले दिन उपवास रखें। रात्रिकाल 9 बजे स्नान से पवित्र होकर, नए सफेद वस्त्र धारण करें। वस्त्र दो ही हों और बिना सिले हुए हों, अर्थात् एक सफेद धोती पहनें और एक सफेद अंगोछा गले पर धारण करें।

पवित्र एकान्त कमरे में पूजा स्थल पूर्व दिशा में बनावे। आम की लकड़ी से बना एक सिंहासन स्थापित करें। सिंहासन पर सफेद वस्त्र का आसन बिछाकर माता गायत्री की तस्वीर स्थापित करें। तस्वीर के समक्ष ''गायत्री सिद्ध गुरु'' से प्राप्त किया हुआ ''सिद्ध गुरु रक्षा कवच यंत्र'' सफेद कपड़े में लपेट कर, तांबे के प्लेट में रखें।

तत्पश्चात् धूप-दीप जगाकर, पूर्ण वैदिक विधि से, वैदिक पंडित द्वारा–या स्वयं माता का–''षोड़शोपचार पूजन'' सम्पन्न करें। ''गुरु रक्षा कवच यंत्र'' का भी ''पंचोपचार पूजन'' करें।

पूजन के बाद अष्टगंध की स्याही और मोर पंख की कलम से नीचे वर्णित यंत्र का भोजपत्र पर निर्माण करें–

[यंत्र चित्र]

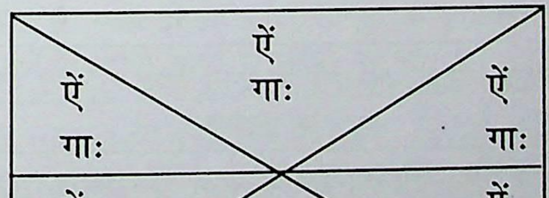

निर्मित यंत्र को चांदी की ताबीज में भरकर दूसरे तांबे के प्लेट में सफेद कपड़े में लिपटाकर, माता गायत्री की तस्वीर के समक्ष रख दें। स्वयं

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

निर्मित यंत्र का भी ''पंचोपचार पूजन'' करें। तत्पश्चात् माता का ''ध्यान'' करें :-

[ध्यान मंत्र]

गायत्री वेदधात्रीं शतमख-फलदां वेद-शास्त्रेक वेद्यां-चिच्छक्तिं ब्रह्म सरस्वती विद्यां।

परम शिव पदां श्री पदं वै करोति, पदं तत्सवितुर-नुपदान्ते वरेण्यं शरणं-भर्गोदेवस्य धीमहि-भिदधति धियो-योनः प्रचोदयात्॥

अब ''स्फटिक'' की 108 दाने वाली माला से 21 माला नीचे लिखित मंत्र का जप करें-

यंत्र साधना मंत्र

ॐ ऐं वाग्देव्यै च विद्महे काम राजाय धी महि। तन्नो देवी प्रचोदयात्॥

मंत्र जप समाप्त होने के बाद माता की आरती करें। तत्पश्चात् वैदिक ब्राह्मण को भोजन [मीठा भोजन] कराकर, दक्षिणा देकर विदा करें। दूसरे दिन की रात्रि से ''पंचोपचार पूजन'' करके 21 माला जप करें, फिर आरती करें। यह विधि कुल 41 रात्रि सम्पन्न करें। अन्तिम रात्रि में उपरोक्त मंत्र के अन्तिम में 11 माला जप करते हुए हवन सम्पन्न करें, फिर आरती करके पूजन का विसर्जन करें। आरती के पश्चात् माता के सिंहासन पर सिर रख कर प्रणाम करें, फिर गुरु यंत्र एवं स्वयं निर्मित यंत्र को प्रणाम करें। तत्पश्चात् स्वयं निर्मित यंत्र को प्रणाम करें। तत्पश्चात् स्वयं निर्मित यंत्र को गले में धारण कर लें। गुरु रक्षा कवच यंत्र को सवा किलो लड्डू के ऊपर रखकर, उस पर नौ सफेद पुष्प रखकर बहती दरिया में प्रवाहित कर दें।

सिद्ध महासरस्वती गायत्री यंत्र धारण करने से लाभ

1. इस परम दिव्य यंत्र की साधना करने से, अथवा सिद्ध यंत्र [गुरु से प्राप्त कर] धारण करने से-''बेरोज़गार युवक'' शीघ्र ही अपनी योग्यतानुसार रोज़गार प्राप्त करता है।
2. विद्या प्राप्ति करने वाले विद्यार्थी यदि यह यंत्र धारण करता है तो उसकी स्मरण शक्ति तीव्र हो जाती है तथा कोई भी विषय पढ़ने से फटाफट याद हो जाता है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

3. यंत्र धारणकर्त्ता–परीक्षा में "सर्वोत्तम अंक" प्राप्त करने में सफलता प्राप्त करता है।
4. "इंटरव्यू" पर जाने से पूर्व इस महायंत्र में सफेद डोरा डालकर, गले में धारण करके जाए तो उसे सफलता अवश्य मिलती है।
5. यंत्र धारण कर्त्ता का नौकरी आदि में शीघ्र पदोन्नति होती है और उनके वरिष्ठ पदाधिकारी उन पर सदैव "मेरहवान" रहते हैं।
6. सभी प्रकार की परीक्षाओं में कामयाबी मिलती है।
7. गायक, लेखक, प्रकाशक, गीतकार, संगीतकार, अदाकार या किसी भी कला जगत में–यंत्र धारण कर्त्ता पूर्ण ख्याति अर्जित करता है।
8. जन्म कुण्डली में निर्मित दुर्योग फलहीन हो जाते हैं।
9. "यंत्र धारणकर्त्ता" समाज में सम्मानीय एवं पूजनीय हो जाता है और राजनीति के क्षेत्र में प्रवेश करने पर चुनाव में जीत हासिल करता है।
10. उच्च कोटि के मंत्रीगण और अधिकारी भी उसकी बात को मस्तक पर धारण करते हैं और वह पूर्ण मान-यश बटोरने वाला बन जाता है।
11. पारिवारिक जीवन अत्यन्त सुखमय हो जाता है।
12. यंत्र धारण कर्त्ता की समस्त इच्छाएं व कामनाएं पूर्ण होने लगती हैं, जिससे वह स्वयं ही आश्चर्यचकित हो जाता है।

ऊपर बतायी गयी स्थितियां तो मात्र "सूर्य को रोशनी" दिखाने के समान हैं। वास्तव में तो वह अपने आप में ही अद्वितीय तेजस्वी "युग-पुरुष" बन जाता है, साथ ही साथ वह समस्त ज्ञान-विज्ञान में पारंगत हो वर्तमान पीढ़ी का मार्गदर्शन करने में सक्षम हो पाता है।

शत्रु बाधा निवारक एवं मुकद्दमा जीतने हेतु— "बगलामुखी गायत्री यंत्र साधना विधि"

उपासको! भारतीय तंत्र और यंत्र-विज्ञान अपने में अद्भुत एवं विशाल महाशक्तियों से सम्पन्न है, इसमें प्रकृति के वे सभी गूढ़ तत्त्व निहित हैं जिनमें मानव जीवन की पूर्णता एवं प्रकृति का रहस्य छिपा हुआ है। महाशक्तियों में कई देवियों के नाम आते हैं परन्तु उनमें जो श्रेष्ठ देवी की

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

साधना है वह ''भगवती बगलामुखी गायत्री यंत्र'' की साधना है।

प्राचीन काल से ही जो भी महापुरुष हुए हैं या राजा-महाराजाओं ने जो निष्कंटक राज्य किया है, उनके जीवन में विजय एवं सफलता का रहस्य ही-भगवती बगलामुखी गायत्री यन्त्र उपासना रही है।

इतिहास में उल्लेख मिलता है कि-''राजा राजेन्द्र चोल'' ने अपने शत्रुओं को परास्त करने के लिए बगलामुखी गायत्री यंत्र साधना सम्पन्न कराई और सफलता प्राप्त की। हिन्दू शासकों में तो चन्द्रगुप्त, विक्रमादित्य, समुद्र गुप्त ने भी बगुलामुखी गायत्री यंत्र साधना सम्पन्न कर शत्रुओं पर विजय एवं सफलता प्राप्त की। इस महत्त्वपूर्ण साधना से जीवन में हर परिस्थिति पर नियन्त्रण प्राप्त किया जा सकता है। शत्रु बाधा समाप्त करने के लिए तो यह यंत्र साधना ''प्रचंड तूफान'' की तरह है।

यदि कोई मात्र ''सिद्ध बगलामुखी गायत्री यंत्र'' ही धारण कर लेता है तो उसकी सुरक्षा सुनिश्चित हो जाती है। भगवती बगलामुखी गायत्री का नाम-''वल्गा चक्र'' निरन्तर घूमता व सुरक्षा करता रहता है, जिसे अन्य कोई नहीं देख सकता। जिन्हें बड़े-बड़े प्रतिष्ठान सम्भालने हों, जिन्हें नेतृत्व का भार प्राप्त हो, उन्हें यह यंत्र साधना सम्पन्न करना नितान्त आवश्यक है।

यंत्र साधना विधि-यह यंत्र साधना शुभ नक्षत्र के शनिवार की रात्रि में आरम्भ करें। उस दिन उपवास रखें। लगभग 10 बजे रात्रि में स्नानादि से पवित्र होकर, पीले वस्त्र [बिना सिले हुए] धारण करें। घर के एकान्त और पवित्र कमरे में पूर्व दिशा में पीपल लकड़ी से बना हुआ एक सिंहासन स्थापित करें। सिंहासन के ऊपर पीला वस्त्र का आसन बिछाकर, उस पर माता गायत्री की तस्वीर स्थापित करें। तत्पश्चात् सिद्ध गुरु से प्राप्त किया हुआ-''सिद्ध गुरु रक्षा कवच यंत्र'' पीले कपड़े में लपेट कर, पीतल के प्लेट में माता तस्वीर के समक्ष रखें। धूप-दीप जगावें। इसके बाद माता गायत्री एवं ''गुरु यंत्र'' का ''पंचोपचार पूजन'' सम्पन्न करें।

इसके पश्चात् अनार की कलम, हल्दी की स्याही से भोजपत्र पर नीचे प्रदर्शित यंत्र का निर्माण करें। निर्मित यंत्र को सोने या तांबे के ताबीज में बंद कर, ताबीज में पीले डोरे डालकर, पीले कपड़े में लपेट कर, गुरु यंत्र वाले प्लेट के साथ पीतल के प्लेट में रख दें।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

[यंत्र चित्र]

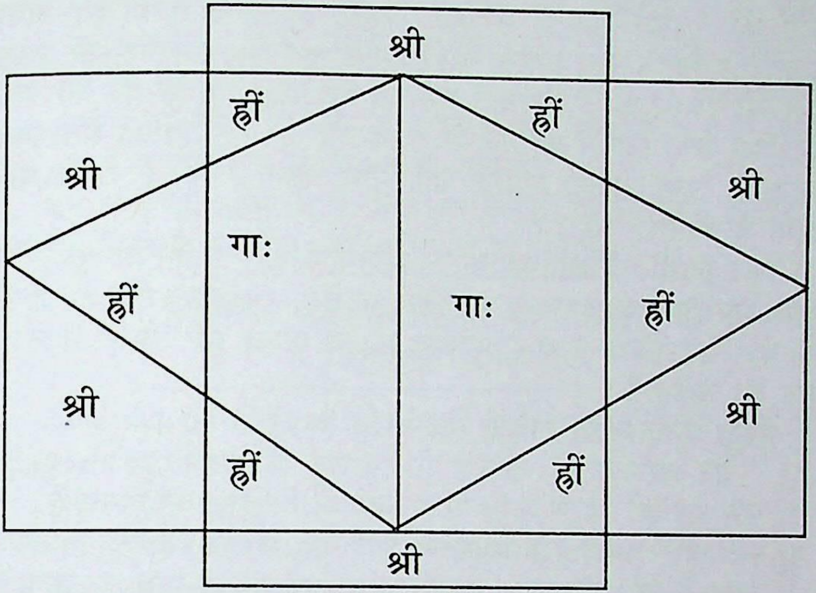

इसके पश्चात् दोनों हाथ में पुष्प भरकर नीचे लिखित मंत्र को पढ़ते हुए मातेश्वरी का "ध्यान" करें। मंत्र समाप्त होते ही पुष्प माता के तस्वीर पर चढ़ा दें।

[ध्यान मंत्र]

ॐ नमो भगवती बगलामुखी गायत्री मम सर्व निन्दकतानां सर्व दुष्टाणां वाचं मुखं पदं स्तम्भय जिह्वायां मुद्रय बुद्धि विनाशय शत्रुणां शिरो, ललाटो, मुखं, नेत्र, कर्ण नशिकेरू, पाद, अणु-अणु, दन्तोवट, जिह्वां, तालु, गुह्यं, गुदा, कटि, सर्वांग, केशपर्यन्त स्तम्भय स्तम्भय, परमंत्र, परयंत्र, पर तन्त्राणि छेदय छेदय, मम ब्याधि विनाशय-विनाशय ह्लीं फट् स्वाहा।

अब हल्दी की 108 दाने वाली माला से 21 माला नीचे लिखित मंत्र का जप करें–

श्री बगुलामुखी गायत्री मंत्र–

ॐ बगलामुख्यै च विद्महे स्तम्भिन्यै च धीमहि। तन्नो देवी प्रचोदयात्।

नोट–मंत्र जप समाप्त होने के बाद माता की आरती उतारें। दूसरे दिन की रात्रि से माता का "पंचोपचार पूजन" सम्पन्न कर मंत्र जप पूर्ण करें, फिर आरती करें। इस प्रकार 21 दिन तक नियम विधि से मंत्र जप पूर्ण

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

करें। अन्तिम रात्रि में मंत्र जप पूर्ण होने के बाद 5 माला मंत्र जप करते हुए हवन करें। हवन सामग्री में पीले सरसों एवं हल्दी का चूर्ण अवश्य मिलावें। हवन के बाद आरती करें। इसके बाद सिंहासन पर शिर रखकर माता को प्रणाम करें, तत्पश्चात् गुरु यंत्र एवं स्वयं निर्मित यंत्र को प्रणाम करें, फिर स्वयं निर्मित यंत्र गले में धारण कर लें। गुरु यंत्र को सवा किलो लड्डू के ऊपर रखकर ग्यारह पीले पुष्प चढ़ावें और ले जाकर बहती दरिया में प्रवाहित कर दें।

फिर किसी भी शनिवार को यंत्र निर्माण कर, पंचोपचार पूजन कर, ग्यारह माला मंत्र जप सम्पन्न कर जिसे भी देंगे, उनके शत्रु नष्ट हो जायेंगे। यह यंत्र सिद्ध किया हुआ–"पण्डित संजीव कुमार झा" के कार्यालय से प्राप्त कर सकते हैं।

सिद्ध बगलामुखी गायत्री यंत्र धारण करने से लाभ–

1. "यंत्र धारण कर्त्ता" के बड़े से बड़े शत्रु भी स्वयं नष्ट होने लगते हैं।
2. इस यंत्र को धारण करने से मुकद्दमे में विजय प्राप्त करता है।
3. यंत्र धारण कर शत्रु के समक्ष पेश होने पर उसे देखते ही शत्रु निस्तेज हो जाता है और यंत्र धारण कर्त्ता शत्रु पर पूर्ण रूप से हावी हो जाता है।
4. किया-कराया सभी "तांत्रिक प्रयोग" नष्ट हो जाते हैं।
5. यंत्र को धोकर, धोया जल 11 दिन तक घर या दुकान, फैक्ट्री आदि में छिड़कने से "तान्त्रिक बन्धन" समाप्त हो जाता है।
6. व्यापार व व्यवसाय में शत्रुओं के षड्यन्त्रों को प्रभावहीन कर देता है।
7. यंत्र धारण कर्त्ता को बिजनस पार्टनर के धोखे से सदैव रक्षा करता है।
8. यदि किसी व्यक्ति ने पैसे उधार लिए हों और उसे वापस करने में आनाकानी कर रहा हो तो–इस दिव्य यंत्र के तेज से प्रभावित होकर स्वयं ही लिया हुआ कर्ज़ वापस कर देता है।
9. यदि आपके सीनियर अधिकारी आपसे रुष्ट हो गया हो और आपके कार्यों में बाधा डाल रहा हो तो इस महायंत्र को धारण करें। सफलता आपके कदम चूमेगी।
10. यंत्र धारण कर्त्ता के सभी शत्रु उनके अनुकूल बन जाते हैं और वही शत्रु जो कभी यंत्र धारण करने वाले को नुकसान पहुंचा रहे थे, विपत्ति में उसकी सहायता करने लगते हैं।
11. यंत्र धारण कर्त्ता समस्त विपत्तियों से धीरे-धीरे छुटकारा पा लेता है।
12. भूत-प्रेत डाकिनी, चुड़ैल आदि से ग्रसित व्यक्ति को यह यंत्र गले में धारण कराने से वह भूत ब्याधि से सदैव के लिए छुटकारा पा लेता है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

13. यदि कोई शत्रु आपके परिवार के किसी सदस्य को बहला-फुसला कर अथवा किसी तांत्रिक प्रयोग द्वारा वश में करके घर में कलह-क्लेश करवा रहा है, उसको आपके घर की तबाही का जरिया बना रहा है तो इस दिव्य यंत्र को घर की पूजा स्थल पर पीले कपड़े में लपेट कर तांबे के प्लेट में रखकर रोज धूप दिखावें। तो आपकी समस्या जड़ मूल से समाप्त हो जायेगी।

यह यन्त्र मेरे कार्यालय से प्राप्त कर अनेकों व्यक्ति लाभ उठा रहे हैं, आप भी आज़मा कर देखें, जीवन सफल हो जायेगा।

विभिन्न देवी-देवताओं के अभूतपूर्व गायत्री मंत्र

उपासको! इस शीर्षक में मुख्य सभी देवी-देवताओं के "गायत्री मंत्र" वर्णित कर रहा हूँ।

श्री परब्रह्म गायत्री मंत्र–
ॐ वेदात्मने च विद्महे हिरण्य-गर्भाय धीमहि।
तन्नो ब्रह्मा प्रचोदयात्॥

श्री विष्णु गायत्री मंत्र–
ॐ श्री विष्णवे च विद्महे वासुदेवाय धीमहि।
तन्नो विष्णुः प्रचोदयात्॥

श्री शिव गायत्री मंत्र–
ॐ महादेवाय विद्महे रूद्र-मूर्तये धीमहि।
तन्नो शिवः प्रचोदयात्॥

श्री सरस्वती गायत्री मंत्र–
ॐ ऐं वाग्देब्यै च विद्महे कामराजाय धीमहि।
तन्नो देवी प्रचोदयात्॥

श्री लक्ष्मी गायत्री मंत्र–
ॐ महादेब्यै च विद्महे विष्णु-पत्नयैः च धीमहि।
तन्नो लक्ष्मीः प्रचोदयात्॥

श्री गौरी गायत्री मंत्र–
ॐ शुभ गायै च विद्महे काम मालायै धीमहि।
तन्नो गौरी प्रचोदयात्॥

श्री हनुमान गायत्री मंत्र–
ॐ अञ्जनी-जायै विद्महे वायु पुत्राय धीमहि।
तन्नो पवनसुत प्रचोदयात्॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

श्रीराम गायत्री मंत्र–
ॐ दशरथये विद्महे सीतवल्लभाय धीमहि।
तन्नो रामः प्रचोदयात्॥

श्रीकृष्ण गायत्री मंत्र–
ॐ देवकी-नन्दनाय विद्महे वासुदेवाय धीमहि।
तन्नः कृष्णः प्रचोदयात्॥

श्री राधा गायत्री मंत्र–
ॐ वृषभानु-जायै विद्महे कृष्ण प्रियाये धीमहि।
तन्नो राधिका प्रचोदयात्॥

श्री गोपाल गायत्री मंत्र–
ॐ गोपालाय विद्महे गोपीजन वल्लभाय धीमहि।
तन्नो गोपालः प्रचोदयात्॥

श्री नृसिंह गायत्री मंत्र–
ॐ उग्र नृसिंहाय विद्महे वज्र नखाय धीमहि।
तन्नो नृसिंह प्रचोदयात्॥

श्री गणेश गायत्री मंत्र–
ॐ तत्पुरुषाय विद्महे वक्रतुण्डाय धीमहि।
तन्नो गणपति प्रचोदयात्॥

श्री सूर्य गायत्री मंत्र–
ॐ भास्कराय विद्महे महा तेजाय धीमहि।
तन्नः सूर्यः प्रचोदयात्॥

श्री चन्द्र गायत्री मंत्र–
ॐ क्षीर पुत्राय विद्महे अमृत तत्वाय धीमहि।
तन्नो चन्द्रः प्रचोदयात्॥

श्री भौम गायत्री मंत्र–
ॐ अङ्गारकाय विद्महे शक्ति हस्ताय धीमहि।
तन्नो भौमः प्रचोदयात्॥

श्री बुध गायत्री मंत्र–
ॐ सौम्य रूपाय विद्महे बाणेशाय धीमहि।
तन्नो बुधः प्रचोदयात्॥

श्री बृहस्पति गायत्री मंत्र–
ॐ आङ्गि-रसाय विद्महे दण्डा युधाय धीमहि।
तन्नो जीवः प्रचोदयात्॥

श्री शुक्र गायत्री मंत्र–
ॐ भृगुसुताय विद्महे दिव्य देहाय धीमहि।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

तन्नः शुकः प्रचोदयात्॥

श्री शनि गायत्री मंत्र–

ॐ सूर्य पुत्राय विद्महे मृत्यु रूपाय धीमहि।
तनः सौरिः प्रचोदयात्॥

श्री राहु गायत्री मंत्र–

ॐ शिरो रूपाय विद्महे अमृतेशाय धीमहि।
तन्नः राहुः प्रचोदयात्॥

श्री केतु गायत्री मंत्र–

ॐ गदा हस्ताय विद्महे अमृतेशाय धीमहि।
तन्नः केतुः प्रचोदयात्॥

श्री तुलसी गायत्री मंत्र–

ॐ श्री त्रिपुराय विद्महे तुलसी पत्राय धीमहि।
तन्नस्तुलसी प्रचोदयात्॥

श्री दुर्गा गायत्री मंत्र–

ॐ कात्या-चन्यै च विद्महे कन्या-कुमार्यै च धीमहि।
तन्नो दुर्गा प्रचोदयात्॥

श्री काली गायत्री मंत्र–

ॐ कालिकायै च विद्महे श्मशान वासिन्यै धीमहि।
तन्नोऽघोरा प्रचोदयात्॥

श्री बगलामुखी गायत्री मंत्र–

ॐ बगलामुख्यै च विद्महे स्तम्भिन्यै च धीमहि।
तन्नो देवी प्रचोदयात्॥

श्री तारा गायत्री मंत्र–

ॐ तारायै च विद्महे महोग्रायै च धीमहि।
तन्नो देवी प्रचोदयात्॥

श्री त्रिपुर सुन्दरी गायत्री मंत्र–

ॐ ऐं त्रिपुरा देव्यै विद्महे क्लीं कामश्वर्यै धीमहि।
सौस्तन्नः क्लिन्नै प्रचोदयात्॥

श्री भुवनेश्वरी गायत्री मंत्र–

ॐ नारायण्यै विद्महे क्लीं भुवनेश्वर्यै धीमहि।
तन्नो देवी प्रचोदयात्॥

श्री गंगा गायत्री मंत्र–

ॐ भगीरथ्यै च विद्महे विष्णु-पत्नयै धीमहि।
तन्नो गंगा प्रचोदयात्॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

भगवती गायत्री स्तुति एवं वन्दना खण्ड

जय माता गायत्री की

[वन्दना]

शरणागत को शरणों में ले, करती हो रखवाली जी।
तीनों लोक की रक्षा करती, जय माता गायत्री की॥१॥
तुम्हीं चराचर अधीश्वरी हो, जग की रक्षा करती हो।
तुम "सावित्री" हर जीवों में, क्षण-क्षण सांसें भरती हो॥
कण-कण में है वास तुम्हारी, जगह न कोई खाली जी।
तीनों लोक की रक्षा करती, जय माता गायत्री की॥२॥
अनंत बल सम्पन्न हो माते, तेरी सब पे छाया है।
समस्त सृष्टि मोहित करती, तूं अम्बे महामाया है॥
खाली झोली भर लेता है, दर पे तेरे सवाली जी।
तीनों लोक की रक्षा करती, जय माता गायत्री की॥३॥
विद्या-बुद्धि के दाती हो, तू ही शक्ति रूप हो।
सारे जग के भिन्न-भिन्न, नारी के तुम्हीं स्वरूप हो॥
धरती बनकर सर्वभार को, अपने ऊपर धारी जी।
तीनों लोक की रक्षा करती, जय माता गायत्री की॥४॥
कल्याणी माँ शिवा भवानी, सबका मंगल करती हो।
सर्व स्वरूपा सर्व व्यापिनी, सभी सुमंगल करती हो॥
तुम सा न सृष्टि में कोई, महाशक्ति बलशाली जी।
तीनों लोक की रक्षा करती, जय माता गायत्री की॥५॥
लक्ष्मी और सरस्वती तू ही, तू ही बाण-भुशुण्डि हो।
दुर्गा काली ब्रह्मचारिणी, तू ही माते चण्डी हो॥
"पंचमुखी" बनकर हे अम्बे, लगती प्यारी-प्यारी जी।
तीनों लोक की रक्षा करती, जय माता गायत्री की॥६॥
कात्यायनि हो कालरात्रि हो, सिद्धि दाती गौरी हो।
जनक राज की सीता जैसी, तू ही चाँद चकोरी हो॥
पारब्रह्म के हृदय समा के, करती तू रखवाली जी।
तीनों लोक की रक्षा करती, जय माता गायत्री की॥७॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

तू ही माया तू ही शक्ति, तू ही माते रूद्रा हो।
शिवा उमा सावित्री राधा, तू ही अम्बे निद्रा हो॥
सब प्राणी के प्राणों की, तू अम्बे महतारी जी।
तीनों लोक की रक्षा करती, जय माता गायत्री की॥८॥

गायत्री माता तेरी महिमा अपार है

गायत्री माता तेरी, महिमा अपार है।
देवी नमस्कार, नमस्कार, नमस्कार है॥१॥
''भू'' रूप-प्राणियों के ''प्राणधार'' हो।
''भुवः''-दुख विनाश, ज्ञान की सार हो॥
''स्वः'' -स्वयं प्रकाशवान, सुख रूप हो।
''तत'' अनंत अपार, तू सबका सार है॥
गायत्री माता तेरी महिमा अपार है॥२॥
''सवितः'' सृष्टिकर्ती, तू ही पालनहार है।
''वरेण्यं'' उपासकों का, आधार है॥
''भर्गो'' रूप पाप-ताप, करे नाश है।
दुःख क्लेश, रोग, करे सर्वनाश है॥
''देवस्य'' दिव्य ज्ञान, आनंदाधार है।
गायत्री माता तेरी महिमा अपार है॥३॥
''धीमहि'' हैं ध्यान योग्य परमात्मा।
''धियो योनः'' बुद्धियों की है आत्मा॥
''प्रचोदयात्'' प्रेरणा को शुद्ध करें माँ।
भक्तों की आत्मा, विशुद्ध करें माँ॥
मंत्र वाचकों का करें, उद्धार है।
गायत्री माता तेरी महिमा अपार है॥४॥
विष्णु संग लक्ष्मी रूप, माया है तू।
शिव जी के सीने लगी, काया है तू॥
श्री ब्रह्मा के तपोवल के, आधार है।
गायत्री माता तेरी महिमा अपार है॥५॥
प्रकृति महादेवी माँ, भद्रा है तू।
काली, गौरी पार्वती, रूद्रा है तू॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

दुष्टों से धरा करती, उद्धार है।
गायत्री माता तेरी महिमा अपार है॥६॥
असंख्य रूप हैं, महादेवी तेरे।
हे पंचमुखी मैया, न भेदी तेरे॥
तेरे हाथ तीनों लोक, पतवार है।
गायत्री माता तेरी महिमा अपार है॥७॥
सच्चे मन में, शारदे समायी है तू।
सन्तों को दुःख में, अपनायी है तू॥
सृष्टि पालक तू ही, संहार है।
गायत्री माता तेरी महिमा अपार है॥८॥

मुँह-मांगा मुराद पाने हेतु वन्दना

करता हूँ फरियाद हे अम्बे, सुन ले माँ गायत्री जी।
सभी मुरादें कर दें पूरी, जय माता सावित्री की॥१॥
धन-जन पूर्ण करो माते, सुखी मेरा परिवार रहे।
वेदमाता कृपा करो, घर दौलत से भंडार भरे॥
देवमाता तेरे दर से, गया न झोली खाली जी।
सभी मुरादें कर दें पूरी, सुन लें माँ गायत्री जी॥२॥
रोग भय से मुक्त कर दो, सारे ये परिवार को।
तू ही रक्षा करती माँ, सृष्टि के संसार को॥
मेरी भी रक्षा कर अम्बे, तू है इच्छाधारी जी।
सभी मुरादें कर दें पूरी, सुन ले माँ गायत्री जी॥३॥
शक्ति दाती, माँग रहा हूँ, ऐसी माते शक्ति दो।
रोम-रोम में तुम्हीं समाओ, चरणों की माँ भक्ति दो॥
तीनों लोक में ना जगदम्बे, तुम जैसी उपकारी जी।
सभी मुरादें कर दें पूरी, सुन ले माँ गायत्री जी॥४॥
सभी ग्रहों को दूर करो माँ, पल भर न टिकने पाए।
जो भी अम्बे आँख दिखावे, क्षण भर में ही मिट जाए॥
मेरे घर में सदा विराजो, रक्षक बनकर काली जी।
सभी मुरादें कर दें पूरी, सुन ले माँ गायत्री जी॥५॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

गायत्री माँ की आरती

ॐ जय गायत्री माता, जय जय गायत्री माता।
विद्या बुद्धि प्रदायक, ऋद्धि सिद्धि दाता॥
जय-जय गायत्री माता॥१॥

कुन्द-इन्दु सम शोभा, तन की ज्योति झरे।
जो सेवक बनि आए, सब भंडार भरे॥
जय-जय गायत्री माता॥२॥

वीणा दण्ड कमंडल, माला कर सोहै।
हंश वाहिनी देवी, त्रिभुवन मन मोहै॥
जय-जय गायत्री माता॥३॥

श्वेत स्वरूपा सुन्दरि, श्वेत वस्त्र धारी।
श्वेत पद्म पर बैठी, सबको सुखकारी॥
जय-जय गायत्री माता॥४॥

ब्रह्मा विष्णु सदाशिव, इन्द्र आदि देवा।
सनकादिक अरु नारद, सदा करें सेवा॥
जय-जय गायत्री माता॥५॥

तुम प्रताप सों माता, मूढ़ भये ज्ञानी।
निज दासन पर करती, करूणा कल्याणी॥
जय-जय गायत्री माता॥६॥

त्रिभुवन यश विस्तारा, गुण गावें देवा।
सुर नर मुनि सब निशदिन, करें विविध सेवा॥
जय-जय गायत्री माता॥७॥

गायत्री माँ की आरती, जो कोई नर गावे।
परम ज्ञान सो पावें, जग यश फैलावें॥
जय-जय गायत्री माता॥८॥

पंचमुखी गायत्री माँ की आरती

आरती करो, गायत्री जी की।
"पंचमुखी" सावित्री जी की।
आरती करो, गायत्री जी की॥१॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

जाको कृपा, कुमति मिट जाए।
सुमिरन करत, सुमति गति आए।
चरण लगो, माँ आदिशक्ति की।
आरती करो, गायत्री जी की॥२॥
सुर नर मुनि, सबहीं गुण गाए।
ब्रह्मा विष्णु शिव, शीश झुकाए॥
शरण लगो माँ, वेद श्रुति की।
आरती करो, गायत्री जी की॥३॥
श्वेत रूप, श्वेताम्बर धारी।
करती अम्बे, हंश सवारी॥
दया मांगो, माँ दया दृष्टि की।
आरती करो, गायत्री जी की॥४॥
देव मातु हैं, वेदों की माता।
सब देवों के, भाग्य विधाता॥
निशदिन भजो, माँ यति-सती की।
आरती करो, गायत्री जी की॥५॥
दुर्गा रूप करें, सिंह सवारी।
रूप माहेश्वरी, बैल सवारी॥
वैष्णवी रूप, गरुड़ पर बैठी।
आरती करो, गायत्री जी की॥६॥
वर-अभय-शंख, चक्र, गदा धारी।
अंकुश शुभ्र कपाल हैं धारी॥
जोड़ा कमल हाथ में नीकी।
आरती करो, गायत्री जी की॥७॥

॥ इति श्री गायत्री उपासना सम्पूर्णम्॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh